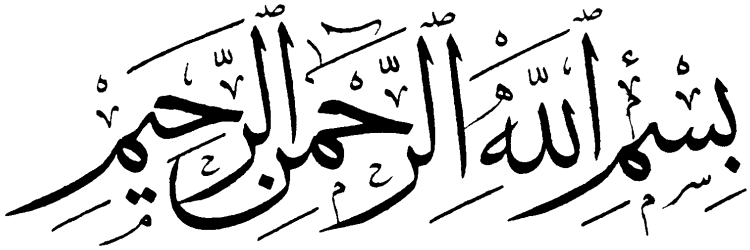

भरोसा और इम्तिहान

लेखक

हज़रत नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

चन्द लफ़्ज़

जब मैंने भरोसा और इम्तिहान पर लिखना चाहा तब ज़ेहन में बार-बार यह आता रहा की भरोसा किस बात का, और किस पर, और फिर इम्तिहान किस चीज़ का क्युकी जब से पैदा हुआ और आज तक मैं इम्तिहान ही तो दे रहा हूं क्लास एक में था तब इम्तिहान दिया और कामियाब हो गया क्लास पांच में आया इम्तिहान दिया और अल्हम्दुल-अल्लाह पास हो गया फिर इस तरहा सेकेंडरी क्लास पास किया और फिर ग्रेजुएट हो गया तमन्ना थी डॉक्टर बन जाऊ वह भी हो गया तमन्ना थी खिदमते खल्क करू वह भी जारी है खुदा ने एक नेक खातून अता की वह मेरी शरीके हयात बनि और उसी ने मुझे बाप बन्ने का शरफ दिया अल्हम्दुल-अल्लाह बच्चा भी फर्माबरदार और ज़हीन निकला इन लोगो की किस्मत से खुदा ने हमे बेहतरीन कारोबार अता किये जिससे हमारी रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी अच्छी तरहा से गुज़रने लगी यानी मैंने यह भी इम्तिहान पास करलिया तो फिर अब कौनसा इम्तिहान और भरोसा ज़ेहन ने कहा असली इम्तिहान तो यह है के अपने रब पर भरोसा और भरोसा पूरा है या अधूरा इसका इम्तिहान। कौन है इस कायनात में जो लेगा वह तो सिर्फ एक है मेरा और आपका परवरदिगार। जिसे पूरा हक है हमारा इम्तिहान लेनेका जिस तरहा उसने तमाम पैगम्बरों, औलियाओ, सहाबा-ए-कराम, इमाम और तमाम वलियों के इम्तिहान लिए। यानी खुदा को इस कायनात में हर मखलूक का इम्तिहान लेने का पूरा अधिकार है। बस यही दुआ है के जिस भरोसे और इम्तिहान में इब्लीस फेल हो गया, और तमाम अल्लाह वाले पास हो गए उसी तरहा खुदा हमारे सब्र के इम्तिहान में कमियाबी अत करे।

आमीन सुम्मा अमीन।

शुक्रिया

इस कायनात की जितनी भी मखलुकात है सब को अपने रब पर भरोसा है की वही सबका मालिक है। सब का पालनहार है, जो भी मिलना है सिर्फ वही देगा और किसी के ताक़त की बात नहीं, क्युकी यह ज़िन्दगी उसी रब्बुल आलमीन की अमानत है। और वही इसकी हिफाज़त करता है। और इस ज़िन्दगी को कब किस चीज़ की ज़रूरत है सिर्फ वही जानता है। तो उसी हिसाब से तमाम चीज़े मुहैया करवाता रहता है जैसा की इस ज़िन्दगी को चाहिए। यह हुआ भरोसा अपने रब पर अब हमारा पालनहार कभी कभी अपनी दी हुई ज़िन्दगी इम्तिहान भी लेता है। की जिस खूबसूरत ज़िन्दगी को इंसान पाकर इतना फूला फला दुनिया में नामवर हुआ और अपने ऊपर फूले नहीं समा रहा है। क्यों न इसके भरोसे का इम्तिहान लिया जाए यानि रब्बुल इज्ज़त यहां पर भरोसा भी देख रहा है और इम्तिहान भी ले रहा है।

जैसे की जब आदम (अ.स) को अल्लाह ने खल्क कर लिया और फरिस्तो को हुकुम दिया के आदम (अ.स) को सजदा करो। इब्लीस को छोड़ कर सब फरिश्तो ने आदम (अ.स) को सजदा किया। अब यहां पर गौर करने की बात है के कौनसी ऐसी बात थी के इब्लीस को ऐसा करना पड़ा। क्युकी हम सभी यह जानते है के अल्लाह के नज़दीक जितने भी फ़रिश्ते हैं। सब अल्लाह की इबादत में मशगूल रहते हैं। लेकिन इसके बावजूद इब्लीस नाम का फ़रिश्ता अल्लाह के सबसे नज़दीक मुकाम रखता था। यानी यह फरिश्तो में अफज़ल था और जिसको यह भी सुध नहीं के उसकी कितनी उम्र गुज़र चुकी अपने अल्लह की इबादत करते हुए। तो यहां पर भरोसा खरा उतर रहा है

अपने खुदा पर की तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। लेकिन अल्लाह को अब इम्तिहान लेना था, और इसलिए अल्लाह पाक ने इब्लीस को हुकुम दिया के आदम को सजदा करो। तो यहां पर अल्लाह का हुकुम देना इब्लीस के भरोसे का इम्तिहान था। यानी भरोसा और इम्तिहान दोनों साथ-साथ थे, और इब्लीस ने अल्लाह के हुकुम को न मानकर इम्तिहान में फेल हो गया। अगर आदम (अ.स) को इब्लीस सजदा कर लेता तो उसको देखने वाले सिर्फ अल्लाह रब्बुल इज्ज़त, मौजूद फ़रिश्ते और खुदा आदम (अ.स) इनके आलावा और कोई नहीं होता। लेकिन इसके बावजूद इब्लीस नहीं माना और अपने घमंड को सही साबित करने के लिए आज तक दुनिया में मौजूद है, और क़यामत तक रहेगा और हर ईमान वाला उसको ता ज़िन्दगी लानत भेजता रहेगा। अरबो लोग इस कायनात में आए और चले गए और आज भी इसपर लानत जारी है। और जिन पत्थरो की इबादत इब्लीस के मानने वाले करते हैं। वही पत्थर इस शैतान पर हज के दौरान बरसाए जाते हैं। और इसके आलावा अगर आपने गौर किया हो तो हज के सारे आराकान पुर सुकून तरीके से निपट जाते हैं। लेकिन जब-जब तकलीफे हाजियों को पेश आई तो शैतान को पत्थर मारने के दौरान ही। क्युकी उस वक्त उसका (शैतान) का मकसद होता है के हम पर लानत भेजने वालो को परेशान किया जाए और हाजियों के दिलो में डार पैदा हो।

इस तरहा हमने इस तहरीर में यह देखा के इब्लीस भरोसे में पास हो गया। लेकिन इम्तिहान में फेल हो गया और आज तक उसकी सजा भुगत रहा है। इसलिए हर शय

को तैयार रहना चाहिए के कब अल्लाह पाक उसके भरोसे और इम्तिहान साथ-साथ लेने पर आमादा हो जाए। अल्लाह सब को कुवत दे और तौफीक दे। अल्लाह के इम्तिहान में कामियाब होने की अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए अब हम गौर करते हैं के इस्लाम की बेहतरीन औरतो में कौनसी वह औरत बही जिसने भरोसे और इम्तिहान को पास किया। अल्लाह के हुकुम से आदम (अ.स) और हौवा (अ.स) दोनों जन्नत में रहने लगे और अल्लह ने आदम (अ.स) से कहा अये आदम तुम इस जन्नत में रहो और जो भी फल खान चाहे खाओ लेकिन इस पेड़ के पास मत जाना। इस तरहा अल्लाह ताला ने जो भी हुकुम दिया आदम (अ.स) को ही दिया यानी अल्लाह ने हौवा (अ.स) को किसी बात की ताकीद नहीं की इस तरहा इस्लाम में औरत को पूशिदा रखा गया है और औरत पर नरमी बरती गई है। और इस तरहा से शरियत बन गई। क्युकी इब्लीस ने एहद किया था की मैं आदम को बहका दूंगा इसी सिलसिले में इब्लीस ने कई बार कोशिश की लेकिन हर बार नाकाम रहा और आखिर में इब्लीस ने हौवा (अ.स) से कहा। के ठीक है अल्लाह ने आदम को माना किया है तुमको तो नहीं माना किया और इस तरहा आदम (अ.स) ने हौवा (अ.स) को उस पेड़ तक जाने का हुकुम दे दिया और इसकी सजा आदम (अ.स) को ३०० साल तक काटनी पड़ी और इसके तेहद हौवा को आदम (अ.स) से अलग करदिया.

यहां पर हम एक और इस्लामी औरत का ज़िक्र कर रहे है। जब हज़रत हाजरा अपने घर पर मौजूद थी तो इब्लीस आपके पास तशरीफ़ ले जाता है और कहता है के तुम्हारे

बेटे इस्माइल को तुम्हारे शौहर इब्राहीम ज़िबाह करने ले गए है। फ़ौरन अपने घर से बहार निकालो और अपने बेटे को बचाओ। अब यहां पर हज़रत हाजरा का भरोसा और इम्तिहान दोनों था। भरोसा यह के खुदा अपनी दी हुई नेमत वापस नहीं लेता और इम्तिहान यह के औरत को घर से निकलना माना है और आपने लाहौल पढ़ा और कहा तू जरूर शैतान है जा हट और आप अपने घर में ही रही। इस तरहा हज़रत हाजरा ने दोनों पर कमियाबी पाई और अल्लाह ताला ने आपके इस एजाज़ को देखते हुए आपको दुनिया में मिसाल के तौर पर पेश करने के लिए हाजियों को हुकुम हुआ। के जब तक साईं (सफा पहाड़ और मरवा पहाड़ के बीच ७ बार दौड़ना) और शैतान पर पत्थर मारने की रसम पूरी न करलो तो हज पूरा नहीं होगा। जिस जगह पर शैतान की निशान देहि की गई है यहीं पर हज़रत हाजरा को शैतान भड़काने हाज़िर हुआ था। यु तो हम और आप सुबह से शाम तक लाहौल पड़ते हैं और काफी है। लेकिन जब मक्का पोहंच गए और अल्लाह के घर काबे को देखा तो तवाफ़ किया और अब अल्लाह का हुकुम हुआ की जाओ अब शैतान पर पत्थर मारो सिर्फ लाहौल पढने से काम नहीं चलेगा।

इस तरहा अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने हज़रत हाजरा को इस्लाम की बेहतरीन औरत का दर्जा अत किया। और क़यामत तक मुसलमान आपकी दोनों सुन्नतो पर चलते रहेंगे। इसी मौजू पर आगे बढ़ते हुए अब यह देखना है के किस पैगम्बर ने भरोसे को जीता, यानी उन्हें मालूम था के ऐसा ही होगा।

जब हज़रत **इब्राहीम** (अ.स) को नमरूद के हुकुम पर उसके सिपाही आग में फेकने जा रहे थे तो आपके चेहरे पर ज़र्रा बरबर भी खौफ न था, और इसी दरमियान पानी का फ़रिश्ता आपके पास तशरीफ़ लाता है और कहता है, के अगर आपका हुकुम हो तो मैं इतनी बारिश करदू के यह सारी आग ठंडी हो जाए। हज़रत इब्राहीम ने जवाब दिया मुझे अपने खुदा पर भरोसा है के यह आग मेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाएगी। नमरूद के सिपाही आपको आग के करीब लगाए। फिर एक और फ़रिश्ता आया और हज़रत इब्राहीम से कहने लगा अस सलाम अलैकुम मुझे अल्लाह ताला ने हवा की बागडोर सौंपी है अगर आप हुकुम करे तो मैं ऐसी हवा चलाऊं ताकि यह आग बुझ जाए। इब्राहीम (अ.स) ने जवाब दिया मुझे आपकी मदत नहीं चाहिए मुझे अपने खुदा पर भरोसा है वही मेरी मदत करेगा।

जब की हम यह जानते हैं के अल्लाह की इजाजत के बिना फ़रिश्ते कुछ नहीं कर सकते। लेकिन फिर भी इब्राहीम (अ.स) सीधे खुदा से मदद चाहते थे, और इसके बाद नमरूद के सिपाहियों ने आपको एक शदीद आग में फेक दिया, और जैसे ही आपका जिस्म आग से छुआ आग फूल में तब्दील हो गई। इस तरहा इब्राहीम (अ.स) का भरोसा जीतगाये अपने रब का।

अगर हम इस हादसे से पहले एक और हादसे पर गौर करे जब हज़रत इब्राहीम को पैदा होते ही आपकी वाल्दा ने नमरूद के डर से आपकी ज़िन्दगी बचने के लिए रात के अंधेरे में कपडे में छिपा कर एक ठन्डे तंदूर में छिपा दिया। और उसपर अपनी लकड़ी

वगैरह रख दी ताकि आपको (इब्राहीम) कोई देख ना पाए। और सुबह तंदूर के जलने से पहले ही आपको फिर निकाल लेंगे और आपने ऐसा ही किया । सुबह का सूरज निकलने के पहले आप अपने घर से निकलती हैं लेकिन जैसे ही आप वहां पोहंची तो देखा के तंदूर जल चूका है । आप ने अपने मुह से निकलने वाली चीख को रोका और अपने रब को याद करके कहा या खुदाया मैंने इस बच्चे को आपकी आमान में दिया था और आप ही इसकी हिफाजत करें। यहां पर आपकी वाल्दा का भरोसा अपने खुदा पर । और आप फिर रात के होने का इंतज़ार करने लगी और जब सब लोग वहां से हट गए । आपने तंदूर में दोनों हाथ डाल दिए और आपको जिंदा देख कर बेहद ख़ुशी हुई और आप अपनी वालिदा को देख कर मुस्कुराने लगे । तो इस तरहा यहां हम यह कयास लगा सकते हैं। इस वाकिए को पढने के बाद के हज़रत इब्राहीम की वालिदा ने आपको अपने बचपन का यह किस्सा ज़रूर बयान किया होग । तो इसलिए आप बे खौफ रहे होंगे के आग तो हमे पहले भी न जला सकी थी तो अब क्या जलाएगी । जिस तरहा पहली बार मेरे रब ने मीर हिफाज़त की थी वही आज भी हिफाज़त करेगा । अब हम हज़रत इब्राहीम के इस वाकिए पर गौर करे। जब आपको एक ख्वाब में बशारत हुई के हज़रत इब्राहिम अपने हाथो से अपने लखते जिगर को ज़िबाह कर रहे हैं। सुबह उठते ही आपने अपने ख्वाब को याद किया और कहने लगे के अल्लाह ताला हमसे कुर्बानी चाहता है। तो आपने कुछ जानवर जिबह करा दिए दुसरे दिन फिर आपको येही ख्वाब आया फिर आपने और कुरबानिया पेश की और तीसरे दिन फिर आपको येही ख्वाब आया तो अब आपकी पेशानी पर शिकन आ गई। यहां पर एक बात बतानी बहुत जरूरी

है के अल्लाह ताला पैगम्बरों को जो भी बशारत देता है वह उसी तरहा देता है जो उसे करनी है। लेकिन हज़रत इब्राहीम (अ.स) ने यहां पर वह कुर्बानी पेश नहीं की जोकि अल्लाह ताला चाहता था। यानी यहां पर भरोसा और इम्तिहान दोनों थे और आपके सामने यह हादसा पहली बार हो रहा था। इस तरहा आपका भरोसा डग मग गया इस लिए पहली दो बशारतो के बाद आपने जानवरों की कुरबानिया पेश की और तीसरे ख्वाब को देखने के बाद अपने लखते जिगर को अपने पास बुलाया और कहा। बेटा इस्माइल अल्लाह आपकी क़ुरबानी चाहता है क्या आप इसके लिए तैयार हैं। हज़रत इस्माइल ने कहा जी मैं ख़ुशी-ख़ुशी राज़ी हूं अल्लाह की बारगाह में कुरबान होने के लिए। और आप अपने वालिद के साथ सुबह-सुबह एक तनहा जगह पर पोहंच गए और खुदा बा खुदा लेट गए। इधर हज़रत इब्राहीम ने अपने हाथ में छूरा लिया और अपने बेटे को गौर से देखा और कहने लगे बेटा मैं अपनी आँख पर पट्टी बांधलू ताकि मेरा हाथ न कप-कपाए। यह कहने के बाद इब्राहीम (अ.स) अपनी आँखों पर पट्टी बांधकर बच्चे की गरदन पर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहते हुए छूरी चलादी। और छूरी को आसमान की तरफ उछाल दिया। फिर आपने अपनी आँख की पट्टी खोली तो आपने देखा हज़रत इस्माइल तो खड़े मुस्कुरा रहे हैं। और उनकी जगह पर एक दुम्बा जिबह हो चूका है। यहां पर अगर देखा जाए तो दोनों का इम्तिहान था जब हज़रत इब्राहीम (अ.स) ने हज़रत इस्माइल से कहा के बेटा खुदा आपकी क़ुरबानी चाहता है। तो आपने फ़ौरन कहा मैं तैयार हूं। इसका मतलब यह हुआ के आपको अपने रब पर पूरा भरोसा रखा के मेरा रब मुझे कामियाब करना चाहता है और इम्तिहान यह है

के अल्लाह अपने पैगम्बर के हाथो एक पैगम्बर को शहीद करवाए ऐसा मुमकिन नहीं। क्युकी आप भी एक पैगम्बर थे और पैगम्बर गैब का इल्म रखते हैं। इस वाकिए में हज़रत इस्माइल (अ.स) ने भरोसा और इम्तिहान दोनों पर कमियाबी पाई। और अब अगर हम हज़रत इब्राहीम (अ.स) पर गौर करें तो आपने अपनी आँख पर पट्टी बांधली इससे यह मालूम हुआ के आपने यह यकीं करलिया के आपके बेटे को ज़िबाह ही करना है। तो कहीं बेटे पर छूरी फेरते वक्त मुझे रहम न आए इस तरहा आपका भरोसा डग मगा गया लेकिन इम्तिहान में पास किया।

इस वाकिए से इस बात की दलील मिलती है के जब हज़रत इस्माइल (अ.स) को हटा कर दुम्बा लाया गया तो आपने अपने वालिद को क्यों नहीं कहा। के अब्बा जान मुबारक हो अब आपको मेरी क़ुरबानी नहीं देनी पड़ेगी। आप चुप चाप खड़े होकर मुस्कुराते रहे क्युकी हज़रत इब्राहीम (अ.स) को मालूम हो चूका था के वह अपने बेटे को ज़िबाह ना करके अल्लाह के भेजे हुए जानवर को ही जिबह कर रहे हैं। इसलिए इब्राहीम (अ.स) ने छूरी को ऊपर की तरफ उछाल दिया और यह बात ज़ाहिर करदी के अल्लाह ने मुझे इम्तिहान में पास कर दिया सुबहान अल्लाह।

इसी भरोसे और इम्तिहान को आगे बढ़ाते है। और जब अल्लाह पाक ने अपने मेहबूब **मुहम्मद** (स.अ) से कहा। ए नबी हम आपसे क़ुरबानी चाहते हैं। रसूल ने फ़ौरन जवाब दिया अल्लाह मैंने कुर्बानी दी। फिर खुदा ने कहा ए नबी पूछोगे नहीं क्या कुर्बानी चाहिए ?। रसूल अल्लाह (स.अ) ने फ़रमाया अल्लाह इसमें क्या पूछना सबकुछ तो

तेरा है मेरा तो कुछ भी नहीं। तब अल्लाह पाक ने कहा। ए नबी (स.अ) हम आपके नवासे हुसैन की क़ुरबानी चाहते हैं। उसी वक्त रसूल (स.अ) ने कहा या अल्लाह मैं तैयार हूं। यह कलाम पूरा होते ही रसूल आगे बढे उसी वक्त एक गुलाम ने आपको खुश खबरी सुनाई के आपकी बेटी के घर एक बेटा पैदा हुआ है। और वह निहायत खूबसूरत है लेकिन आँख नहीं खोल रहा है। सभी लोग बहुत परेशान थे। उसी वक्त रसूल (स.अ) अपनी बेटी के घर तशरीफ़ ले गए सबको सलाम कहा और बच्चे को गोद में लेकर उसको अपनी नूरानी निगाहों से देखने लगे। उसी वक्त इस बच्चे ने भी अपनी आंखे खोल दी और अपने नाना जान को निहारने लगे। रसूल ने इनका नाम हुसैन रखा और कहा हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूं.

वक्त गुज़रता गया और मशियत का इंतज़ार भी ख़तम हुआ और जंगे कर्बला शुरू हुई और एक-एक करके हुसैन की फ़ौज के जवान शहीद होते गए और आखीर में हज़रत हुसैन खुदा जंग के मैदान में मौजूद हैं और जंग को अंजाम दे रहे है। और आपको बखूबी खबर है। आप अपने नाना जान को याद कर रहे है। ए मेरे लाडले हुसैन आपको अल्लाह की राह में कुरबान होना है। और यह क़ुरबानी पूरे इस्लाम की तरफ से होगी आपका मुस्कुराता चेहरा इंतज़ार कर रहा है। उसी अज़ीम क़ुरबानी के लिए जिसे इस कायनात के रसूल (स.अ) ने अल्लाह की राह में पेश किया। और इस कुर्बानी को देखने के लिए आसमान पर १२ जमाते मौजूद हैं। जैसे ही दुश्मन ने पहला वार आपकी गरदन पर किया। लेकिन आप शहीद नहीं हुए। तो मलाईको की जमात ने कहा अब

हमे बर्दास्त नहीं होगा यह कह कर चले गए। फिर दूसरा वार आपकी गरदन पर किया लेकिन आप अभी भी जिन्दा हैं और अब फरिश्तो ने कहा अब हम बर्दास्त नहीं कर सकते यह कहते हुए फरिश्तो भी चले गए। तीसरा वार आपकी गरदन पर वार हुआ आप फिर भी शहीद नहीं हुए और पैगम्बरों की जमात यह कहते हुए वहां से हट गई के अब हम सेहन नहीं कर सकते। और अल्लह यह मंजर खुदा देख रहा है के मैंने खुदा एक बार हिरनी को हुकुम दिया था खबरदार अगर तू हुसैन की आँखों से आंसू निकलने से पहले नहीं पोहंची तो तेरी खैर नहीं। अल्लाह जिसे हुसैन के आंसू देखना पसंद नहीं आज अपने अति चाहने वाले का लहू देखना पड़ रहा है। और जैसे ही चौथा वार आपकी गरदन पर पड़ा औलियाओ की जमात ने कहा के इस क़ुरबानी को अब हम नहीं देख सकते यह कह कर औलियाओ की जमात आँखों में आंसू लिए वहां से हट गई। और जब पांचवा वार आपकी गरदन मुबारक पर किया और आप फिर भी शहीद नहीं हुए। तो खलीफाओ की जमात ने कहा हम अब बर्दास्त नहीं कर सकते। इसमें वह खलीफा शरीक थे जिनकी गॊद में हुसैन खेला करते थे। अब दुश्मन ने आपकी गरदन पर छटा वार किया और फिरभी आप शहीद नहीं हुए तो इमामो की जमात ने कहा अब हम लोगो से बर्दास्त नहीं हो रहा है। और यह कहकर इमामो की जमात वहां से हट गई। ऐसी कुर्बानी ना इस कायनात में हुई है और ना हो सकती है। जिस मंजर को देख कर ६ जमाते अपने ऊपर काबू ना कर सकी और उन्होंने इस क़ुरबानी का दीदार ना किया। लेकिन अभी भी ६ जामाते खड़ी हैं। और अपने दिल पर काबू किये हुए हैं और पूरे इस्लाम की तरफ से पेश की जा रही कुर्बानी का इंतज़ार कर रहे है।

दुश्मने इस्लाम ने सातवा वार हज़रत हुसैन की गरदन पर किया। लेकिन अभी भी सहादत का जाम आपको नसीब नहीं हुआ और वालियों की जमात अपने ऊपर काबू ना करसकी। के जिस रसूल के बताये हुए दीन पर हम चले और अल्लाह ताला ने हमे वली के एजाज़ से नवाजा और हम अपने इस मेहबूब नबी के नवासे पर इतना ज़ुल्म कैसे बर्दास्त कर सकते हैं। और खुदा हाफिज कहकर चली गई। अब हज़रत हुसैन की गरदन पर एक बहुत सकत वार किया और इनमे ज़र्रा बरबर भी रहम ना आया। लेकिन इसके बावजूद हज़रत हुसैन शहीद नहीं हुए। इस सकत हमले के बाद कौमे जिन जो आपकी मदद करने के लिए बेकरार थी और बारगाहे इलाही में दुआ कर रही थी के "या अल्लाह" हमे इज़ाज़त देदे ताकि मैं अपने रसूल की आँखों के नूर की मदद करसकू। लेकिन अब तक हुक्मे इलाही नहीं हुआ था और कौमे जिन के सरपरस्त को बड़ी तकलीफ के साथ अपने को हटाना पड़ा। अल्लाह खुदा मौजूद और अल्लाह का मेहबूब भी मौजूद मतलब कुर्बानी मांगने वाला और कुर्बानी देने वाला दोनों मौजूद और कुरबान होने वाला बहुत खुश और इसी दरमियान दुश्मनों ने ९ वि बार हमला किया। लेकिन इसके बा वजूद रसूल के नवासे को सहादत नहीं मिलि। और अबकी बार नाना जान भी बेचैन हो गए उसी वक्त हज़रत हुसैन (अ.स) ने कहा नाना आप खुश तो हैं ?। नबी-ए-करीम (स.अ) ने कहा हम राज़ी और हमारा अल्लाह भी राज़ी। यह कहने के बाद रसूल भी कुर्बानी की जगह से हट गए। और जैसे ही १० वा वार दुश्मनों ने किया भाई हसन को भी अपना सब्र टूटता दिखा तो हुसैन को छोड़कर चले गए। लेकिन अभी भी आप शहीद नहीं हुए। अब आपकी वालिदा और आपके वालिद भी मौजूद हैं इसी

दरमियान आपकी गरदन मुबारक पर ११ वा वार हुआ। इस बार आपके वालिद का कलेजा भी लरज उठा और कहा या खुदा अब मुझसे बर्दास्त नहीं होगा। और यह कहकर वालिद हज़रत अली भी अपने लखते जिगर को छोड़कर चले गए। लेकिन माँ जनाबे फातमा जोहरा अभी भी मौजूद हैं। अपने दिल को संभाले अपने बेटे को आगोश में लेकर आपकी पेशानी मुबारक को चूमती है। इस दरमियान आपकी गरदन पर १२ वा वार किया और आपकी गरदन जिस्म से अलग हो गई। ऐसी कुर्बानी देखने वाला खुदा मौजूद है और आपने आखरी कलाम किया या अल्लाह क्या मैं इम्तिहान में पास हो गया जवाब आया आए हुसैन तुम कामियाब हो गए।

इस वाकिए में जिस तरहा की कुर्बानी अल्लाह ने मांगी थी वैसी ही कुर्बानी दी गई। यहां पर अल्लाह ने हज़रत हुसैन की जगह पर कोई पाक जानवर नहीं भेजा। जैसा की हज़रत इस्माइल में हुआ था। इस तरहा भरोसा और इम्तिहान की एक बेहतरीन मिसाल बनि जो की ता क़यामत तक याद की जाएगी इंशा अल्लाह।

अब हम एक और पैगम्बर पर रोशनी डालते हैं। जब हज़रत **नूह** (अ.स) अपनी कौम से तंग आ गए तो मायूसी की हालत में जंगल की आगोश में पहुंचे गए। और तकरीबन ८०० साल इसी जंगले में रहे। एक दिन आपको शिद्दत की प्यास लगी तो आप पास के कुए पर पहुंचे। लेकिन आपने देखा के कुआ बिलकुल सूखा पड़ा है। और आप वापस अपनी जगह पर लेट गए। उसी वक्त कुछ देर बाद उसी कुए पर हिरनों का एक झुंड आया। और पहले हिरनों ने आसमान की तरफ देखा और दुसरे ही पल कुआ पानी से

लबरेज़ हो गया। हिरनों ने पानी पिया और अपनी राह चल पड़ी। यह माजरा नूह (अ.स) देख रहे थे। आप अपनी जगह से उठे और फिर कुए के पास पोहंच गए। ताकि पानी पिया जाए। लेकिन आपने पानी को ना पाकर बड़ी हैरानी जाहिर की। और इस तरहा प्यासे रहते हुए चुप चाप अपनी जगह पर बैठ गए। उसी वक्त कुछ ही देर में एक शक्श आपके पास आया और आपसे बात करने लगा। उसी वक्त नूह (अ.स) ने कहा जनाब अभी कुछ देर पहले मैंने देखा इसी कुए में पानी भरा था जिसे हिरनों ने पिया। और जब मैं पानी पिने गया तो पानी गायब यह क्या माजरा है। उस शक्श ने कहा आपको अपने खुदा पर भरोसा नहीं था आपने सोचा मुझे पानी मिलेगा या नहीं। लेकिन उन हिरनों को अपने रब पर पूरा भरोसा है। के मेरा रब इस सूखे कुए से पानी दे सकता है और खुदा के हुकुम से कुआ पानी से भरा और हिरनों ने अपनी प्यास बुझाई। उसी वक्त यह शक्श कहने लगा आए नूह मैं कोई इंसान नहीं मैं एक फ़रिश्ता हूं। और अल्लाह ने हमे आपके पास भेजा है और अभी जो वाकिया गुजरा वह तो अल्लाह ने आपका इम्तिहान लिया था के इसे मुझपर भरोसा है या नहीं।

इसी मौजू को लेकर हम आगे बढ़ते हैं। फ़रिश्ते ने हज़रत नूह (अ.स) से कहा के अल्लाह का हुकुम है के आप तबलीग का काम फिर से शुरू करे। चुनांचे हज़रत नूह (अ.स) ने तबलीग का काम फिर शुरू किया और तकरीबन ६०० साल आप बरबर तबलीग करते रहे। और इस दरमियान ८० लोग ईमान लाए। और लोगो ने आपको बहुत परेशान किया फिर आपने आजिज़ हो कर अल्लाह से दुआ की। या अल्लाह इस कौम

पर इतना सकत आज़ाब नाजिल कर के आज तक किसी कौम पर आपने ऐसा अज़ाब नाजिल ना किया हो। और इस तरहा नूह (अ.स) को अल्लाह पाक ख्वाब में ताबीर करते रहे के किस तरहा बीज बोना है। फिर उन उगे पेड़ो को काटना, फिर बीज बोना है और पेड़ो को काटना है। के किसतरहा उसके पटड़े बनाना है और किसतरहा नाव तैयार करना है। और नाव बनकर तैयार हो गई। अब इंतज़ार है पानी का। के कब पानी आए और नाव चले। कौमे नूह कहा करती थी ए नूह क्या ज़मीन पर नाव चलाओगे। इस तरहा २५० साल बीत गए। इस तरहा २५० साल बाद अल्लाह का हुकुम आया के ए नूह अपनी कश्ती मैं हर किस्म के जानवरों के जोड़े रखो। और जितने लोग इमान ला चुके हैं इनको अपनी नाव में भरकर बैठ जाओ। चुनांचे नूह (अ.स) ने ऐसा ही किया अब अल्लाह ताला ने आसमान और ज़मीन दोनों जगह से पानी छोड़ना शुरू किया। और कश्ती आहिस्ता-आहिस्ता ऊपर उठने लगी। ऐसी बारिश के सूरज और चाँद भी नमूदार नहीं हुए। और पूरी दुनिया में पानी ही पानी सब के सब पहाड़ भी डूब गए। और पूरी दुनिया पर नूह (अ.स) की कश्ती ही बची। बकिया कौम नीस्त नाबूद हो गई जब कई महीने गुजर गए और कश्ती को कोई किनारा नहीं मिला तो आप भी परेशान हो गए। और अल्लाह पाक से गिड-गिडाने लगे। या-अल्लाह इस कश्ती में जानवरों और मौजूद लोगो ने गन्दगी मचा राखी है। जो की इतनी बदबू कर रही है के जीना दुबर हो गया है। मेरे खुदाया अपना आज़ाब वापस लेले और दोबारा कभी ऐसा आज़ाब मत भेजना। चुनांचे ६ महीने पूरे होते ही अल्लाह के हुकुम से ज़मीन ने पानी सोख लिया।

और कश्ती कोहे जुदि पर उतर गई। और सब लोग साथ खैरियत के ज़मीन पर उतर गए।

अब यहां पर देखने वाली बात यह है। के जिस तूफ़ान को आने में २५० साल लगे और अभी सिर्फ ६ महीने ही गुजरे थे। नूह (अ.स) परेशान हो गए यहां पर आपको यह भरोसा तो था के तूफ़ान जरूर आएगा और तूफ़ान २५० साल बाद आया। लेकिन अल्लाह के अजाब से जो की आपका इम्तिहान था। आपका भरोसा डगमगाया के कहीं कश्ती डूब ना जाए अगर अल्लाह को ऐसा करना होता तो कश्ती पर सवार ही क्यों करवाता। और २५० साल के इंतज़ार के मुकाबले ६ महीने का इम्तिहान तो कुछ भी नहीं था।

जब भी हम किसी इम्तिहान में बैठते हैं या इम्तिहान में बिठाये जाते है। तो इम्तिहान को पास करने का सबसे अच्छा तरीका यह है। के इम्तिहान को भरोसे के साथ दें। अगर इम्तिहान को भरोसे के साथ ना देंगे तो हाल हज़रत युनुस (अ.स) जैसा ही होगा।

जब **हज़रत युनुस (अ.स)** अपनी कौम को समझाते-समझाते ऊब गए। लेकिन आपकी उम्मत ने आपकी हिदायतों को दर गुजर किया और आपको तकलीफे पोहंचाई। तो आजिज़ होकर आप शहर के बहार निकल गए। और एक पहाड़ी पर जाकर अल्लाह से कहने लगे या-अल्लाह यह कौम मेरी हिदायतों को नज़र अंदाज़ कर रही है और गुमराही का रास्ता इखतियार कर चुकी है। आप इस कौम पर अपनी आफत भेज

दें अल्लाह ने युनुस (अ.स) की बाद-दुआ कबूल की। और एक ऐसी गर्मी पैदा करदी के लोग झुलसने लगे नदी और तालाब सब सूखने लगे। पूरी कौम की शकले गर्मी से लाल पड़ गई बच्चे, बूढे, औरते और जवान सब खौफ खा गए और अल्लाह से अपने गुनाहों की तौबा करने लगे और अल्लाह ताला ने इस कौम की तौबा कबूल करली। और सब कुछ पहले जैसा ही हो गया जब काफी दिन गुजर गए। तो आपके दिल में ख़याल आया की अपनी कौम का हाल चाल मालूम किया जाए। तो कुछ देर के बाद शैतान इब्लीस इंसानी शक्ल में आपके पास हाज़िर हुआ। आपने इस शक्श से पूछा के शहर वालो का क्या हाल चाल है। तो जवाब मिला के आपकी बाद-दुआ अब ख़तम हो चुकी है। शहर वाले अब पहले से भी बेहतर है। आपको बड़ा मलाल हुआ। आप गुस्से में भरकर अपने घर गए और अपने बेटे को साथ लेकर शहर छोड़ने का इरादा करलिया। घर पर आपकी बीवी मौजूद ना थी। आपने अपने बेटे को लिया और शहर को छोड़ने के इरादे से जंगले को पार करते हुए चले जा रहे थे। के एक भेड़िया नमूदार हुआ और आपके बेटे की गरदन पर हमला करके घने जंगले में छुप गया। आप बेहद रंजीदा और परेशान शहर के किनारे पर रवां एक नदी के किनारे पर पहुंचे। और नाव का इंतज़ार करने लगे। अब आप बिलकुल तनहा थे एक अजीब सी मायूसी आपके चेहरे पर तारी थी। उसी वक्त कुछ देर बाद एक नाव किनारे पर आकर लगी। उसपार से आने वाले मुसाफिर उतरने लगे। अब बारी थी इधर के मुसाफिरों को उस पार छोड़ने की। औरो के साथ युनुस (अ.स) भी नाव में बैठ गए और मल्लाह ने नाव को खेना शुरू किया। जब नाव बीचो बीच दरिया के पोहंच गई। तो नाव डूबने लगी यहां तक की इस नाव के

पीछे आने वाली नाव आगे निकल गई। उसी वक्त मल्लाह ने कहा लगता है एक शक्श को इस नाव से हटना पड़ेगा तब ही यह नाव आगे बढेगी। नहीं तो सब के सब डूब जायेंगे। अब सवाल यह था के कौन बीच दरिया में छलांग लगाये। यह भी एक मुश्किल थी और इसी बीच यह देखा जा रहा था के एक बहुत बड़ी मछली बार-बार इसी नाव के पास अपना मूह खोल रही थी। जैसे किसी मुसाफिर को निगलना चाहती हो। तब ही मल्लाह ने सभी मुसाफिरों के नाम लिख कर पर्ची डाली और कहा जिसका नाम भी इस पर्ची में निकलेगा उसे फ़ौरन इस दरिया में फेक दिया जाएगा। एक शक्श ने पर्ची डरते हुए हाथो से उठाई के कहीं उसी का नाम हो लेकिन पर्ची खोलने पर नाम निकला युनुस। सब लोगो ने आपको देखा के एक नूरानी चेहरा जो की इबादत गारो में से है। लोगो की राइ बनि लगता है गलत पर्ची निकल आई है। लिहाजा दोबारा पर्ची डाली जाए। दोबारा पर्ची डाली गई फिर आपका (युनुस अ.स) का नाम पर्ची में निकला। लोग फिर परेशान हो गए के यह शक्श अल्लाह का हुकुम मानने वलो में से है। यह गुनेह गार कैसे हो सकते हैं लिहाजा सभी मुसाफिरों ने तै पाया की तीसरी बार पर्ची उठाई जाए और ऐसा ही किया गया। लेकिन तीसरी बार भी नाम आया युनुस। अब आपसे भी बर्दास्त नहीं हुआ और नाव पर खड़े हो कर बोलने लगे हां मैं ही गुनेह गार हूं। मैंने अल्लाह का हुकुम नहीं माना है। मैं ही बे हुकुम हूं। जैसे ही आप अपनी बात पूरी कर चुके तो अल्लाह ने आपको दरिया में डाल दिया। उनके (युनुस (अ.स)) के हटते ही नाव तेज़ रफ़्तार से आगे बढ़ने लगी। इधर अल्लाह ने मछली को हुकुम दिया के मेरे बन्दे युनुस को अपने पेट में निगल लो और खबर दार

अगर तुमने उसको अपनी गिजाह (आहार) बनाया। और अल्लाह ने मछली की खाल को पारदर्शी कर दिया और कहा इसे हमारी दरियाई मखलूक की सैर करवाओ। के किस तरहा हर मखलूक अल्लाह के हुकुम पर चलती है। इस मछली ने हज़रत युनुस (अ.स) को दरियाई सैर करवाई। के किस तरहा अल्लाह की यह मखलूक अल्लाह की इबादत में मशगूल है। आपको अपनी गलती का बेहद एहसास हुआ और अल्लाह से माफ़ी मांगते रहे। या अल्लाह हमारे गुनाह माफ़ करदे हमने तेरे हुकुम का इंतज़ार नहीं किया और तेरी इज़ाज़त के बगैर हमने शहर छोड़ा और अरबी में आपने यह आयत पढ़ी (ला इलाहा इल्ला अंता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिन्नज़ ज़ालिमीन)। और आखिर कार अल्लाह ने आपकी दुआ कबूल की और ५० दिन मछली के पेट में रखने के बाद अल्लाह ने मछली को हुकुम दिया के मेरे बन्दे युनुस को अपने पेट से निकाल दे। और मछली ने ऐसा ही किया और आपको दरिया के किनारे उगल दिया। फिर अल्लाह ने आपकी हिफाज़त फरमाई। और आप जिस जगह पर बेहोश पड़े थे वहां पर कद्दू की एक बेल फैला दी ताकि आपको साया नसीब हो। फिर कुछ दिनों बाद अल्लाह ने आपको शिफा अता की और अल्लाह की वही आई। ए युनुस अब अपने शहर को वापस जाओ और आपने ऐसा ही किया। जब आप अपने शहर में दाखिल हुए तो बहुत कुछ बदल चूका था आपने देखा शहर का अजब हाल है, सुख पड़ा है, अजीब बदहाली का माहोल है। फिर आपने देखा के एक चरवाहा अपनी बकरियों को चारा रहा है। आप उसके पास जाकर बोले क्या मुझे तुम्हारी बकरी का थोडा सा दूध मिल

सकता है। चरवाहे ने जवाब दिया के जबसे एक पैगम्बर यहां से गए है उस दिन से आज तक इस शहर में तबाही और बर्बादी छाई हुई है। जानवरों ने दूध देना बंद कर दिया है। पदों से फल नहीं मिलते, और फसले सूख चुकी है शहर का बादशाह और अवाम उस पैगम्बर को खोज रहे हैं, और बादशाह ने पैगम्बर का पता बताने वाले को इनाम देने का ऐलान किया है। यह सुनने के बाद आप ने अपने पास खड़ी बकरी पर अपना हाथ रखा ही था। के बकरी के थन से अपने आप दूध निकलने लगा। यह देख कर चरवाह दांग रह गया और आप से कहने लगा। के कहीं आप ही तो वह पैगम्बर नहीं है। आपने मुसकुराया चरवाहे ने कहा आपको खुदा का वास्ता आप यहीं पर ठहरिये मैं बादशाह को इततिला करता हूं। और अगर आप यहां से चले जाएंगे तो बादशाह हमे ख़त्म कर देगा। आप ने कहा जाओ तुम इततेला करो हम यहीं पर बादशाह का इंतज़ार करते हैं और चरवाहा बहुत तेज़ी से दौड़ता हुआ शहर में दाखिल होकर बादशाह के महल में दाखिल हो कर बादशाह को खुशखबरी सुनाता है। बादशाह यह सुनते ही अपने दरबारियों को साथ शहर से गुजरते हैं और लोगो को भी यह खबर सुनाई जाती है। तो शहर का शहर आपके इस्तेकबाल के लिए निकल पड़ता है आपने देखा के हजारो की तादाद में लोग आपकी तरफ दौड़ते चले आ रहे हैं तो आप कुछ हैरत ज़दा हुए। लेकिन अपनी जगह से नहीं हटे और जैसे ही बादशाह और अवाम आपके करीब पहुंची तो ख़ुशी के मारे अल्लाह का शुकर अता करते हुए सजदे में गिर पडे और बादशाह ने यु फ़रमाया। आपके जाने के बाद इस शहर में इतनी तबाही और बरबादी हुई जो आज भी जारी है। आप हम लोगो को माफ़ करदे। जब हज़रत युनुस (अ.स) ने यह माजरा देखा

तो अपने खुदा का शुकर अदा किया आपकी आँखों में आंसू छलक आए। इस तरहा युनुस (अ.स) ने अपना इम्तिहान भरोसे के साथ नहीं दिया। लेकिन फिर भी अल्लाह पाक ने आपकी तौबा कबूल की और पूरी कौम आप पर ईमान ले आई।

भरोसा और इम्तिनान की मिसालो को आगे बढ़ाते हुए अब हम यह देखे के किस पैगम्बर ने अल्लाह रब्बुल इज्ज़त पर भरोसा रखते हुए इम्तिहान में कमियाबी पाई और अल्लाह ताला ने उन्हें इस कमियाबी के एवज में किस नायाब तोहफे से नवाज़ा.

जब **हज़रत युसूफ (अ.स)** सो कर उठे तो अपने वालिद के कमरे मैं गए और कहने लगे मैंने एक ख्वाब देखा के सूरज और चाँद और ११ तारे मुझको सजदा कर रहे हैं। आपके वालिद हज़रत याकूब (अ.स) ने कहा। बेटा इस ख्वाब का ज़िक्र अपने सौतेले भाइयों से न करना नहीं तो वह तुम्हे किसी मुसीबत में डाल देंगे क्युकी तुम्हारे सौतेले भाई तुमसे जलते हैं। लेकिन इस बात को याकूब (अ.स) की पहली बीवी के दस बेटो में से सबसे बड़े बेटे जिनका नाम याहुदा था उसकी बीवी जिनका नाम "लिया" था वो हज़रत युसूफ (अ.स) की बातो को कान लगाकर सुन रही थी। और जैसे ही याहुदा घर पहुंचे बीवी ने पूरी बात बयान कर दी और याहुदा अपने बाकी ९ भाइयों को बुलाकर चाल बाज़ी का मशवरा करने लगा। किसी ने कहा युसूफ को जान से मार दो। किसी ने कहा युसूफ को किसी दूसरे शहर में भेज दो। किसी ने कहा युसूफ को जंगले के किसी अंधे कुए में धकेल दो। क्युकी इस ख्वाब के बाद हमारा बाप युसूफ को अब और प्यार करेगा और हम लोगो को बाप की मोहब्बत से महरूम कर देगा।

हज़रत याकूब (अ.स) की दूसरी बीवी का नाम रायल था। आप निहायत खूबसूरत थी सबसे पहले आपने हज़रत युसूफ (अ.स) को अपने शिकम से विलादत दी और कुछ साल बाद आप दोबारा माँ बनि और आपने एक और बेटे को जन्म दिया इनका नाम **"बिनयामीन"** रखा और जब आपका इन्तेकाल हो गया तो आप दोनों की परवरिश आपकी खाला राहिला ने की। याकूब (अ.स) दोनों बेटो को बे इनतिहा प्यार करते थे और पहली बीवी के १० बेटो के साथ आप बहार जाने को मना करते थे। क्युकी हज़रत याकूब (अ.स) को अल्लाह ने गैबी इल्म दे रखा था जिसकी वजह से आप दोनों बेटो युसूफ और बिनयामीन हमेशा अपने साथ ही रखते थे।

जब युसूफ (अ.स) अपना ख्वाब बयान कर चुके तो याकूब (अ.स) ने कहा। बेटा युसूफ अल्लाह तुमको इज्ज़त बक्षेगा इल्म और हिकमत बक्षेगा और ख्वबो की ताबीर का इल्म देगा इन्शा अल्लाह।

दूसरे दिन याहुदा अपने सभी भाइयो के साथ याकूब (अ.स) के पास पहुंचे और कहा आप युसूफ को हमारे साथ बहार खेलने क्यों नहीं भेजते यह भी तो हमारा भाई है। हम सब भाई बहार खेलने जा रहे है और हम वादा करते हैं युसूफ को हिफाज़त के साथ वापस ले आयेंगे। याकूब (अ.स) ने कहा कहीं ऐसा ना हो तुम सब खेल में सश्गूल हो जाओ और भेड़िया युसूफ को खा जाए। याहुदा ने जवाब दिया नहीं हम युसूफ को अपने साथ-साथ रखेंगे और आखिर कार याकूब (अ.स) ने ताकीद के साथ युसूफ (अ.स) को जाने की इज़ाज़त दे दी। इस वक्त आपकी उम्र १३ बरस थी। याहुदा और

सभी भाइयो ने मिलकर युसूफ (अ.स) को एक कुए में धकेल दिया। और अल्लाह ताल ने युसूफ (अ.स) को वही भेजी तुम घबराना नहीं और हम तुन्हें इन्ही लोगो पर ग़लबा देंगे और यह तुम्हे पहचान भी न पाएंगे।

कुए में डालने के बाद सभी भाई झाड़ियो में छिपकर कुए की निघ्रानी करने लगे और उसी वक्त वहां (किनान) के एक काफिला मिस्र को जा रहा था। यह काफिला इस कुए के पास रुका और पानी भरने के इरादे से डोल कुए में डाल दी। और जब उनको लगा की पानी डोल में आ गया तो रस्सी को खीचने लगे। जब डोल बहार आया तो उसमे एक खूबसूरत बच्चे को देख कर काफिले का सरदार बहुत खुश हुआ। सोचा इतना खूबसूरत लड़का है मिस्र में किसी अज़ीज़ को बेच देंगे और एक मोटी रकम हाथ लगेगी। इसी दरमियान युसूफ (अ.स) के सौतेले भाइयों ने काफिले के सरदार को घेर लिया और अपना हक जताने लगे और आखिर में सरदार से २० दिरहम लेकर युसूफ (अ.स) को सरदार के हवाले कर दिया। जिसका नाम "इब्ने अज़हा" था। इसके आलावा युसूफ (अ.स) का कुरता उतार कर उसपर खून के धब्बे लगाकर मायूस शकल बना कर याकूब (अ.स) के सामने पेश होकर रोते हुए कहा। आए अब्बा वही हुआ जिसका आप को डर था युसूफ को भेड़िया खा गया और यह कुरता गवाह है। हम सभी भाई खेलते हुए काफी दूर निकल गए युसूफ हमारे सामान की निघ्रानी कर रहे थे। जब हम लोग वापस लौटकर अपनी जगह पहुंचे तो कुछ दूरी पर यह कुरता हमारे हाथ लगा याकूब (अ.स) बहुत रोए और कहने लगे। तुम सब एक कहानी गढ़ रहे हो लेकिन

सब्र के अलावा और कोई रास्ता नहीं। अल्लाह ही बेहतर जानता है जो तुम लोग कर रहे हो।

काफिले वाले हज़रत युसूफ को लेकर मिस्र पहुंच गए और वहां के गवर्नर जिसका नाम कतफीर था उसके हाथ बेच दिया। कतफीर इस बच्चे को पा कर बहुत खुश हुआ और इस बच्चे (युसूफ) को अपने घर ले गया और अपनी बीवी जिसका नाम "ज़ुलैखा" था उसको आवाज़ लगाईं। देखो कितना खूबसूरत बच्चा हमे मिला है शायद यह बच्चा हमारे लिए खुशिया लेकर आए। हम इस बच्चे को पालेंगे यह हमारे बुढापे में सहारा बनेगा।

इस तरहा युसूफ (अ.स) ज़ुलैखा के घर में पलने लगे। वक्त गुज़रता गया हज़रत युसूफ (अ.स) भी उम्र के मुताबिक खूबसूरत होते गए और अब आपकी उम्र तक़रीबन १८ साल हो चुकी थी। लेकिन इस उम्र पर पहुंचते-पहुंचते ज़ुलैखा जिनके घर में आप पल रहे थे आप पर फ़िदा होने लगी और कई बार इशारो-इशारो में आपसे सोहबत की ख्वाहिश ज़ाहिर की। लेकिन आपने ज़ुलैखा को अल्लाह के खौफ से डराया लेकिन ज़ुलैखा अपनी कोशिश करती रही और एक दिन ज़ुलैखा को मौका मिल गया ज़ुलैखा ने घर का दरवाज़ा बंद करलिया और अपने कपडे उतार कर आपको खीच कर बिस्तर पर लिटाने लगी। आपने झटके से अपने को ज़ुलैखा के चंगुल से छुड़ाया और भागने लगे तो ज़ुलैखा ने पीछे से आपका कुरता पकड़ लिया। लेकिन आप कुर्ते की परवाह न करते हुए भाग कर दरवाजे के पास पहुंच गए और अल्लाह से अपने नफस पर काबू रखने

की दुआ करते रहे। तब ही कतफीर दरवाजे पर मौजूद हुआ। कतफीर को देखते ही ज़ुलैखा ने कहा यह सिला दिया है युसूफ ने तुम्हारी परवरिश का। युसूफ (अ.स) ने कहा मेरा परवरदिगार सब देख रहा है के मैंने ज़ुलैखा के साथ क्या बर्ताव किया है ?। अब सवाल यह पैदा हुआ के इस हादसे का गवाह कौन ? और किसकी बात का यकीन किया जाए ?। उसी वक्त अल्लाह ने युसूफ (अ.स) की मदद फरमाई वह भी ७ महीने के बच्चे से। यह बच्चा ज़ुलैखा का छोटा भाई था जिसे ज़ुलैखा अपनी वालिदा से खिलने के नाम पर अपने घर पर रखे हुए थी। इसका नाम खलीफा था। बस अचानक इस बच्चे ने कहा अगर युसूफ का कुरता आगे से फटा है तो युसूफ गुनेहगार और कुरता पीछे से फटा है तो ज़ुलैखा गुनेहगार। यह सुनते ही कतफीर ने युसूफ के कुर्ते पर नज़र दौड़ाई। देखा कुरता पीछे से ही फटा है इस तरहा अल्लाह पाक ने युसूफ (अ.स) का किरदार बचाया। कतफीर ने ज़ुलैखा को डांटा और कहा तुम औरत ज़ात होती ही ऐसी हो। फिर कतफीर ने युसूफ (अ.स) से माफ़ी मांगी और कहा यह मेरी इज्ज़त का सवाल है घर की बात है इसे यहीं ख़तम करो। दोबारा अब ऐसा नहीं होगा। लेकिन पता नहीं यह हादसा शहर की औरतो तक कैसे पहुंच गया। सभी औरतो ने ज़ुलैखा पर लानत-मलामत की तब ज़ुलैखा ने उन तमाम ५० औरतो को अपने घर पर दावत दी। ठीक वक्त पर सब औरते जमा हो गई। हर औरत के हाथ में एक फल दिया और छूरी दी औरतो को दोनों तरफ बिठाकर कहा यह फल काटो और जैसे ही औरतो ने फल काटना शुरू किया ज़ुलैखा ने कहा युसूफ इन औरतो के बीच से गुज़र जाओ। और जैसे ही

युसूफ (अ.स) उन औरतो के बीच से गुजरे औरते इनकी ख़ूबसूरती को देख कर अपनी सूझ-बूझ गवां बैठी। और तारीफे करने लगी यह कोई इंसान नहीं है यह तो कोई फ़रिश्ता है और युसूफ (अ.स) की खूबसूरती में इतनी खो गई के अपनी उँगलियाँ भी काट ली। तब ज़ुलैखा ने इन औरतों से कहा तुमने तो इनकी सिर्फ एक झलक देखि तो अपना सब्र खो बैठी और मैंने तो सालो के इंतज़ार के बाद अपनी ख्वाहिश ज़ाहिर की। और कसम है मुझे के अगर युसूफ ने हमारी ख्वाहिश पूरी नहीं की तो मैं इसे कैद में डलवा दूँगी। युसूफ (अ.स) ने अपने परवरदिगार को पुकारा या रब इससे तो बेहतर मुझे कैद में डाल दिया जाए।

मिस्र के गवर्नर कतफीर ने मिस्र के लोगो के बीच यह कहते हुए सुना के ज़ुलैखा ने अपने मेहमान पर बुरी नज़र डाली है। यह कितना गलत काम ज़ुलैखा ने किया है। कतफीर ने युसूफ (अ.स) से सवाल किया क्या तुमने इस हादसे को बहार बयान किया है ? । युसूफ (अ.स) ने कहा मेरा खुदा जानता है के मैंने इस हादसे का जीकर किसी से नहीं किया है। इसी तरहा ज़ुलैखा से भी पूछा तो ज़ुलैखा ने इलज़ाम लगा दिया अब क्युकी कतफीर मिस्र का गवर्नर था तो उसने युसूफ(अ.स) को कैद खाने में डाल दिया।

आपको जिस कैद खाने में रखा गया था उसमें २ कैदी पहले से ही मौजूद थे और यह दोनों कैदी युसूफ (अ.स) की बहुत इज्ज़त करते थे। इसमें एक बावरची था नाम मलिक दूसरा शरब पिलाने वाला नाम यूनान। एक दिन दोनों ने युसूफ (अ.स) से मुखातिब होते हुए कहा आप देखने में नेक हैं और अकल मंद भी हम चाहते हैं के बीती

रात जो ख्वाब हमने देखा है आप उसे सुने और हमे इस ख्वाब का मतलब समझाने की तकलीफ करें। युसूफ (अ.स) ने कैदी से कहा जिसे मैं पूजता हूं तुम उसे नहीं पूजते और जिसने मुझे जिंदगी दी उसी ने मुझे यह इल्म भी दिया है के मैं तुम्हारे ख्वाबो की ताबीर शाही-शाही बयान करूँ। यह कहने के बाद आपने कैदी से कहा अपना ख्वाब बताओ। तो ख्वाब को कैदी ने इस तरहा कहा के मैंने अपने सर पर रोटी रखी है और उसे कौए और चीले खा रही रही है। युसूफ (अ.स) ने जवाब दिया ए कैदी तुम्हारे ख्वाब का मतलब यह है के तुम्हे हुकूमत फांसी की सजा सुनाये गी और चील और कौए नोच-नोच कर खायेंगे।

अब दुसरे कैदी ने अपना ख्वाब बयान किया। मैं देख रहा हूं की मैं शरब निचोड़ रहा हूं। युसूफ (अ.स) ने फ़रमाया के तुम आज़ाद करदिये जाओगे और अपने मालीक को शरब पिलाओगे और इस बात का फैसला हो चूका है। जब तुम आज़ाद हो कर अपने मालीक के पास पहुँचो तो उनको मेरे बारे में भी जीकर करना के एक बुज़ुर्ग कैदी भी कैद खाने में सजा काट रहा है। जब हज़रत युसूफ (अ.स) अपनी बात पूरी कर चुके तो उन लोगो में से एक को फांसी की सजा हुई और दूसरा अपने मालीक की खिदमत में लगाया गया। उसका काम शरब पिलाना ही था लेकिन यह शक्श युसूफ (अ.स) की बातो को भूल गया।

एक बार बादशाह-ए-मिस्र ने सुबह उठकर दरबार में अपने आलिमो को इकट्ठा किया और यूँ बयान किया मैं ख्वाब देख रहा हूं के ७ दुबली गायें ७ मोती गायों को खा रही है

और ७ हरी बाली (गेहूं) के साथ ७ सूखी बाली लगी है इस ख्वाब की ताबीर मुझे बताओ। आलिमो ने बहुत कोशिश की लेकिन किसी नतीजे पे नहीं पहुंची और बादशाह से कहा हमे इस ख्वाब की ताबीर बतलाने में मुश्किल पेश आ रही और यह कुछ ऐसे उड़ते ख्वाब है जिनकी ताबीर मुमकिन नहीं।

जब यह आजाद कैदी बादशाह की खिदमद में मौजूद हुआ तो बादशाह से कहा आपके कैद खाने में एक बे गुनाह नेक इंसान सजा काट रहा है और वह आपकी ख्वाब की ताबीर जरूर बता देगा। अगर आपका हुकुम हो तो मैं जाकर दरियाफ्त कर आऊं। बादशाह ने कहा फ़ौरन जाओ और ख्वाब की ताबीर मालूम करो। तो वह शक्श फ़ौरन कैद खाने में पहुंच कर युसूफ (अ.स) से मिलता है और ख्वाब को बयान करता है। युसूफ (अ.स) ने कहा हां मैं इस ख्वाब की ताबीर बता सकता हूं। बयान करो जो ख्वाब तुम्हारे बादशाह ने देखा था। यह सुनते ही आज़ाद कैदी ने पूरा ख्वाब बयान कर दिया। युसूफ (अ.स) ने ख्वाब की ताबीर इस तरहा बयान की ७ साल लगातार कास्त कारी करो और सिर्फ उतना ही अनाज बाली से अलग करो जितना इस्तेमाल करना है। बाकी बाली को गोदामों में जमा करते रहो क्युकी इसके बाद ७ साल लगातार आकाल पड़ेगा। लिहाजा जो फसल जमा की जाएगी वही आकाल में काम आएगी। फिर इसके एक साल बाद खूब बारिश होगी जिसमे अंगूर और फलो की अच्छी पैदावार होगी। जिससे बहुत शरब वगैरह निचोड़ी जाएगी।

ताबीर सुनने के बाद कैदी फ़ौरन बादशाह के पास पहुंचता है। और ख्वाब की पूरी ताबीर बयान करता है बादशाह बहुत खुश हुआ और कहा इतना काबिल आदमी बे गुनाह हमारी कैद में। जाओ फ़ौरन उसे हमारे पास इज्ज़त से ले आओ। कैदी युसूफ (अ.स) के पास आकर उनकी रिहाई की खुश खबरी सुनाई। लेकिन युसूफ (अ.स) ने उसे वापस जाने को कहा जाओ और बादशाह से कहो उन औरतो का हाल मालूम करे जिन्हों ने अपनी उंगलिया काट ली थी। और क्या हमने उन्हें रिझाया था या येह हमे रिझा रही थी। बादशाह ने कतफीर को हुकुम दिया के मालूम करो उनका हाल और कतफीर की बीवी ज़ुलैखा और उन सभी औरतो से पूछ ताछ की गई। औरतो ने कहा युसूफ ने हमारे साथ कोई नागवार हरकत नहीं की। येह तो एक नेक इंसान है जब ज़ुलैखा ने येह हाल देखा तो अपना गुनाह कबूल कर लिया के युसूफ ने कोई गुनाह नहीं किया।

युसूफ (अ.स) ने सफाई दी के मैं येह साबित करना नहीं चाहता था के मैं पाक साफ़ हूं। लेकिन मैं येह चाहता था के कतफीर को येह मालूम पड़ जाए के मैंने अमानत में खयानत नहीं की। अब बादशाह की ख्वाहिश और बढ़ गई के इतने नेक और आलिम इनसान से कितनी जल्द मुलाकात की जाए। बादशाह ने अपने वजीर को हुकुम दिया जाओ और युसूफ को बा-इज्ज़त मेरे दरबार में लेकर आओ। जब तक युसूफ नहीं आयेंगे हम अपनी आंखे नहीं खोलेंगे और मेरे पास की गद्दी में ही युसूफ की भी गद्दी लगाई जाए और दरबारियों ने ऐसा ही किया युसूफ (अ.स) ७ सालो तक कैद में रहे।

अब बादशाह अपनी आंखे बंद किये हुए युसूफ (अ.स) के खयालो में डूब गया और एक बेहद खूबसूरत तस्वीर अपने दिल में बना ली। उसी वक्त बादशाह को युसूफ (अ.स) के आने की हलचल महसूस हुई। बादशाह अपनी सांस रोक कर बैठ गया वजीर ने युसूफ (अ.स) को बादशाह के तख्त के पास तख्त पर बिठा दिया। युसूफ (अ.स) ने बादशाह को सलाम किया बादशाह ने सलाम का जवाब देते हुए आहिस्ता-आहिस्ता अपनी आंखे खोली और जैसे ही उसकी पूरी नज़र युसूफ (अ.स) पर पड़ी बादशाह को अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था के आज मैं इस सर जमीन के सबसे खूबसूरत और नेक शक्षियत से मिल रहा हूं। यह तो हमारी मसनवी तस्वीर से कई गुना ज्यादा खूबसूरत है।

बादशाह ने हज़रत युसूफ (आ.स) से कहा मैं तुमको अपने सबसे खसम ख़ास दरबारियों में रखना चाहता हूं। यह बात सुनकर युसूफ (अ.स) ने कहा हम आपके ज़मीनी खजानों की अच्छी तरहा से देखभाल करना चाहते हैं ताकि आने वाले ७ साल जो आकाल पड़ेगा उसका अच्छी तरहा सामना किया जा सके। बादशाह ने कहा मुझे मंजूर है आप आज से मुल्की खजानो के ज़िम्मेदार हैं। जैसा की आप जानते थे के ७ साल लगातार सूखा पड़ेगा। आप हर साल फसल काटने के वक्त खुदा मैजूद रहते और इस्तेमाल होने वाले अनाज के आलावा बाकी अनाज बालियों में ही रहने देते। इसके लिए आपने ख़ास गुलाम बनवाए और लगातार ७ साल आप अनाज को महफूज़ करते रहे। अब आकाल का पहला साल आया आपने जमा अनाज को दिरहम के बदले बेचा।

ईस तरहा १ साल पुर सुकून तरीके से गुजर गया किसी को मुश्किल पेश नहीं आई। अब दूसरा साल आया और सूखा पड़ा। आपने रियाया को हुकुम जारी किया के अपने जेवर वगैरह के बदले अनाज खरीदो। रियाया ने ऐसा ही किया इस तरहा यह आकाल भी साथ खैरियत के गुजर गया।

अब तीसरे साल फिर आकाल पड़ा। आपने रियाया को हुकुम भेजा के अपने गुलामो को हुकूमत के हाथो बेचो और उसके बदले अनाज खरीदो। रियाया ने ऐसा ही किया और तीसरा आकाल भी साथ खैरियत के गुज़र गया। चौथे साल फिर आकाल पड़ा। आपने रियाया को हुकुम जारी किया के अपने घरो को हुकूमत के पास गिरवी रखो और उसके बदले अनाज ले जाओ। चुनांचे रियाया ने ऐसा ही किया, किसि को भी भूका नहीं रहना पड़ा। पांचवे साल फिर आकाल ने अपना सर उठाया। आपने फरमान जारी किया के अपने बेटो के नाम हुकूमत में लिखा दो ताकि जब भी हुकूमत को ज़रूरत पेश आएगी इन लोगो को हुकूमत अपने काम में ले लेगी और इस साल इन औलादों के बदले अनाज दिया गया। इसा तरहा पांचवा आकाल भी अच्छी तरहा गुजर गया। अब बारी थी छटे आकाल की। इस साल भी बत्तर सूखा पड़ा। अब आपने हुकूमत की तरफ से ऐलान करवाया अब खुदा अपने को बेचो और अनाज पाओ। लिहाजा अब लोगो ने अपने नाम हुकूमत को लिखवाये और इसके बदले अनाज पाया। इस तरहा यह साल भी बहुत अच्छी तरहा गुजर गया। अब सातवा साल फिर आकाल लेकर आया। अब आपने मुफ्त में अनाज बटवाया। इस तरहा रियाया को इस साल भी कोई तकलीफ

पेश नहीं आई। इस तरहा ख्वाब की ताबीर पूरी हुई और आठवे साल खूब अच्छी बारिश हुई और इस साल बढ़िया फसल पैदा हुई अंगूर और फलो से बाग़ लेह लहा उठे जिस वजह से इस साल सबसे जादा शारब निचोड़ी गई। बादशाह युसूफ (अ.स) पर फ़िदा थे। बिना आपको देखे बादशाह को चैन मुमकिन नहीं। हुकूमत के बड़े से बड़े और छोटे से छोटे मसलो पर युसूफ (अ.स) की राय लिए बिना कोई काम नहीं करता।

इधर किनान जहां याकूब (अ.स) अहलो अवाल के साथ रह रहे थे। वहां आकाल पड़ गया और दाने-दाने को मोहताज हो गए। तब आपने अपने बड़े बेटे को हुकुम दिया की जाओ पडोसी हुकूमत से अनाज ले आओ। चुनांचे याहुदा ने अपने सभी भाइयों को चलने को कहा। लेकिन याकूब (अ.स) ने बिनयामीन को अपने पास ही रखा और कहा बिनयामीन को देख कर मैं युसूफ का गम भूलता हूं लिहाजा बिनयामीन को मेरे पास ही रहने दो और तुम १० भाई अपने ऊटो पर सवार होकर मिस्र से अनाज ले आओ। याहुदा जो की वलि एहद था अपना काफिला बनाकर मिस्र पहुंचता है और अनाज को खरीदने की बात करता है। एक गुलाम युसूफ (अ.स) के पास आकर बतला ता है के किनान से एक काफिला आया है और उनकी ख्वाहिश है के अनाज खरीदे और अपना काम याहुदा बतलाता है। जैसे ही युसूफ (अ.स) ने यह सुना गुलाम को हुकुम दिया जाओ इन्हें हमारे हरम में बा इज्ज़त ले आओ। गुलाम सभी लोगो को युसूफ (अ.स) के हरम में ले गया युसूफ (अ.स) ने देखते ही अपने भाइयो को पहचान लिया, लेकिन ज़ाहिर नहीं किया। याहुदा ने अपने मुल्क किनान के बारे में बतलाया के बहुत

(आकाल) पड़ गया है। अनाज की बहुत किल्लत है। लिहाजा हम आपसे उम्मीद करते हैं के आप हमे अपना अनाज बेचेंगे। युसूफ (अ.स) ने उनकी बहुत खातिर दारी की और कहा और कौन-कौन लोग हैं आपके साथ। याहुदा ने जवाब दिया मेरे वालिद साहब हैं जो की नाबीना है और हमारा एक भाई जिसका नाम बिनयामीन है वह वालिद साहब के साथ ही रहता है। युसूफ (अ.स) ने गुलामो को हुकुम दिया के इन लोगो को दस उठ अनाज दे दिया जाए। गुलाम ने आपके हुकुम की तामील की। फिर जो रकम याहुदा ने आपको अनाज के बदले दी थी, चुपके से उनके अनाज में रख दी (छुपा दी) और कहा जब दोबारा आना तो अपने छोटे भाई बिनयामीन को लेते आना नहीं तो हम आप लोगो को अनाज नहीं देंगे। याहुदा अपने सभी भाइयों को लेकर किनान वापस आ गया और मिस्र और बादशाह की बहुत तारीफ की और यह भी कहा के अगली बार जब आना तो अपने भाई बिनयामीन को भी लेकर आना और अब्बा उन्हों ने हमारी रकम भी हमारे अनाज में छुपाकर वापस कर दी। कितना नेक इंसान है।

किनान के हालात अभी भी वैसे ही थे। लेहाजा अनाज की ज़रूरत दोबारा आन पड़ी तब याहुदा ने अपने वालिद से कहा के अगर बिनयामीन हमारे साथ नहीं जाएगा तो हमे अनाज भी नहीं मिलेगा। लेहाजा ए अब्बा बिनयामीन को हमारे साथ भेज दीजिए। याकूब (अ.स) ने कहा हमे तुम लोगो पर कोई भरोसा नहीं, तुम लोग एक बार ऐसे ही युसूफ को भी ले गए थे जो आज तक वापस नहीं आया मैं बिनयामीन को तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा।

याहुदा ने कहा हम बिनयामीन की हिफाजत का वादा करते हैं। तब याकूब (अ.स) ने कहा ठीक है। तुम सब अल्लाह को गवाह करते हुए एहद लो की बिनयामीन को अपने साथ रखोगे और बिना बिनयामीन के बिना वापस नहीं आओगे। अगर अल्लाह ही बिनयामीन को रोक ले तो उसमे कोई हर्ज नहीं। याहुदा ने कहा हम एहद लेते है। फिर याकूब (अ.स) ने कहा देखो बेटो सब लोग एक ही दरवाजे से दाखिल ना होना और कहा मैं अपने खुदा पर भरोसा और सब्र रखता हूं।

जब यह काफिला मिस्र में दाखिल हुआ तो अलग अलग दरवाजे से ही दाखिल हुआ और युसूफ(अ.स) के पास पहुंचे। युसूफ (आ.स) बिनयामीन को देखते ही बहुत खुश हुए। सब का ज़ोर दार इसतेकबाल किया और दावत का दस्तर-ख्वान लगवाया। फिर आपने कहा आप लोग जोड़ी बनाकर बैठ जाइये। लिहाजा दसो भाई अपने जोड़ी बनाकर बैठ गए। बिनयामीन अकेले रह गए और कहने लगे काश युसूफ होता तो हम भी जोड़े से बैठते। यह सोचना भर ही था के युसूफ (अ.स) साथ बैठ गए और कहा चलो मैं तुम्हारा भाई। बिनयामीन यह सुनकर बहुत खुश हुए। जब सब लोग दावत खा चुके तो इशारे से युसूफ (आ.स) ने बिनयामीन को एक तनहा जगह पर बुलाया और उनका हाल चाल पूछा। फिर बिनयामीन से पूछा क्या तुम्हारा सगा भाई नहीं है ?। बिनयामीन ने कहा था। लेकिन उन्हें भेडियों ने खा लिया। यह कहकर बिनयामीन रोने लगे फिर युसूफ (अ.स) ने कहा रोओ मत मैं अब अपने भाई के आँखों में और आंसू नहीं देख सकता। बिनयामीन ने आंखे फाड़ कर युसूफ (अ.स) को देखा और कहा

क्या आप ही मेरे भाई युसूफ हैं। आप ने हां भरी और बिनयामीन को अपने गले लगा लिया और रोने लगे। फिर आपने बिनयामीन से कहा देखो यह खबर तुम्हारे सौतेले भाइयों को ना लगे हम तुम्हे किसि भी बहाने से अपने पास रोक लेंगे तुम फ़िक्र ना करना।

जब ११ ऊटो पर अनाज लाद दिया गया तो अनाज नापने वाला शाही पैमाना बिनयामीन के अनाज के थैले में छिपा दिया, और युसूफ (अ.स) ने बहार आकर अपने ११ भाइयों को विदा किया और जैसे ही काफिला महल के बहार निकला युसूफ (अ.स) ने गुलाम से कहा शाही पैमान मौजूद नहीं है। कहीं ऐसा तो नहीं उन ११ में से किसी एक ने पैमाना चोरी किया हो। लिहाजा जो भी पैमाना खोजेगा उसे एक ऊंट इनाम में दिया जाएगा। गुलाम ने अपनी सवारी ली और काफिले के पीछे भागा और कुछ ही देर में काफिले वालो के पास पोहंचकर उन्हें रोक कर कहा। तुम्हारे किसी भाई ने शाही पैमाना चुराया है। लिहाजा आप सब लोगो की तलाशी ली जाएगी। याहुदा ने कहा हम तो अमन परस्त हैं हम आपके मुल्क में किसी शरारत के इरादे से नहीं आए हैं। लेकिन गुलाम ने पहले १० भाइयो की तलाशी ली और उसमे कुछ ना मिला बिनयामीन समझ गए के यह युसूफ की एक चाल है। इस लिए आप दिल ही दिल में खुश हो रहे थे अब बारी थी बिनयामीन की तलाशी की और उनके अनाज के थैले में पैमाना मिल गया। गुलाम ने कहा मिस्र के कानून के हिसाब से इन्हें यहीं कैद किया जाता है। याहुदा को अपने बाप से किया गया एहद याद आता है और बड़ी मिन्नते करते है। के यह मेरे

वालिद की सब से चहिती औलाद है, अगर आप इसे रोक लेंगे तो मेरे वालिद रो-रो कर अपनी जान दे देंगे। तब गुलाम ने कहा आप हमारे आका से मिलकर दरख्वास्त कर सकते हैं। इस तरहा युसूफ (अ.स) के सामने याहुदा ने कहा के मैं बहुत शरमिंदा हूं के मेरे भाई ने चोरी की और इससे पहले इसका भाई युसूफ भी चोर था जैसे ही याहुदा ने यह बात कही युसूफ (आ.स) को गुस्सा आ गया लेकिन आपने गुस्से को ज़ाहिर होने से रोका। याहुदा ने आगे कहा के मेरी इलतिजा है के आप बिनयामीन के बदले में हम में से किसी एक को रोक लें लेकिन बिनयामीन को छोड़ दें। युसूफ (अ.स) ने कहा मैं खुदा से पन्हा मांगता हूं के गुनाह कौन करे और सजा कोई और भरे। मुझसे ऐसी उम्मीद मत करना। याहुदा ने अपने भाइयों से कहा के मैं यहां से किनान वापस नहीं जाऊँगा लिहाजा तुम सब किनान लौटकर वालिद को इस वाकिए से वाकिफ करवाओ।

बिनयामीन हज़रत युसूफ (आ.स) के साथ रहने लगे और अल्लाह का हर वक्त शुकर अदा करते या अल्लाह तू कितना रहीम है जो तूने मेरे भाई युसूफ की हिफाज़त भी की और सल्तनत भी बक्शी। दोनों भाई अब अपने वालिद और वालिदा (सौतेली माँ) की बात करते और तरकीब सोचते की किस तरहा उन्हें खुश खबरी भेजे।

इधर काफिला किनान पहुंचा और सभी भाइयो ने याकूब (अ.स) को पूरे हादसे से वाकिफ कराया। याकूब (अ.स) ने पहले उनकी बात पर यकीन नहीं किया लेकिन काफिले के दुसरे लोगो की गवही मिलने पर आपने यकीन किया । लेकिन सभी लोगों

ने यह जरूर कहा की वह (युसूफ अ.स) एक रहम दिल इंसान है। अगर कोशिश की जाए तो रहम खा कर बिनयामीन रिहा हो सकते हैं।

याकूब (आ.स) ने अपने बेटो को इकट्ठा किया और कहा बेटो यह ख़त मैंने लिखा है तुम इस ख़त को उनको (युसूफ अ.स) सौंप देना। शायद उसे हमारी इमानदारी पर यकीन आ जाए और बिनयामीन को आजाद कर दे। आपके बेटे ख़त को लेकर मिस्र पहुंचे और युसूफ (अ.स) को ख़त सौंपा। आपने ख़त पढना शुरू किया सलाम अलैकुम हमें खुदा की कसम है के हमारे वालिद इशाक हमारे दादा इब्राहीम की पीड़ी में किसी ने आज तक चोरी नहीं की, मेरा बेटा बिनयामीन एक नेक और ईमानदार है इसके पहले मैं अपना एक बेटा जिसका नाम युसूफ था। उसे खो चूका हूं और उसकी याद में रो-रो कर मेरी आँखों की रौशनी जाती रही यह उसका छोटा भाई है, जो मेरे कलेजे की ठंडक है, आपको खुदा का वास्ता आप उसे रिहा करदे खुदा हाफिज। ख़त का मजमून पड़ते पड़ते युसूफ (अ.स) का कुरता आंसुओ से भीग गया और अब आप अपने को रोक ना सके और याहुदा को मुखातिब करते हुए कहा क्या हाल है युसूफ का जिसे तुम लोगो ने एक अंधे कुए में धकेल दिया था। याहुदा ने युसूफ (अ.स) के मूह से पोशीदा बात सुनी तो कहा, क्या आप ही युसूफ है ? आपने कहा हां। फिर याहुदा आपके पैरो पर गिर कर रो पड़े। आपने याहुदा को उठाया और अपने गले से लगाकर कहा मैंने तुम्हे माफ़ किया अब तुम फ़ौरन किनान को रवाना हो जाओ, और अपना कुरता उतार

कर याहुदा के हवाले करते हुए कहा इसे वालिद की आँखों पर लगा देना ताकि उनकी आँखों रौशनी लौट आए।

इधर याकूब (अ.स) ने अपने घर वालो से कहा तुम मुझे सठिया-या हुआ ना समझो मुझे युसूफ की खुशबू आ रही है। घर के लोगो ने कहा तुमने तो हद्द करदी तुमने युसूफ की याद में अपनी आंखे गंवा दी। याकूब (अ.स) ने कहा तुम वह नहीं जानते जो मुझे मेरा खुदा गैब से बताता है। अभी यह बात चीत चल ही रही थी के याहुदा घर में दाखिल हुए सलाम कहते हुए याकूब (अ.स) के पास पहुंचे और कुरता आपकी आँखों से छुआ दिया और उसी पल आपकी आँखों से दिखने लगा। यह मौजिज़ा देख कर घर वाले हैरान रह गए। फिर याहुदा ने कहा युसूफ जिंदा है और मिस्र की हुकूमत उनके पास है। युसूफ की बात ज़ाहिर होते ही याकूब (अ.स) ने कहा मैं नहीं कहता था के जो मुझे मालूम है वह तुम नहीं जानते। याहुदा ने कहा ऐ मेरे बाप आप अल्लाह से मेरे गुनाहों की माफ़ी मांगे आपने कहा मैं जरूर तुम्हारे हक़ में माफ़ी मांगूगा अब जो हो चूका उसे भूल जाओ।

याहुदा ने कहा आप सबको युसूफ ने बुलाया है और आपके इसतेकबाल का इंतज़ार कर रहे हैं। सब लोग अपनी तैयारी करते हैं और काफिला बनाकर मिस्र को रवाना हो जाते हैं। मिस्र के दरवाजे पर युसूफ (आ.स) और उनकी हुकूमत की तमाम रियाया आपकी (याकूब अ.स) के दीदार में खड़े हैं और जैसे ही आप एहलो अवाल को देखते हैं बहुत खुश होते हैं। अपने घर वालो को हरम में ले जाते हैं खूब खातिर तवाजो करते हैं।

एक दिन याकूब (अ.स) ने आपको तख्त पर बिठाया और आप खुदा आपकी बीवी और ११ भाइयों ने आपका ताजिमी सजदा किया। इस तरहा ख्वाब की ताबीर पूरी हुई जिसमे यह था के युसूफ (अ.स) को चाँद सूरज और ११ सितारे आपको सजदा कर रहे हैं।

अब आप अपने घर वालो के साथ में रहते थे और इस वक्त आप खुदा मिस्र के बादशाह थे आप की हुकूमत बहुत खुश हाल और चर्चे पूरी दुनिया में घूम रहे थे और बादशाह के साथ-साथ आपको पैगम्बरी भी मिली थी। आप लोगो को सिरातल मुस्तकीम पर चलने की तबलीग करने लगे और लोगो से कहते पहचानो उस खुदा को जो हम सब का मालिक है, इस ज़मीन का मालिक, इस आसमान का मालिक और दोनों के बीच की दुनिया का भी मालिक।

एक बार आप अपनी हुकूमत में गस्त लगा रहे थे के आपको एक बड़ी उम्र की औरत लकड़ी के सहारे चलती दिखाई दी। आपने पहचान लिया के यह ज़ुलेखा ही है। आपने करीब पोहंच कर कहा कहो बड़ी बी कैसी हो ?। ज़ुलैखा पलटी और युसूफ (आ.स) को पहचान लिया कहा अच्छी हूं। फिर युसूफ (अ.स) ने पूछा क्या इरादा रखती हो मुझसे (युसूफ) से । ज़ुलैखा ने कहा आज भी मैं तुमसे शादी की ख्वाहिश रखती हूं। यह सुनकर आपने बारगाहे इलाही में हाथ उठाये और कहा "या रब ज़ुलैखा की जवानी वापस कर दे" और कुछ पालो के अन्दर ही अल्लाह ने ज़ुलैखा की जवानी लौटा दी। फिर आपने ज़ुलैखा से निकाह किया। इस वाकिए से युसूफ (अ.स) ने अपना इम्तिहान

भरोसे के साथ दिया तो अल्लाह ने आपको पैगम्बरी भी दी और बादशाही बक्शी और ज़ुलैखा की मोहब्बत भी अल्लाह को बेहद पसंद आई थी अल्लाह ने युसूफ (अ.स) के दिल में ज़ुलैखा के लिए मोहब्बत पैदा की और आपने (युसूफ (आ.स)) ने दुआ कर दी और अल्लाह ने कबूल करके निकाह में दे दिया।

इस वाकिए में हज़रत याकूब (आ.स) का भी इम्तिहान था इसके बारे में एक और वाकिया है के एक बार याकूब (अ.स) अपने घर में खाना नोश फार्म रहे थे। एक सावली ने आवाज़ लगाईं लेकिन आप खाने में मशगूल रहे और सावली भूका लौट गया। अल्लाह को यह बात नागवार गुजरी और अल्लाह ने इनका इम्तिहान लेना शुरू किया जो के बेटे की जुदाई से शुरू हुआ और अनाज की किल्लत तक पहुंचा और आखिर इसी अनाज ने बाप बेटे को मिलाया। लेकिन हज़रत याकूब (अ.स) का नाबीना होना यह दलील देता है के उनका भरोसा डग मगाया जब के उनके (याकूब अ.स) के सामने उनके दादा हज़रत इब्राहीम (अ.स) के बेटे हज़रत इस्माइल (अ.स) की मिसाल मौजूद थी के अपने बेटे को ज़िबाह कर रहे हैं। तो अल्लाह दिखा चूका के पैगम्बरी का इम्तिहान उनके बेटो के ज़रिये लिया जाता रहा है। लेकिन अल्लाह उनके बेटे सही सलामत वापस कर देता है। लेकिन इस वाकिए में याकूब (अ.स) अपने बेटे के गम में इतना रोये की आप नाबीना हो गए।

आखिर कार आपको अल्लाह ने इम्तिहान में पास कर दिया। अल्लाह बहुत रहम वाला है करीम है और वह अपने चुने हुए बन्दों के और आम बन्दों के गुनाह माफ़ कर देता है। युसूफ (अ.स) का यह वाकिया आज से तकरीबन ३८४२ साल पहले गुजरा था।

इस सफ़र को आगे बढ़ाते हुए अब यह देखेंगे की अल्लाह पर भरोसा रखने वाले **हूद (अ.स)** का क्या हुआ। यह वाकिया यमन और ओमान की सर जमीन का है। जब अल्लाह पाक ने हज़रत हूद (आ.स) को नबूवत अता की और आपको अल्लाह पाक ने वही भेजी "ए हूद तुम्हारा काम है हमारा पैगाम पहुंचाना तबलीग करना सच्चे खुदा और झूठे खुदा का फर्क और अल्लाह की अतात करना"। हूद (अ.स) नूह (अ.स) की सातवी पुश्त में से थे आपके वालिद का नाम अब्दुल था।

यमन मुल्क के **इकाम** शहर में आप रहते थे आप की उम्मत के लोग लहीम-शहीम थे इनकी लम्बाई तक़रीबन ४० से ५० फिट के दरमियां थी। अल्लाह पाक ने इन्हें काफी हुनर दे रखा था। यह "कौमे आद" कहलाती थी। पत्थर तराशने में इन्हें महारथ हासिल थी, और इनके मकानों की लम्बाई तक़रीबन ५००-६०० फिट रहा करती थी। कौमे आद काफी तरक्की आफता थी लेकिन यह बड़े-बड़े बुतों को तराशते और उनकी पूजा करते थे। आपने अपना तबलीगी काम शुरू किया लोगो के पास जाते और फरमाते खुदा एक है उसका कोई शरीक नहीं क्यों पूजते हो इन पत्थरो को ?। यह ना तो तुम्हे नुक्सान ही पहुंचा सकते है और ना तो फायदा। इबादत तो सिर्फ खुदा ही की करनी

चाहिए। यह पत्थर के बुत किसी काम के नहीं। अल्लाह ने तुम्हे ताकत दी हिम्मत दी और शोहरत दी तुम उसका शुकर अदा करो और इन पत्थरो की पूजा मत करो। जब आप अपनी बात कह चुके। तो कौमे आद ने आपको यह कहते हुए की "तुम हमारे दादा पर-दादा के ज़माने के खुदाओ को बुरा कहते हो। तुम्हारी यह मजाल यह कहकर पूरा मजमा आप पर टूट पड़ा और पत्थरो से संगसार कर दिया। जब इनको लगा की यह मर गए हैं तो छोड़ कर भाग खड़े हुए।

अल्लाह ने हूद (अ.स) को फरिश्तो के ज़रिये मदद भेजी और इनको अच्छा कर दिया और कहा के तुम्हे अपनी तबलीग का काम जारी रखना है। सब्र करो और हम पर यकीन रखो। अब आप पहले जैसे ही हो गए और आप पर ईमान लाने वाले भी काफी हो चुके थे। जो चुपके चुपके आपका साथ दिया करते थे। लेकिन इस कौम के सरदार को यह भनक लग गई के हूद का साथ देने वाले लोगो की तादाद बढती जा रही है और कहीं ऐसा ना हो के लोग हूद के बताये हुए दीन को अपना ना शुरू कर दे। लिहाजा हूद (अ.स) और उनपर ईमान ला चुके हजारो लोगो को शहर बदर कर दिया गया। आप ने ईमान ला चुके लोगो से कहा के आप लोग इस फैसले की मुखालिफत ना करे और चुप चाप मेरे साथ चले। चुनांचे हज़रत हूद (आ.स) और उनके साथियो ने शहर छोड़ कर एक जंगले में पनाह ली और यहीं पर इबादत करने लगे। इधर अल्लाह ताल ने कौमे आद पर बलाए भेजनी शुरू की। इससे बारिश नहीं हुई, फासले बर्बाद हो गई, चरिंदे और परिंदे मरने लगे, कुओं का पानी भी सूख गया। जिस वजह से इनसान भी मरने

लगे। लोगों में हाय तौबा मचने लगी और कहने लगे जब से हूद और उसके साथियो को शहर से निकला हुआ उसी वक्त यह परेशानी नाजिल हुई। जब यह बात कौम के सरदार को मालूम पड़ी तो उसने कहा। एक जत्था हूद के पास पहुंचे और उनसे दुआ की शिफारिश करे। चुनांचे कौमे आद का यह जत्था आपके पास पहुंचा और दुआ की गुजारिश की। आपने कहा अगर तुम लोग खुदा की इबादत करने और बुतों की पूजा छोड़ने का वादा करो तो हम खुदा से दुआ करेंगे। जत्थे के सभी लोगो ने कहा हम वही करेंगे जो आप कहते हैं इसके साथ ही आपने बारगाहे इलाही में हाथ उठाए और उधर अल्लाह ने अपनी रहमत भेज दी। जत्थे के लोग यह देख कर दांग रह गए और इमान ले आए और सभी ने लौट कर सरदार को खुश खबरी सुनाई। इस तरहा फिर इस मुल्क में खुश हाली छा गई। लेकिन फिर भी इन लोगो ने बुतों की इबादत जारी रखी। हज़रत हूद और ईमान ला चुके साथियो पर अब कोई पाबंदी नहीं थी। लिहाजा आपने कहा चलो अब काफ़ वापस चलते हैं और तबलीग करते हैं। जब आप और अपने साथी वापस शहर पहुंचे तो देखा के लोग फिर गुमराही इखतियार कर चुके हैं। तो आपने अल्लाह से बद-दुआ कर दी लिहाज फिर सूखा पड़ने लगा और लोग परेशान होने लगे। कौमे आद के सरदार ने कहा जब से तुम यहां आए हो इस शहर में दुबारा मुसीबत आ गई है। आपने कहा यह मुसीबत इस लिए है के तुम लोगो ने बुतों की पूजा करनी नहीं छोड़ी। इस लिए तुम लोगो पर यह आफत आई है। कौमे आद के सरदार ने एक तरकीब सोची के किस तरहा पूरी कौमे आद इकट्ठा हो और हज़रत हूद को भी वहां बुलाया जाए के हम सब एक साथ आप पर ईमान लाने वाले हैं। चुनांचे एक दिन मुक़र्रर

हो गया के जुमेरात के दिन पूरी आद कौम एक चुने हुए मैदान काफ़ पर इकट्ठा होंगे और हज़रत हूद (अ.स) वहां तशरीफ़ लायेंगे।

वही घडी जिसका सबको इंतज़ार था आ गई। पूरा मैदान कौमे आद से भर गया और हज़रत हूद (अ.स) भी ईमान ला चुके लोगो के साथ मैदान में पोहुंच गए। और कौमे आद को खुदाबा देना शुरू किया। इसी बीच कौमे आद के सरदार ने इशारा किया के हूद (अ.स) और उनके साथियो पर हमला बॉल दो ताकि हमेशा-हमेशा की मुसीबत ख़तम हो जाए। लेकिन यह क्या आद कौम के हमलो का कुछ असर नहीं हो रहा है। उसी वक्त हूद (अ.स) ने अल्लाह पाक से मदद मांगी। तो देखते क्या है एक तरफ से काले-काले बादल तेज़ी से चले आ रहे हैं। दूसरी तरफ से पीले बादल चले आ रहे हैं और तीसरी तरफ से सफ़ेद बादल चले आ रहे हैं। हूद (आ.स) ने कहा बताओ तुम्हे कौनसे बादल पसंद हैं। लेकिन कौमे आद ने कहा काले बादल। क्युकी उन्हों ने देखा था काले बदल बारिश करते है लिहाजा सिर्फ काले बदल इन लोगो पर छा गए और इन बदलो ने ऐसी सर्राटे दार ठंडी हवा चलाई के जिसकी वजह से इनकी हड्डियाँ गलने लगी और जिधर यह भागते वहां रेत की बड़ी बड़ी दीवारें खड़ी हो जाती। इस तरहा ७ दिन और रात लगातार यह हवा चली। और जब हवा स्की तब तक कौमे आद के बडे-बड़े महल ज़मीन-दोष हो चुके थे। अब हरतरफ एक सपाट मैदान ही नज़र आ रहा था। हज़रत हूद (आ.स) ने ईमान ला चुके लोगो को एक हिसार में बांद रखा था। जिससे सभी ईमान वाले बच गए इस गलने वाली हवा को **" बादे अकीम "** कहते हैं। अल्लाह के हबीब

ने भी अल्लाह से बादे अकीम के शर से पनाह मांगी। इस तरहा अल्लाह ताला ने ईमान वालो की बादे अकीम से शर से हिफाजत की। तक़रीबन अभी हाल के कुछ साल पहले यमन के हुकुमरान ने यमन के इन हिस्सों की खुदाई करवानी शुरू की थी। जब ३०० फिट नीचे खुदाई पहुंची तो खुदाई करने वाले कासिद झुलस कर मर गए। बाद में आलिमो ने हुकुमरान को आगाह किया के यह खुदाई बंद करवा दे, क्युकी यह वही जगह है जहां कौमे आद के बड़े बड़े महल और पूरी कौमे आद को अल्लाह ने जिंदा दफ़न कर दिया था। हज़रत हूद ७६० साल तक जिंदा रहे इस तरहा हूद (अ.स) ने अपना इम्तिहान भरोसे के साथ दिया और अल्लाह पाक ने आपको क़ुबूल किया।

भरोसा और इम्तिहान की अगली कड़ी में हम जिक्र करते हैं **मूसा (अ.स)** जिनका इम्तिहान अल्लाह ताल ने आज से ३५८२ साल पहले लिया और पैगम्बरों में से एक पैगम्बर किया। हम देखेंगे के अल्लाह ने आपको तो पैदा होते ही इम्तिहान में डाल दिया। यह इम्तिहान आपकी वालिदा का भी था।

इस वाकिए से ४५ साल पहले एक वाकिए का जिक्र करते हैं। एक दिन अल्लाह पाक ने मौत के फ़रिश्ते से पूछा। ए मौत के फ़रिश्ते क्या कभी ऐसा हुआ के मैंने (अल्लाह) तुम्हे हुकुम दिया हो के फला की रूह कब्ज़ कर लाओ। और तुमको रूह कब्ज़ करते हुए कुछ रंज हुआ। हो फ़रिश्ते ने जवाब दिया या अल्लाह आपका कौनसा ऐसा हुकुम है जिसे मैंने ना माना हो। यानी हमने आपके हर हुकुम की तामील की है। जब आपने यह सवाल किया है तो मुझे एक बार अफ़सोस लगा था। लेकिन हमने आपका हुकुम

पूरा किया अल्लाह पाक ने कहा बतलाओ तो फ़रिश्ते ने यूँ कहा "समुद्र में एक कश्ती रवां थी एक जोर दार तूफ़ान आया उस कश्ती पर ६ लोग सवार थे जिसमें ५ मर्द और १ औरत जो के हामला थी " आपका हुकुम की इनकी रूह कब्ज़ करलो तो मुझे पांचो मर्दों कि रूह कब्ज़ करते हुए कोई तकलीफ महसूस नहीं हुई। मैंने अपने काम को अंजाम दिया। छट्टी वह औरत थी जिसके पेट में एक बच्चा पल रहा था। वह औरत टूटी नाव के एक पटड़े को मजबूती से पकडे रही और बड़ी जद्दो जेहद के बाद समुद्र के किनारे पर लगी। यह एक बिया बान जंगले था जिसमे हर तरहा के खूंखार जानवरों की आबादी थी और जैसे ही औरत को जमीन का सहारा मिला इसकी जान में जान आई। और अगले ही पल में उस औरत ने एक लड़के को पैदा किया और उसके अगले ही पल आपका हुकुम हुआ के इस औरत की भी रूह कब्ज़ करलो। मैंने आपका हुकुम माना और रूह कब्ज़ करली। लेकिन मेरे दिल में ख़याल आया की इस खौफनाक जंगले में इस बच्चे का क्या हशर होगा ?।

अल्लाह पाक ने फ़रमाया उसके आगे की दास्ताँ तुम्हे हम सुनाते हैं। हमने जंगले के पेड़ों को हुकुम दिया। के अपने पत्तो को गिराओ ताकि यह एक गद्दा बन जाए चुनांचे पेड़ों ने अपने पत्ते गिरने शुरू कर दिए और एक गद्दे की शक्ल तैयार हो गई। फिर हमने जंगले के खूंखार जानवरों को हुकुम दिया के खबर दार इसे जर्रा बरबर भी तकलीफ न पहुंचे और आज से इस बच्चे की हिफाज़त तुन्हारे जिम्मे। चुनांचे शेर और चीते जैसे खूंखार जानवरों ने इस बच्चे को अपने मूह में दबाकर पत्तो के बने गद्दे पे रख दिया और

इसकी चौकी दारी करने लगे। फिर हमने बदलो को हुकुम दिया के तुम्हे इस बच्चे को दूध मुहैया करना है। चुनांचे बदलो ने पानी की जगह दूध की बारिश कर के इस बच्चे की परवरिश शुरू कर दी। जो बूंदे बच्चे के मूह में पहुंचे वह दूध और जो बहार गिरे वह पानी। यह बच्चा बड़ा होता गया खूंखार जानवरों के बीच रहना, सहना, खाना, पीना और इसे किसि भी तरहा की बिमारी ने परेशान नहीं किया। इस तरहा इस बच्चे को ४० साल गुजर गए। एक दिन इसी शक्श ने अपने मिलने वालो के बीच कहा की मुझे देखो आज तक मैं बीमार नहीं हुआ। बाद इसी दिन से हम ने अपनी रहमत उठा ली और आगे चल कर यह फिरऔन बना।

इस तरहा हमने देखा की यह शक्श घमंड में आ गया और खुदा को भूल गया। आगे चलकर इसे हुकूमत भी मिली और अपने को खुदा कहलाने लगा। इसको मानने वाले किब्ती कहलाए। फिरऔन का असली नाम **"वलीत बिन मसूद"** था और इसकी बीवी का नाम **"आसिया"** था। शादी के कई शाल गुजर गए लेकिन औलाद का सुख नसीब न हुआ।

एक दिन फिरऔन ने ख्वाब देखा के आसमान से एक दहकता सितारा ज़मीन पर गिरता है और फिरऔन के महल और किब्तीयो के सभी शहर और गाँव राख के ढेर में तब्दील हो गए। अचानक फिरऔन की आँख खुल गई और वह फिर नहीं सोया। सुबह होते ही नुजुमियो से अपने ख्वाब की ताबीर मालूम करता है। नुजुमी ने कहा ख्वाब के मुताबिक बनि इसराइल की कौम से एक लड़का पैदा होने वाला है। जो आपका और

आपकी किब्ती कौम का दुश्मन होगा। वह आप सब को फनाह कर देगा ख्वाब की ताबीर सुनकर फिरऔन के होश उड़ गए। उसने अपनी फ़ौज को हुकुम दिया के जितने भी लड़के पैदा हो उन्हें कतल करदो और लडकियों को जिन्दा रखो। चुनांचे लगातार ५ साल ऐसा ही चलता रहा। एक दिन फिरऔन के नुजुमियो ने कहा के अगर इस तरहा बनि इसराइल के लडको को आप कतल करते रहे तो हमारी गुलामी कौन करेगा। फिर नुजोमी ने कहा आज की रात जो औरते हम बिस्तर होगी उसी में से एक औरत आपके दुश्मन को पैदा करेगी। चुनांचे फिरऔन ने मनादि करवा दी के आज कोई भी बनि इसराइल का मर्द अपनी औरत से हमबिस्तर नहीं होगा। इसी रोक थाम के लिए फिरऔन ने अपने महल को सजवाया और दाइयों के ज़रिये औरतो की जांच करवाई। जो औरत हामला न थी उसे फिरऔन के महल में बुलाया गया के आज की शब् महल में गुजारो और दावत का लुत्फ़ उठाओ। चुनांचे इन् औरतो में **"नुजुफी इमरान"** की बीवी भी थी जो की फिरऔन के काफी नजदीक थे। इमरान ने अपनी बीवी का हाथ पकड़ा और फिरऔन के महल में ही हमबिस्तरी की। जिसके लिए इतनी मनादि करवाई गई और वह काम फिरऔन के महल में ही अंजाम दिया गया। अल्लाह जो चाहता है वही होता है।

महफ़िल अपने शबाब पर थी तभ ही नुजुमी ने फिरऔन से कहा जिसका डर था वही हो गया क्युकी वह बच्चा किसी बनि इसराइल की औरत के शिकन में पहुंच चुका है। फिरऔन ने मारे गुस्से के महफ़िल बर्खास्त कर दी और दाइयो को शख्त हिदायत दी के

हर औरत की जांच ठीक ठीक करो और जिसमे हमल मिले उनके हमल को गिरा दो। लिहाज़ा हज़ारो औरतो के हमल गिरा दिए गए। लेकिन इमरान की बीवी के पेट की जब जांच की गई तो आपका हमल पकड़ में नहीं आया। क्युकी पैगम्बरों के हमल ज़ाहिर नहीं होते। उसकी असल वजह यह है के ऐसे बच्चे नाफ-रिदा के एलाइदा रहते हैं। जिस से माओ को हमल मालूम ही नहीं पड़ते।

जब इमरान की बीवी को पूरे ९ महीने गुजरे तो आपको हरकत शिकन शुरू हुई और कुछ ही देर में एक बच्चा पैदा हुआ। बच्चा नुहायत खूबसूरत और तंदुरुस्त था। आपने बच्चे को छुपा लिया के कहीं ऐसा न हो के फिरऔन इसे भी कैद करदे। चुनांचे अल्लाह की वही आई के इसे दूध पिलाओ। और डर हो तो इसे एक संदूक में रख कर दरिया में डाल दो। तुम इससे बे फिकर रहना, हम तुह्मे इससे जल्द मिला देंगे और पैगम्बरों में से एक पैगम्बर करेंगे। इसके बाद माँ ने बच्चे के संदूक का इंतज़ाम करना शुरू किया इस लिए आप एक संदूक की दूकान पर गई और कहा हमे एक फला नाप का संदूक बना दें। इत्तेफाक यह था के यह संदूक की दूकान फिरऔन के चचेरे भाई **हिजकिल्ल** की थी। हिजकिल्ल ने कहा आप हमे यह तो बताइयें के यह संदूक किस काम में आप लेंगी, ताकि मैं उसी तरहा इसकी बनावट शुरू करू। आप घबराई कहीं यह राज फिरऔन तक न पहुंच जाए। तो पहले तो आपने काफी आना कानी की लेकिन हिजकिल्ल ने जब यह कहा के हम आपकी बात कभी भी किसी से नहीं कहेंगे तो फिर आपने डरते डरते कहा के मेरे घर एक लड़का पैदा हुआ है उसको इसमें छिपाउंगी

। हिजकिल्ल के कान खड़े हो गए लेकिन जाहिर न होने दिया और कहा कल आपको यह संदूक मिल जाएगा अब आप कल आइयेगा।

हिजकिल्ल बहुत खुश हुआ के इतना बड़ा राज जब फिरऔन को बताऊंगा तो मुझे जरूर इनाम मिलेगा। चुनांचे हिजकिल्ल फिरऔन के सामने हाज़िर होकर कहने लगा मुझे एक राज की बात आपसे करनी है। लिहाजा मौजूद लोगो को यहां से हटा दे। लेकिन जैसे ही उसने मूह से राज निकालने की कोशिश की अल्लाह ताला ने उसको गूंगा कर दिया। फिरऔन बड़ा परेशान के इसे क्या हो गया ?। फिरऔन ने हिजकिल्ल को इशारे से कहा के जाओ। हिजकिल्ल चुपचाप महल से बहार निकल जाता है और कुछ दूर चलने पर उसकी जबान ठीक हो जाती है। वह फ़ौरन महल की तरफ भागता है और फिरऔन की तरफ मुखातिब होते हुए कहना शुरू ही किया था के अल्लाह पाक ने इसकी जबान फिर से गूंगी कर दी। हिजकिल्ल बहुत परेशान और फिरऔन को गुस्सा की बे वजह यह हमारा वक्त बर्बाद कर रहा है। लिहाजा हिजकिल्ल को हुकुम मिला के दरबार से फ़ौरन बहार निकले। क्युकी फिरऔन की समझ में आया के हिजकिल्ल पागल हो चूका है। लिहाजा इससे बात करने का कोई मतलब नहीं। हिजकिल्ल महल से बहार आकर अपनी दूकान पहुंचता है और अपने गुलाम से पानी मांगता है तो उसकी जबान साफ़ साफ़ बात करती है। हिजकिल्ल समझ गया की यह कोई मामूली लड़का नहीं जरूर यह कोई बहुत बड़ा खुदाई मेहमान है और यह सोच कर हिजकिल्ल ईमान ले आता है। यह पहला शक्श था जो बिगैर देखे ईमान लाया

सुबहान अल्लाह। दुसरे दिन इमरान की बीवी संदूक लेने पहुंची तो हिजकिल्ल ने एक खूबसूरत संदूक जिसमे पानी पार न हो सके आपके हवाले कर दिया।

यह वाकिया आज से ३५८१ साल पहले का है। इमरान की बीवी ने बच्चे को दूध पिलाया और संदूक में कपड़ो के साथ रख कर अपनी बेटी मरियम से कहा बेटी अपने भाई को संदूक समेत पानी में डाल देना और साथ-साथ चलती जाना जब तक संदूक आँखों से ओझल न हो जाए। चुनांचे आप अपने भाई के संदूक के साथ कई कदम चलती गई और जब संदूक आँखों से ओझल हो गया तो वापस घर लौट आई। माँ ने पूछा बेटी संदूक सलामत तो था मरियम ने कहा जी हां। मरियम की शादी याकुना से हुई थी लेकिन आप अपनी माँ के साथ रहती थी। मरियम का अपने भाई के साथ चलना अल्लाह को इतना पसंद आया के अल्लाह ने आपको इस्लाम की बेहतरीन औरतो में एक औरत कहा जिस दरिया में संदूक रखा था वह फिरऔन के महल के बाग़ से हो कर गुजरता था। फिरऔन की बीवी आसिया अपनी कनीजो के साथ बाग़ में टहल रही थी तब आपकी नजर पानी पर तैरते हुए संदूक पर पड़ी। आपको बड़ा ताज्जुब हुआ। आसिया ने अपनी कनीजो को हुकुम दिया के इस संदूक को मेरे पास लेकर आओ और कनीजो ने बड़ी मशक्कत के बाद संदूक को अपने कब्जे में लेकर आसिया के सामने पेश किया।

आसिया ने संदूक को बड़े गौर से देखा और कहा बहुत खूबसूरत संदूक है और कहा ज़रा इसे खोल कर तो देखो। जैसे ही कनीजो ने संदूक खोला तो हैरान रह गई। आसिया ने

कहा या खुदा यह क्या माजरा है ? । इतना खूबसूरत बच्चा यह यहां कैसे पहुंचा ? । फिर आपने बच्चे को गोद में उठा लिया और चूमा तो बच्चा मुसकुराया बस फिर क्या था आप बच्चे को अपनी गोद में लेकर तेज़ कदमो के साथ अपने हरम में पहुंच गई और बच्चे से खेलने लगी । अब इनको यह भी खबर नहीं के कब फिरऔन हरम में दाखिल हो गया और यह देख रहा है के आसिया को इससे पहले कभी खुश नहीं देखा था । अचानक फिरऔन ने आवाज़ लगाईं आसिया यह बच्चा कौन है? । आसिया के कान में अचानक फिरऔन की आवाज़ का आना था के आप घबरा गई और कहा मूसा है । मिसरी जबान में "मू" का मतलब होता है पानी और "सा" का मतलब होता है लकड़ी । आसिया के कहने का मतलब था के एक लकड़ी में पानी पर तैरता मिला था । आपके (आसिया) मूसा कहने पर ही आफो मूसा कहा जाने लगा । आसिया ने फिरऔन को मुखातिब करते हुए कहा देखो कितना खूबसूरत बच्चा है । शायद खुदा ने इसे हमे पालने के लिए दिया है । फिरऔन ने कहा शायद यह वही बच्चा हो जो हमारा दुश्मन हो जिसको हुकूमत के लोग बड़ी बारीकी से ढूँढ रहे हैं और किसी ने इसे बचाने के लिए ही ऐसी तरकीब की हो ।

आसिया ने कहा कितना खूबसूरत बच्चा है । यह हमारा दुश्मन कैसे हो सकता है ? अगर मान लो के ऐसा हुआ भी तो क्या हर्ज है । जब यह हमारे साथ रहेगा पले फूलेगा तो इसके तौर तरीके भी हम जैसे ही होंगे । लिहाजा आप फिकर ना करे जरूर यह हमारी खुश किस्मती का तोहफा है, जोकि खुदा ने हमारे घर पर भेजा है । यह कहने के

साथ ही आसिया ने बच्चे को फिरऔन की गोद में डाल दिया और फिरऔन भी बच्चे को पुकारने लगा और कहा मूसा। क्युकी बच्चे ने काफी देर पहले दूध पिया था लिहाजा अब बच्चे को भूक लगी तो मूसा ने रोना शुरू किया। तो आसिया ने फ़ौरन मूसा को अपनी छाती से लगा लिया लेकिन मूसा ने अपना मूह फेर लिया आसिया को बड़ा अफ़सोस हुआ फिर अपने महल के सभी दाइयों को इकट्ठा किया। कहा किसी न किसी का तो मूसा दूध पियेंगे। लेकिन मूसा किसी भी दाइ की छाती को देखते तक नहीं थे। क्युकी अल्लाह पाक ने पैगम्बरों पर दाइयों का दूध हराम कर दिया था और आप पैगम्बर थे।

आसिया मूसा को लिए लिए महल में टहल रही है। फिर आपने फिरऔन को खबर भेजी के मूसा दूध नहीं पी रहा है। फिरऔन भी परेशान हो गया के कहीं मूसा मर न जाए। चुनांचे मूसा के लिए हुकूमत में ढोल पिटवाये की जितनी भी किबतिया दाइयां हैं सब महल में पहुंच जाए हुकूमत का फरमान सुनकर दाईयाँ महल में पहुंचने लगी लेकिन आप किसी भी दाई का दूध अपने मूह में नहीं लेते थे।

जब यह खबर उड़ते उड़ते मूसा की माँ तक पहुंची तो परेशान हो गई और कयास लगाने लगी के कहीं यह मेरी औलाद तो नहीं जोकि फिरऔन के महल पहुंच गई हो। बहुत चुपके से अपनी बेटी मरियम को समझाया की तुम देखो क्या तुम्हारा भाई तो नहीं पहुंच गया। चुनांचे दाइयों के भेस में मरियम भी महल पहुंच गई और दिल को काबू में किये हुए बच्चे को पहचानने लगी। जब इतमिनान हो गया के यह मेरा भाई ही है। तो

आसिया से मिली और कहा के अगर आप चाहती हैं के बच्चे को कोई ऐसी दाई मिले ताकि बच्चा उसका दूध पी सके। तो ऐसी एक दाई का पता मुझे मालूम है। लेकिन वह बनि इसराइल में से है आसिया ने यह खुश खबरी अपने शोहर फिरऔन को सुनाई। पहले तो फिरऔन राजी नहीं हुआ लेकिन बच्चे की मोहब्बत के आगे झुकना पड़ा। इस तरहा अल्लाह पाक ने अपना किया हुआ वादा पूरा करते हुए माँ को बेटे से दोबारा मिला दिया जैसे ही आसिया ने मूसा को इस दाई (मूसा की माँ) के हाथ में सौंपा। मूसा ने फ़ौरन अपना मूह छाती से लगा लिया और अपने को सेहरब किया।

आसिया को शक हुआ की कहीं यह मूसा की माँ तो नहीं लेकिन जाहिर न होने दिया और इसे महल में ही रहने का इंतज़ाम करवाया। इस तरहा माँ और बेटे साथ साथ रहने लगे।

इस तरहा १ साल गुजर गया और एक दिन फिरऔन अपने दरबारियों से मुखातिब था। तब ही आसिया ने मूसा को फिरऔन के पास भेज दिया। मूसा फिरऔन की गोद में खेलने लगे फिरऔन ने दरबारियों से कहा मैं तुम्हे रिज्क देता हूं मैं चाहू तो तुम्हारा रिज्क बंद कर दू मैं तुम्हे मौत दे सकता हूं और मैं चहुँ तो तुम्हे ज़िन्दगी भी दे सकता हूं जो खुदा कर सकता है वह मैं भी कर सकता हूं तो मैं इस तरहा तुम्हारा खुदा ही तो हूं। यह कहना भर था की गोद में खेलते हुए मूसा ने फिरऔन के मूह पर अपने नन्हे हाथों से तमाचा मार दिया। फिरऔन गुस्से में आगया और कहा आसिया मैंने कहा था के येही मेरा दुश्मन है। इसने मुझे तमाचा मारा है। आसिया ने कहा आप भी खा-म-खा शक

खाते हैं अरे बच्चा है ऐसे ही हाथ लग गया होगा। लेकिन फिरऔन न माना उसने कहा इसे अपने बच्चे होने का सबूत देना होगा। आसिया ने कहा आप इस बच्चे से सबूत मांग रहे हैं। फिरऔन ने कहा हां तुम देखो अभी फैसला हुआ जाता है। इसके साथ ही फिरऔन ने गुलामो को हुकुम दिया के देहाकते हुए अंगारे लाओ और याकूत लाओ। गुलाम ने हुकुम की तामील की। फिर फिरऔन ने दोनों चीजो को अलग अलग रखा और मूसा को छोड़ दिया। आप जमीन पर घुटनों के बल रखी हुई चीज़ों की तरफ बढ़े और अपने हाथ को याकूत की तरफ बढाने ही वाले थे के अल्लाह ने फ़रिश्ते को भेजा और फ़रिश्ते ने मूसा का हाथ याकूत से हटाकर अंगारे पर रख दिया। आपने अंगारा उठाया और जब हथेली जली तो अंगारे को मूह में रख लिया। तो आपका मूह भी जल गया । हथेली जली तो **"बैदे जुदा"** का मोजिज़ा मिला मूह जल तो **"कलीमउल्लाह"** का लकब मिला। फिरऔन को तसल्ली हो गई की हां यह एक आम बच्चा ही है। जो आग की तरफ ही मुतवज्जो हुआ और अंगारे को मुह में रखा, नहीं तो याकूत पर अपना हाथ रखता। इस तरहा मूसा (अ.स) फिरऔन के दरबार में बड़े हुए. जब मूसा (अ.स) की उम्र १३ बरस हुई तो आपने फिरऔन से कहा तुम खुदा नहीं हो इस पर दोनों में काफी नोक झोक हुई और मूसा (अ.स) तैश में आ गए लेकिन उसी वक्त आसिया बीच में हायल हो गई और मूसा (अ.स) को अपने पीछे कर लिया। इसी बीच फिरऔन ने कहा अगर यह मेरा बीटा न होता तो मैं अभी इसी वक्त इसे कतल कर डालता। आसिया ने कहा आप तो कमाल करते हैं बच्चे से क्या इस तरहा पेश

आया जाता है ? । यह उम्र है ही ऐसी बच्चे इसमें इस तरहा के सवाल जवाब किया करते हैं।

आसिया मूसा (अ.स) को अपने हरम में ले जाती है और उन्हें समझाती है बेटा बाप से इस तरहा की बाते नहीं करते। लेकिन आपने कहा की फिरऔन खुदा नहीं है हमारा खुदा तो हर चीज़ पर कादिर है यह सूरज और यह चाँद सब उसके इशारे पर चलते हैं, वह जिसे चाहे जिंदगी दे जिसे चाहे मौत। क्या फिरऔन एक मक्खी को मार कर जिंदा कर सकता है ? कभी नहीं। लेकिन यह मेरे खुदा के लिए बहुत आसान है। आसिया समझ गई यह वही अल्लाह का भेजा हुआ नुमैन्दा है जिसको फिरऔन ने ख़तम करने के लिए क्या-क्या नहीं किया लेकिन उसके घर में ही पलता रहा। आसिया ने कहा बेटा मैं तुम पर और तुम्हारी परवरदिगार पर ईमान लाती हैं। इस तरहा हिजकल्ल के बाद ईमान लाने वाली आप दूसरी शकशियत थी। फिर आपने कहा " या अल्लाह मुझे फिरऔन के शर से बचा और मेरे ईमान की हिफाजत फरमा, हमे ईमान वालो में शामिल कर"। आज से मूसा (अ.स) की हिफाजत अब खुद ही करती रात-रात में उठना और निघ्रानी करना की कहीं चुपके से फिरऔन आपका कतल न कर दे। आप हर वक्त फिकरमंद रहती थी और कोशिश करती की मूसा (अ.स) आपकी निगाहों के सामने ही रहे।

इस तरहा आप अपनी उम्र के १६ वें सावन में दाखिल हुए और एक दिन अपने महल से बहार निकल कर गश्त कर रहे थे। आपने देखा एक किब्ती कौम का शक्श एक बनि

इसराइल के शक्श को बुरी तरहासे पीट रहा है। आपने दोनों को अलग करने की कोशिश की लेकिन किब्ती शक्श अपनी हरकत से बाज ना आया। तो आपने उसे छुड़ाने के लिए एक जोरदार घूसा मारा। लेकिन यह घूसा इतना जोरदार था की किब्ती की मौत हो गई। आप फ़ौरन वहां से भाग कर अपने महल में दाखिल हो गए और आसिया के पास जाकर बैठ गए। आसिया ने पूछा कोई परेशानी की बात पेश आई ? आपने कहा नहीं युहीं बस।

अब आसिया का जो शक दाई पर था उसे यकीन में बदलना था। लिहाजा मूसा को दूध पिलाने वाली दाई से आप खुफिया तौर पर मिली और उसे पूरे एतेमाद में लेकर पूरा राज़ मालूम कर लिया। लिहाजा मूसा (अ.स) अपने घर पर भी गए और अपने भाई बहिन से भी मुलाकात की। लेकिन यह सब खुफिया तौर पर चलता रहा इस तरहा मूसा (आस.) को यह मालूम हो गया के हारून आपके भाई है। लेकिन फिरऔन को कानो कान खबर नहीं हुई। इस तरहा आप अपनी जिंदगी को बिताते रहे और अपने खुदा को तलाश करते रहे। एक बार फिर अप महल के बहार घूमने निकले तो वही बनि इसराइल का शक्श किसी किब्ती से झगडा कर रहा है मूसा (अ.स) इसके पास जाकर बोले क्या तुम्हारा काम झगडा करना ही है। अब क्युकी यह जान चूका था के मूसा तो बड़ा ताकत वर है लिहाजा इसने किब्ती को छोड़ दिया और घबरा कर बोला। क्या आप मुझे भी उसी तरहा ख़त्म कर देंगे जैसे पहले आप किब्ती को ख़त्म कर चुके हैं ?। किब्ती ने जब यह सुना के पहले किब्ती की मौत के जिम्मेदार मूसा ही हैं तो वहां से

भाग कर हुकूमत में कारिंदों से मिला और बताया मूसा ही कातिल है। लिहाजा फिरऔन ने हुकुम जारी कर दिया के मूसा को भी कतल करदो। शहर में यह बात आग की तरहा फ़ैल गई। जैसे ही "हारून" को यह खबर लगी तो आप दौड़ते भागते मूसा तक पहुंचे और कहा मेरे भाई तुम इसी वक्त शहर छोड़कर मदियन की तरफ रवाना हो जाओ। क्युकी फिरऔन ने तुम्हे कतल कर देने का शाही हुकुम जारी कर दिया है। चुनांचे मूसा (अ.स) उसी हालत में मिस्र को छोड़कर मदियन की तरफ रवाना हो गए। इस तरहा मुसल सल कई दिनों तक आप चलते रहे बिना कुछ खाए पिए और आखिर कार मदियन शहर पहुंच गए और एक कुए के पास जहां एक बड़ा पेड़ भी था वहां रुके कुए की डोल से पानी निकाला कुछ तो पिया और कुछ से अपना मूह वगैरह धोया और पेड़ टेका लगा कर आराम करने लगे।

कुछ देर बाद आपने देखा के चरवाहे अपनी भेड़ बकरियों को पानी पिला रहे हैं। लेकिन दो लड़कियां बिलकुल पीछे खाड़ी हैं और उनके साथ भी जानवर मौजूद है आप से रहा न गया। आपने पूछा तुम लोग पीछे क्यों खाड़ी हो तुम भी अपने जानवरों को पानी पिलाओ। लडकियों ने कहा हम एक तो कमजोर हैं और दूसरी बात यह है की हमे सबसे आखिर में ही पानी पिलाने की इज़ाज़त है। आपको इनपर बड़ा तरस आया और आगे बढ़कर डोल को कुए में उतारा। और दो डोल ही लडकियों के जानवरों लिए काफी थे। लडकिय ख़ुशी-ख़ुशी ओने घर पहुंची तो बाप ने पूछा के तुम लोग अज बहुत जल्दी वापस आ गई। लडकियों ने कहा अब्बाजान आज हमारी मदद एक

निहायत नेक इंसान ने की वह इतना ताकत वर था की जिस डोल को खीचने में चार चार लोग लगते हैं, उसने अकेले ही डोल से पानी निकाला और हमारे जानवरों को पिलाया और हमसे कोई मजदूरी भी नहीं ली। अब्बाजान हमे एक गुलाम की जरूरत भी है तो क्यों न आप उसे ही रख ले। लडकियों के बाप ने कहा ठीक है जाकर उसे हमारे पास ले आओ। लडकियों को बड़ी ख़ुशी हुई और फ़ौरन मूसा (अ.स) को लेने के लिए चल पड़ी।

इधर आप कुए के पास अकेले बैठे थे और कई दिन से आप भूखे थे तो अपने परवरदिगार से कहने लगे " या खुदा मुझे मेरा रिज्क भेज दे " तब ही उन्हों ने (मूसा अ.स) ने देखा वही लडकिय उनके पास खड़ी है। मूसा (आ.स) ने पूछा अब क्या काम है ?। लडकियों ने कहा आपको मेरे वालिद ने याद किया है, वह आपको काम पर रखना चाहते हैं। आपने कुछ पल सोचा और दिल में कहा " शायद मेरे रब ने यही मेरे वास्ते रिज्क उतार है "। आपने लडकियों से कहा ठीक है चलता हूं, यह कहकर लडकिय आगे-आगे चल रही थी और आप पीछे-पीछे। लेकिन अचानक तेज़ हवाएं चलने लगी जिससे की लडकियों की शर्म की जगह दिखती थी। लिहाजा आपने तेज़ कदम बढ़ाये और लडकियों के आगे होते हुए कहा मुझे दाए बाए के बारे में बताती जान लडकियों पर इस बात का भी बहुत असर हुआ। अब मूसा (अ.स) लडकियों के घर में दाखिल हो गए तो आपने देखा की एक बुजुर्ग शक्श अन्दर बैठे हैं जिन्हें ठीक से दीखता भी नहीं। लिहाजा आप आगे बढे सलाम किया और कहा मेरा नाम मूसा है, में

फिरऔन से अपनी जान बचाकर आपके पास हाजिर हूं। अब बुजुर्ग हस्ती की बारी थी आपने कहा मेरा नाम शोएब है और मेरी दो बेटियां हैं जो तुम्हारे सामने खाड़ी है। लडकियों ने कहा अब्बाजान आप इन्हें क्या देंगे क्युकी यह ताकतवर होने के साथ अच्छी नियत भी रखते हैं और एक रहम दिल इंसान भी है। शोएब (अ.स) ने कहा ठीक है पहले इन्हें खाना वगैरह खिलाओ और आराम करने दो फिर कल सुबह बात करेंगे। इस तरहा अल्लाह पाक ने रिज्क पहुँचाया। सुबह होने पर शोएब (अ.स) ने कहा, ए मूसा तुम्हारा काम है हमारे जानवरों को चराना, पानी पिलाना इसके एवज़ में तुम्हे यहां रहने के लिए घर और तीन जून खाना मिलेगा। मूसा (अ.स) ने कहा मंजूर है। इस तरहा आप अपने काम में जी जान से लग गए इस दौरान शोएब (अ.स) के जानवर तंदुरस्त और उनकी तादाद भी बढ़ने लगी। एक बार मूसा (अ.स) ने कहा की अक्सर जानवर भटक ने लगते है तो इन्हें काबू में करने के लिए कोई असा (लकड़ी का डंडा) वगैरह दे-दें तो बेहतर होगा। चुनांचे शोएब (अ.स) ने कहा ठीक है, मैं तुम्हे दिए देता हूं। यह कहकर आपने अपनी बेटी को बुलाते हुए कहा बेटी सफुरा अन्दर से एक असा तो लेकर आना, सफुरा अन्दर गई और एक असा ले आई और शोएब (अ.स) को दे दिया आपने कहा बेटी यह नहीं दूसरा असा ले आओ। दूसरी बार सफुरा फिर अन्दर गई इस असा को रख कर दूसरा असा उठाने लगी। फिर असा उठाकर अपने वालिद को दिया, शोएब (अ.स) ने कहा बेटी तुम तो फिर वही असा ले आई इसको रख कर दूसरा असा ले आओ। चुनांचे सफुरा तीसरी बार फिर अन्दर गई और असा लाकर शोएब (अ.स) को दिया आपने काहा बेटी तुम्हे क्या हो गया है। तुम बार

बार येही असा लेकर क्यों आती हो, सफुरा ने कहा अब्बाजान मैं क्या करू मैं जब भी अन्दर जाती हूं। यह असा खुदा बा खुदा मेरे सामने आ खड़ा होता है और मैं ले आती हूं। शोएब (अस.) समझ गए के यह असा मूसा के लिए ही है। चुनांचे आपने मूसा (अ.स) से कहा, ए मूसा यह आसमानी असा है वक्त पड़ने पर तुम इससे पत्ते तोड़ सकते हो, वक्त पड़ने पर इसके सहारे सो सकते हो और वक्त पड़ने पर तुम्हारे लिए इसी असा से मेवे वगैरह मिल जायेंगे ताकि तुम्हारी भूख मिट सके। अल्लाह का हुकुम येही है की यह तुम्हे मैं सौंप दूं इसे सम्भाल कर रखना।

नोट :- अल्लाह ताला ने यह असा (छड़ी) आदम (अ.स) को दिया था उसके बाद यह असा हज़रत इबराहीम तक पहुंचा उसके बाद यह असा हज़रत शोएब (अ.स) तक पहुंचा और अब यह असा हज़रत मूसा (अ.स) तक पहुंच गया।

असा देने के बाद शोएब (अ.स) ने मूसा (अ.स) से कहा " मैं तुम्हारी शादी अपनी बेटी सफूरा से करना चाहता हूं और मेहर की शक्ल में तुम्हे ८ साल तक मेरे साथ रहना होगा और २ साल अगर चाहते हो तो अपनी मरजी से और रह सकते हो "। इस तरहा मूसा (अ.स) का निकाह सफूरा से हो गया और ८ साल तक आप मदियन में ही रहे फिर आपने शोएब (अ.स) से रुकसत होने की इज़ाज़त मांगी, शोएब (अ.स) ने आपको कुछ बकरियां दी और छोटी बेटी को भी साथ कर दिया क्युकी सफूरा हमल से थी।

मूसा (अ.स) अपनी बीवी और साली और कुछ बकरियों के साथ अपने वतन को रवाना हो गए ३ दिन और ३ रात चलने के बाद आप लोग "सीना" की वादियों में पहुंचे, सर्दी का वक्त था और सफूरा को आग की ज़रूरत थी। अचानक मूसा (अ.स) को दूर " तूर " (पहाड़ी का नाम) से एक आग जलती नज़र आई। आपने अपने एहलो अवाल से कहा के तुम लोग यहीं ठहरो मुझे एक आग दिखाई दे रही है शायद वह तुम लोगो के तापने के काम आए। यह कहकर आप उस आग की तरफ बढ़ने लगे आपने देखा की यह आग एक पेड़ से निकल रही है। इस लिए आप उसके नज़दीक पहुंचे, तो यह पेड़ पीछे हट गया फिर और पेड़ के करीब गए पेड़ और पीछे हट गया अब आपको डर लगने लगा इस लिए आप पीछे पलते और तेज़ भागे। तो यह पेड़ आपके और नज़दीक आ गया इसी दरमियान मशियत से एक आवाज़ गूंज़ी " ए मूसा मैं तुम्हारा खुदा हूं तुम्हे खौफ खाने की ज़रूरत नहीं ठहर जाओ "। इस लिए मूसा (अ.स) रूक कर आवाज को गौर से सुनने लगे अल्लाह ने कहा ए मूसा यह तुबा का पाक मैदान है फिर अल्लाह ने मूसा (अ.स) से कहा के ए मूसा तेरे हाथ में यह क्या है ? मूसा ने दबी आवाज़ से कहा यह मेरा असा है मैं इससे बकरियों को हाकता हूं और पत्ते तोड़ता हूं अल्लाह ने हुकुम दिया ए मूसा तू इस असा को ज़मीन पर छोड़ दे। चुनांचे मूसा ने असा ज़मीन पर डाल दिया। जैसे ही ज़मीन पर असा गिरा तो असा सांप बन गया। अल्लाह ने हुकुम दिया ए मूसा पकड़ लो इसे, तो मूसा डरे अल्लाह ने हुकुम्क दिया डरो मत उठाओ चुनांचे जैसे ही हाथ में लिया सांप फिर से असा बन गया। अल्लाह ने कहा ए

मूसा अपना दाहिना हाथ गिरेबान में डालो। चुनांचे मूसा ने ऐसा ही किया अब अल्लाह ने हुकुम दिया निकालो, मूसा ने ऐसा ही किया लेकिन अब आप के हाथ से एक नूर निकल रहा था मूसा (अ.स) हैरत में के यह क्या हो रहा है ?।

अल्लाह ने कहा ए मूसा मैं तुम्हे इसके अलावा ७ और निशानिय देता हूं और यह तुम्हारे रसूल होने की निशानिया है, तुम यह सब लेकर फिरऔन के दरबार में जाओ क्युकी उसने बनि इसराइल पर बहुत ज़ुल्म और सितम ढा रखे हैं। तुम उससे कहो के मुझे खुदा ने पैगम्बर बनाकर भेजा है और सिर्फ अल्लाह की ही इबादत करो और कोई इबादत के लायक नहीं, वही तुम्हे ज़िन्दगी देता है और वही तुम्हे मौत देगा। मूसा (अ.स) ने अल्लाह का हुकुम सुनने के बाद कहा या अल्लाह तू मेरे भाई हारून को मेरी मदद के लिए मेरे साथ भेज दे और मेरी जुबान की गिरह खोल दे, मेरा सीना खोल दे, और मेरा काम आसान कर दे। अल्लाह पाक ने मूसा (अ.स) की दुआ कबूल फरमाई। आप तुबा से लौट कर अपने घर वालो के बीच वापस लौट गए और उन्हें वापस मदियन जाने को कहा। चुनांचे आपके एहलो अवाल मदियन को रवाना हो गया।

अब मूसा (अ.स) अल्लाह पाक के दिए हुए नौ मौजिजो के साथ मिस्र में दाखिल हुए ही थे के, आपने देखा आपके भाई हारून उनको देख कर मुस्कुरा रहे हैं। अपने भाई से मिलकर आप बहुत खुश हुए अब दोनों भाई साथ साथ फिरऔन के दरबार में हाज़िर हुए और फिरऔन को मुखातिब करते हुए कहा मुझे अल्लाह ने पैगम्बर बनाकर भेजा है और मुझे निशानिया दी हैं, देखो मेरा दाहिना हाथ। फिरऔन ने गौर से हाथ को देखा।

फिर अपने (मूसा (अ.स)) हाथ में मौजूद असा को जमीन पर फेका, तो उसने एक खौफनाक अजदहे की शक्ल इख्तियार कर ली और फिरऔन की तरफ लपका, इससे फिरऔन और सभी मौजूद लोगो में डर छा गया। फिरऔन का वजीर जिसका नाम हमान था उसने फिरऔन को मशवरा दिया के इन दोनों को कुछ मत कहिये हम अपने शहर के सभी नामवर जादूगारो को इकट्ठा करते हैं और उनका मुकाबला इन दोनों से करवाते हैं। चुनांचे जो जीत जाए वही हम सबका खुदा।

इस मुकाबले के लिए एक दिन और एक खुला मैदान तै हो गया। फिरऔन ने शहर में ऐलान करवा दिया के जितने भी शहर के जादूगर हैं सबको मूसा और हारून के खुदा से मुकाबला करना है और जीत जाने पर जादूगरों को बड़े से बड़ा इनाम दिया जाएगा। इस तरहा कुछ दिनों तक फिरऔन और उसकी हुकूमत के लोगो ने खूब मशक्कत की बड़े बड़े जादूगर फिरऔन के पास आते और अपने फन से फिरऔन को खश करते। फिरऔन को अब भरोसा हो गया की मूसा और हारून के खुदाई फन फिरऔन के जादूगर के सामने नहीं टिक सकेंगे।

चुने हुए मैदान में फिरऔन ने चालाकी से ऐसा कर दिया के जादूगरों की जीत हो जाए और मूसा और हारून को शिकस्त मिले। पूरा शहर मैदान के चारो तरफ जमा हो गया एक तरफ फिरऔन और उकसे दरबारी और बड़े बड़े जादूगर, दूसरी तरफ खुदा के भेजे हुए पैगम्बर। फिरऔन के जादूगरों के हाथो में रससिया मौजूद थी, इन लोगो ने मूसा से कहा के तैयार हो जाओ। यह कहकर सभी मौजूद जादूगरों ने अपने हाथो की रस्सियों

को एक साथ मैदान में फेक दिया और वह सभी सांप बन गए। यह देख कर फिरऔन बहुत खुश हुआ। उसी वक्त खुदा के पास से मूसा (अ.स) पर वही आई "के ए मूसा अपना असा जमीन पर फेक दो"। मूसा (अ.स) ने ऐसा ही किया, असा को जमीन पर फेकते ही वह एक लाल आँखों वाला अजदाहा बन गया और देखते ही देखते सभी सांपो को निगल गया। खुदा के हुकुम से मूसा (अ.स) ने अजदहे को उठा लिया और वह फिर असा बनगया। यह देख कर सारे जादूगर बहुत हैरत जदा हो गए और सभी जादूगर मूसा (अ.स) के कदमो में गिर पड़े और कहा हम ईमान लाये मूसा और हारून के खुदा पर। फिरऔन ने जब यह देखा तो उसने कहा यह सभी जादूगर मूसा और हारून के ही आदमी थे, लिहाजा हम इनको सजा के तौर पर इनका बायाँ हाथ और दाहिना पैर काटेंगे।

पूरे शहर में फिरऔन ने कहा के मूसा और हारून मुल्क पर हुकूमत करने के लिए ऐसे कम को अंजाम दे रहे हैं। इस मुकाबले के बाद दोनों भाई अवाम को सिरातल मुस्तकीम पर चलने की तबलीग करते रहे। जिससे ईमान वालो की तादाद भी बढती गई। लेकिन साथ में फिरऔन के जुल्म भी जारी थे। मूसा (अ.स) ने बद-दुआ की के मिस्र में बारिश न हो और अल्लाह पाक ने ऐसा ही किया। अब फिरऔन की हुकूमत में अफरा तफरी का माहौल बन गया लोग भूके मरने लगे। आखिर कार फिरऔन ने मूसा (अ.स) से कहा के आप दुआ कर दीजिये के मुल्क में बारिश हो जाए अगर बारिश हो जाएगी तो हम ईमान ले आयेंगे। लिहाजा मूसा (अ.स) ने बारिश की दुआ की और

अल्लाह ने कबूल कर ली। लेकिन फिरऔन मुकर गया (पलट गया), एक दिन फिरऔन ने अपने वजीर हमान को हुकुम दिया के एक बहुत बुलंद मीनार बनाओ जिसमे चड़ने के लिए सीडिया भी हो और आसमान के करीब भी पहुंचे। यह मीनार कई सालो तक बनती रही और आखिर कार यह मीनार तैयार भी हो गई। फिरऔन ने कहा आज मैं मूसा के खुदा को मार डालूँगा यह कह कर उसने तीर और धनुष लेकर मीनार पर पहुंच कर आसमान की तरफ निशान लगाया। तीर आसमान में गायब हो गया और कुछ देर बाद तीर वापस मीनार पर गिर पड़ा तीर का फल खून से सना था। फिरऔन बहुत खुश की मैंने खुदा को मार गिराया।

फिरऔन बनि इसराइल पर ज़ुल्म करता रहा। मूसा (अ.स) ने अपने मौजिजे दिखाना शुरू किये आप ने दीमग पैदा करदी, जिधर देखो दीमग ही दीमग किब्ती आजिज़ हो गए। फिर मूसा (अ.स) से दुआ की गुजारिश की आपने अल्लाह से दुआ की और मुसीबत से छुटकारा मिला। फिर भी यह इमान नहीं लाये लेकिन मूसा (अ.स) पर ईमान लाने वालो की तादाद बढती रही।

आप (मूसा अ.स) अल्लाह से सलाम करने कोहे तूर पर जाया करते थे। एक बार आपने अल्लाह से कहा क्या मुझसे भी जादा कोई आपको मोहब्बत करता है ?। अल्लाह ने जवाब दिया ए मूसा तुम इसे मालूम करने के लिए सीना की वादियों में जाओ और हमारे बन्दे से मिलो तुम्हारे सवाल का जवाब जरूर मिलेगा। बस फिर क्या था मूसा (अ.स) सीना की वादियों में पहुंचे और देखा अल्लाह की इबादत में एक बंदा

मशगूल है। आप वहां काफी देर खड़े रहे। जब उस शक्श ने सर घुमाया तो देखा के मूसा खड़े हैं। इस शक्श ने मूसा (अ.स) से कहा आपको अल्लाह पाक ने मेरे पास भेजा है। मूसा (अ.स) ने दिल में सोचा की यह बात तो सिर्फ मेरे और खुदा के बीच हुई थी इनको कैसे मालूम पड़ा के अल्लाह ने मुझे इनके पास भेजा है। इसका मतलब साफ़ है के अल्लाह से यह मुझसे ज्यादा मोहब्बत करते हैं। इस तरहा मूसा (अ.स) को अल्लाह ने जवाब दे दिया मूसा (अ.स) इस शक्श से मिलकर बहुत खुश हुए। उसी वक्त इस शक्श ने मूसा(अ.स) से कहा ए मूसा मेरे तश्त में पानी ख़तम हो चूका है, लिहाज़ा आप मुझे पानी ला दे। मूसा (अ.स) ने कहा क्यों नहीं यह कह कर आपने तश्त लिया और पानी भरने के इरादे से निकल पड़े। काफी दूर जाने के बाद आपको पानी मिला आपने तश्त पानी से भरा और लौट कर उसी जगह पर पहुंचे। लेकिन जो मंजर मूसा (अ.स) ने देखा तो होश उड़ गए। आपने देखा जिस शक्श की मोहब्बत अल्लाह को बेहद पसंद है और जो खुदा को मुझसे जादा मोहब्बत करता है उसे कुत्ते नॉच-नॉच कर खा रहे हैं। मूसा (अ.स) के मूह से निकला या खुदा यह में क्या देख रहा हूं अल्लाह की वही आई "ए मूसा जो तुमने देखा बिलकुल सही है इस शक्श को ५० साल से हमने इसी जगह पर बैठे-बैठे हर चीज़ मुहैया कराइ और यह आज तुमसे मांग बैठा मैं कभी यह बर्दाश्त नहीं करता"। मूसा (अ.स) ने अपना तबलीगी काम जारी रखा और फिरऔन भी आप और आपकी उम्मत को परेशान करता रहा। एक बार किब्तियो को अल्लाह पाक ने मेंढको के जरिये आजाब भेजा जिधर देखो मेंढक ही

मेंढक (फ्रॉग) किब्ती हार कर फिर मूसा (अ.स) के पास गए और आपसे दरखास्त की आप दुआ करके इस अज़ाब से निजात दिला दे। चुनांचे फिर आपने अल्लाह से दुआ की और अज़ाब टल गया लेकिन बाद में फिर यह गुमराह हो गए।

एक बार अल्लाह पाक ने पूरे पानी को खून कर दिया किब्ती परेशान अब क्या करे, क्युकी वही बनि इसराइल के लिए पानी और जब फिरऔन की कौम के हाथ लगे तो खून। इस तरहा जब इनसे प्यास बर्दास्त नहीं हुई तो बनि इसराईलियो से कहने लगे। आप अपने मूह की कुल्ली मेरे मूह में डाल दें ताकि हलक तो तर हो जाए। चुनांचे बनि इसराइल के लोगो ने इनपर तरस खाया और उनकी बात मान कर ऐसा ही किया। लेकिन यह क्या जैसे ही बनि इसराइल के मूह की कुल्ली किब्तियो के मूह में पहुंची ही थी के यह पानी की कुल्ली खून में तब्दील हो गई। फिर यह लोग मूसा (अ.स) के पास पहुंचे और अज़ाब को ख़तम करने के लिए रोते थे और कहते थे के अब हम ईमान ले आएंगे। लेकिन जहां अजाब टला यह लोग अपने वादों से मुकर जाते। इस तरहा हर बार इन्हें नए-नए तरहा के अज़ाब अल्लाह ने इनपर नाजिल किये। लेकिन यह कौमे फिरऔन ना सुधरी। आखिर में फिरऔन ने एक आखरी चाल चली उसने अपनी फ़ौज से कहा के कल सुबह होने के पहले ही बनि इसराइल के साथ-साथ मूसा और हारून को भी ख़तम कर देंगे। लिहाजा इन लोगो ने हमले की तैयारी शुरू की और इधर अल्लाह ने मूसा (अ.स) को हुकुम दिया के किसि भी तरहा अपनी कौम को लेकर नील नदी के किनारे पहुंच जाओ। चुनांचे मूसा (अ.स) सबको लेकर नील नदी के किनारे पहुंच गए

। इधर फिरऔन के काफिले हमले के इरादे से बनि इसराइल की बस्ती में घुसे, तो उन्हें एक भी शक्श नहीं मिला। फिरऔन ने कहा पीछा करो आज इन्हें नहीं छोड़ना है। बनि इसराइल को खबर लगी के फिरऔन की फ़ौज बहुत जल्द यहां पहुंचने वाली है और आगे भागने का रास्ता भी नहीं है। अब तो हम सब मारे जायेंगे मूसा (अ.स) ने कहा तुम लोग घबराओ नहीं अल्लाह की मदद पहुंचने वाली है और अगले ही पल अल्लाह ने मूसा (अ.स) को हुकुम दिया के अपना असा इस नदी में मारो जिससे तुमको नदी में ही रास्ता मिल जाएगा। और जैसे ही आपने असा मारा पानी के बीच एक रास्ता बन गया और फ़ौरन आपने सबको अन्दर जाने को कहा। चुनांचे पूरी की पूरी उम्मत नील नदी के बीच से गुजरने लगी। मूसा (अ.स) और हारून सबसे पीछे चलने वालो में से थे। उसी वक्त आपने देखा की फिरऔन अपने लश्कर के साथ इसी रास्ते पर आ रहा है। आपने सब्र रखा और आप भी नदी से बहार निकल कर किनारे पर खड़े हो गए और फिरऔन के लश्कर को गौर से देख रहे थे। इधर बनि इसराइल में चीख पुकार मची के अब हम सब मारे जायेंगे। लेकिन मूसा (अ.स) से मदद मांगते रहे जब फिरऔन का लश्कर नदी के बीचो बीच आ गया तो अल्लाह पाक ने कहा ए मूसा अपना असा पानी में मारो और जैसे ही मूसा (अ.स) ने असा पानी में दोबारा मारा नदी के दोनों तरफ से लहरें उठी और फिरऔन के पूरे लश्कर को निगल गई। लेकिन अल्लाह ने पानी को हुकुम दिया के फिरऔन की लाश को डूबने न देना चुनांचे फिरऔन की लाश नदी के किनारे आ गई जो की आज भी मिस्र के म्युसियम में राखी है।

इस तरहा मूसा (अ.स) और हारून (अ.स) पूरी बनि इसराइल की कौम को हिफाजत के साथ इस जगह पर लेकर रहने लगे। यह जगह पूरी तरहा से सुन-सान थी ना कोई आबादी न किसी तरहा की पैदा वार। यह एक और परेशानी की बात थी जीना है तो जीने का सामान भी चाहिए और सबसे एहम था की पेट की आग को बुझाना। तो सभी बनि इसराइल वालो ने मूसा (अ.स) से कहा के ए मूसा हमारे लिए खुदा से रिज्क मांगो आपने कहा सब्र रखो वही हम सबका रिज्क मुहैया करवायेगा। चुनांचे मूसा (अ.स) ने बारगाहे इलाही में हाथ उठाकर दुआ शुरू ही की थी के आसमान से भुनी हुई तीतर और बटेरो के खाने उतरने लगे। यह मौजिज़ा देख कर बनि इसराइल सजदे में गिर पड़े। इस तरहा अल्लाह ने उनका रिज्क पैदा कर दिया। इस तरहा काफी वक्त गुजर गया तो एक दिन मूसा की कौम ने कहा ए मूसा हम लोग हर दिन और हर रात तीतर और बटेर खा-खा कर ऊब गए। हमारा दिल अब अंता (गेहूं) खाने को कह रहा है। मूसा ने कहा तो जाओ शहर में दाखिल हो जाओ और हुकूमत से अपना हक़ मांगो। कौम ने कहा हम वहां नहीं जायेंगे, वहां तो बड़े-बड़े जालिम है। हो सकता है हमे देखते ही कतल करदे। तब मूसा (अ.स) ने कहा फिर तुम्हारा रिज्क यही है। इस तरहा कई बार मूसा (अ.स) ने इन्हें शहर में जाने की बात कही लेकिन यह इनकार करते रहे और येही जवाब देते आप शहर में दाखिल हो। आखिर कार मूसा (अ.स) ने अपने भाई हारून (अ.स) को लिया और शहर में दाखिल हो गए और अल्लाह की तबलीग करते रहे। लेकिन अब आपके लिए काफी आसानी थी ईमान वालो की तादाद काफी तेज़ी से बढ़ रही थी हुकूमत में मूसा (अ.स) का खौफ छा चूका था। लेकिन बनि इसराइल कौम ने किब्ती

कौम के मरे हुए जिस्मो पर लदे जेवर को उनके जिस्मो से नोचा औलाशो को सड़ने दिया। आपने मरे जिस्मो को दफ़न करवाया और हुकूमत में तबदीली की और एक नेक इंसान को हुकुम राह बनाया। इस दरमियान हुकूमत काफी मजबूत और ताकत वर हो गई अब आप खुले आम तकरिरे करते, जिसे सुनने के लिए पूरी कौम उमड़ पड़ती और लोग आपकी हिदायतों पर अमल करते।

अल्लाह से तूर पहाड़ पर आप बात किया करते थे। एक दिन आपने अल्लाह पाक से कहा या अल्लाह पिछले कई सालो से आप हमे अपनी आवाज में रू-बरू करवाते आ रहे हैं। आज हमारी तमन्ना है के हम आपकी शकल भी देखे अल्लाह पाक ने कहा ए मूसा यह मुमकिन नहीं मूसा (अ.स) ने कहा एक बार अपनी झलक दिखा दें। अल्लाह ने कहा ठीक है अगर तुम जिद करते हो तो उस पहाड़ पर मैं अपने नूर की हलकी सी झलक दिखाता हूं, तुम उस पहाड़ को देखो। और जैसे ही अल्लाह पाक ने अपने नूर का जररा डाला मूसा (अ.स) गश (बेहोश) खा गये और पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो गया क्युकी पहाड़ में इतनी ताब नहीं के अल्लाह पाक के नूर को बर्दाश्त कर सके। जब मूसा को होश आया तो आपने अल्लाह पाक से माफ़ी मांगी और कहा तू सच्चा है तू पाक है।

अल्लाह पाक ने कहा ए मूसा तुझे ३० राते तूर पर गुजारनी है। जाने से पहले मूसा (अ.स) ने अपना जानशीन अपने भाई हारून को बनाया और कहा जब तक मैं वापस न आऊ तुम मेरी कौम के निगेहबान हो इनको आपस में जोड़कर रखना किसी भी तरहा

का भेद पैदा न होने देना इनको दीन से भटक ने ना देना। यह हिदायत देने के बाद आप अपनी कौम को अलविदा कहकर कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए। अल्लाह ताला ने आपको दीन के लिए दीन पर चलने वालो के लिए तखतियो पर आयते लिखवाई ताके इंसान के जीने का तौर तरीका समझ में आए के अल्लाह अपने बन्दे से क्या चाहता है। इस तरहा अल्लाह पाक आपको तौरेत से नवाज़ रहे थे।

इधर हज़रत हारून (अ.स) मूसा (अ.स) की उम्मत को एक जुट करने में जुटे थे और मूसा (अ.स) की वापसी की राह देख रहे थे। जब मूसा (अ.स) ३० वे दिन वापस नहीं आए तो कौम के लोग बहुत परेशान होने लगे और जो-जो दिन बीते कौम का हाल बुरा, के अब क्या करू। इसी का फायदा उठाने के लिए शैतान सामरी पहुंच गया और मूसा की कौम को गुमराह करने लगा। सामरी का कहना था के मूसा अब नहीं आएंगे क्युकी तुम लोगो से इश्वर खफा है, क्युकी जो तुमने किब्तियो के जेवर वगैरह लूटे हैं। लिहाजा तुम वह सब मेरे पास जमा करो तो शायद इश्वर खुश हो जाए। चुनांचे सभी लोगो ने चांदी और सोने के जेवर सामरी के हवाले कर दिए। सामरी ने इन जेवरो को गला कर एक बछडा बनाया और कहा इसकी पूजा करो तो इश्वर खुश हो कर मूसा को भेज देगा। इस तरहा सामरी ने लोगो को बछडे की पूजा में लगा दिया। हारून (अ.स) ने कौम को बहुत रोका लेकिन आपकी किसी ने एक न सुनी। सामरी अपनी कामयाबी पर बहुत खुश था के मैंने मूसा की कौम को बेहका दिया।

मूसा (अ.स) ५० दिन पूरे करने के बाद तौरेत की तखतियो को बगल में दबाकर अपनी कौम की तरफ वापस आए। लेकिन जब आपने देखा कौम तो गुमराह हो गई है और बछडे की पूजा कर रही है। गुस्से में भरकर तख्तिया एक तरफ राखी और अपने भाई हारून के सर के बाल खीच कर कहा क्या तुमको हमने यह काम सौंपा था। के कौम बुतों की पूजा करे तब हारून ने कहा मेरे लाडले भाई मैंने इन्हें बहुत समझाया लेकिन यह मेरी बात पर तवज्जो नहीं देते थे। यह सब सामरी का किया धराया है। तब मूसा (अ.स) ने सामरी को पुकारा। सामरी हाजिर हो कर बोला मेरा इसमें क्या कसूर यह तो इनका ही कसूर है जो मेरी बातो पर अमल कर बैठे। मूसा (अ.स) ने कहा जा सामरी तू बे औलाद होगा यह कहने के साथ ही बछड़े को समुन्दर में फेक दिया। बनि इसराइल को अपनी गलती का एहसास हो गया और मूसा (अ.स) को तौरेत की आयातों को अपने दिलो में उतारने लगे और उसपर अमल भी करने लगे।

अल्लाह ने तौरेत में फ़रमाया की जकात दो अपने माल और असबाब की। तो मूसा (अ.स) ने इसे लागू करवाना शुरू किया। इसी सिलसिले में मूसा (अ.स) ने अपने चचेरे भाई कारून से मुलाकात की और कहा। अये मेरे भाई आपको अल्लाह ने हर तरहा ने नवाजा है। तो आपको चाहिए की आप अल्लाह के लिए और अल्लाह के वास्ते जकात निकले। इसपर कारून बोला क्या तुम्हारा मतलब है के मैं अल्लाह को क़र्ज़ दूँ, आपने कहा जो अल्लाह के वास्ते खर्च करता है अल्लाह उससे दुगुना देता है। कारून के पास बेशुमार दौलत थी और इनकी चाबियां ४० खच्चरो (गधे) पर राखी जाती थी।

कारून ने मूसा (अ.स) की बात की हंसी उड़ाई और दुसरे लोगो को भी जकात देने से मन करता और मूसा (अ.स) की पैगम्बरी को भी झुटलाया और उन्हें बद किरदार साबित करने की कोशिश भी करता।

एक दिन कारून ने शहर की एक आवारा औरत को अपने महल में बुलाया और उसे काफी मोटी रकम देकर कहा। के तुम्हे मूसा की मजलिस में सबके बीच में चीख कर कहना होगा के मूसा ने मेरी आबरू पर हाथ डाला। औरत ने इतनी बड़ी रकम पहली बार देखि थी लिहाजा उसने हां भर दी।

मूसा (अ.स) हफ्ते में एक बार वाज़ करते थे। जिसमे जादा तर लोग शरीक होते थे। चुनांचे कारून ने औरत को इसी महफ़िल में बुलाया खुद भी मौजूद रहा और जब मूसा खुदा के पैगाम को जोश में भरकर सुनाने लगे तो कारून ने औरत को इशारा किया के अब मौका अच्छा है तुम अपना काम शुरू करो। औरत मजमे के बीचो बीच में से उठी और कहा ज़रा आप मेरी बात सुनिए। लोग खामोश हो गए के यह औरत क्या कहना चाहती है ?। इधर अल्लाह ने औरत की ज़बान पलटने का हुकुम दे दिया। लिहाजा औरत ने अपना बयान इस तरहा दिया। तीन दिन पहले कारून मुझे अपने घर में ले गया और मुझे बहुत सी दौलत दी और कहा तुम झूट बोलना की मूसा ने मेरी इज्ज़त लूट ली, मैं मूसा पर ईमान लाती हूं मूसा पाक और साफ़ है। औरत का यह कहना ही था, की कारून को तो काटे खून नहीं। खैर वाज़ पूरा हुआ लोग अपने अपने घरो में तशरीफ़ ले गए। लेकिन मूसा (अ.स) ने अल्लाह से दुआ की "या अल्लाह कारून को ज़मीन में

जिंदा धसा दे" । उसी वक्त अल्लाह की वही आई ए मूसा यह ज़मीन मैंने आज तेरे अख्तियार में दी, जो तू कहेगा जमीन वैसा ही करेगी । चुनांचे मूसा (अ.स) कारून के महल पहुंचे और कारून को बहार बुलाया और कहा कारून आज तेरी दौलत तेरे काम ना आएगी और खुदा को तेरी दौलत से कोई फायेदा नहीं, आज तेरे साथ तेरी दौलत भी दफ़न हो जाएगी । इस बात पर कारून हंसा फिर मूसा (अ.स) ने कहा ए ज़मीन इसे घुटने तक धसा । चुनांचे कारून घुटने तक धसा और कहने लगा यह क्या जादू है तुम मुझसे मजाक कर रहे हो । मूसा (अ.स) ने कहा ए ज़मीन तू इसे अपने अन्दर समा ले । चुनांचे ज़मीन ने कारून को अपने अन्दर खींच लिया । मूसा (अ.स) ने सोचा कल कोई यह ना कहे की भाई की दौलत को हतियाने के लिए मूसा ने कारून के साथ ऐसी हारकत की । इसलिए आपने ज़मीन से कहा कारून की सारी दौलत को भी अपने में समा लो । चुनांचे कारून की पूरी दौलत ज़मीन में धस गई ।

मूसा (अ.स) ने अपने भाई हारून से कहा जाओ नील नदी के उस पार बसे बनि इसराईलियो का हाल चाल मालूम करो । चुनांचे हज़रत हारून (अ.स) ४० साल बाद इस कौम के पास पहुंचे तो देखा यहां तो एक नई कौम तैयार है जो ईमान से हटे हुए है । लेकिन जो जिंदा थे उन्हों ने बताया की ४० सालो से हम यहां से निकलने की मुसलसल कोशिश करते रहे लेकिन घूम फिर कर वापस यहीं पहुंच जाते है । फिर आपने कहा ठीक है तुम सब तैयार हो जाओ और इस दर्रे से निकलते वक्त "बाबे हत्ता " कहना

चुनांचे यह लोग जब दर्रे के नीचे से गुजरे तो बोले " बाबे हन्ता " । इस तरहा यह कौम गुमराह हो गई और हारून (अ.स) वापस आ गए।

मूसा (अ.स) को कोई लड़का नहीं था । इस लिए आपने युष बिन नान को खलीफा बनाया (वली एहद बनाया) और एक दिन अल्लाह पाक ने आपकी रूह कब्ज़ करने के लिए मलकुल मौत को भेजा, "जाओ मूसा की रूह कब्ज़ कर लाओ" । चुनांचे मलकुल मौत ने अदब से मूसा (अ.स) को सलाम किया और कहा मुझे खुदा ने आपके पास आपकी रूह कब्ज़ करने के लिए भेजा है । मूसा ने सलाम में जवाब दिया और कहा जाओ और खुदा से कहो के "अपने दोस्त की जान लेंगे" चुनांचे मलकुल मौत वापस गए और मूसा (अ.स) का सवाल रखा अल्लाह ने कहा मूसा से कहो के दोस्त ने दोस्त को बुलाया है क्या नहीं आओगे।

बस अगले ही दिन आप सीना की वादियों में टहल रहे थे के देखा एक शक्श कबर खोद रहा है । तो आपने पूछा के किसकी कबर खोद रहे हो । उसने कहा के एक अल्लाह के दोस्त की अगर आपको ऐतराज़ ना हो तो आप इसमें लेट जाइये क्युकी उसका डील डौल आप जैसा ही है, मुझे सही नाप भी मिल जाएगी । मूसा (अ.स) समझ गए और मुस्कुराते हुए उस कबर में लेट गए और मलकुल मौत ने आपकी रूह कब्ज़ कर ली । वफात के वक्त आपकी उम्र १२३ साल थी । इस लिए किसी को मूसा (अ.स) की कबर का पता नहीं मिला।

इस तरहा अल्लाह के इस पैगम्बर ने अपना इम्तिहान भरोसे के साथ दिया और अल्लाह ने इन्हें कलीमउल्लाह के खिताब से नवाज़ा और अल्लाह पाक ने आपकी हर जगह और वह वक्त मदद की। अल्लाह भरोसा रखने वालो का ऐसा ही इम्तिहान लेता है और कामियाबी अता फरमाई।

अब कुछ ऐसे भी इम्तिहान अल्लाह ताला ने लिए जिसमे बन्दे की दौलत का भी इम्तिहान लिया और औलादों का भी इम्तिहान लिया, जब सब ख़तम हो गया तो सेहत का इम्तिहान लिया। लेकिन अपने खुदा पर भरोसा किया और अल्लाह भरोसे के साथ इम्तिहान देने वालो को इज्ज़त, शोहरत, दौलत सभी से माला माल करता है। जैसा की जब अल्लाह पाक ने **अय्यूब (अ.स)** को पैगम्बरी अता की तो, आपको बादशाही बक्शी, हर तरहा का सुख चैन और सोहरत सब कुछ अता की, आप का काम तबलीग करना, लोगो को ईमान पर लाना इस तरहा आपने अपनी उम्र के ८० साल में पहुंच गए। तो शैतान इब्लीस ने कहा के अगर इनका अपने खुदा पर बहुत भरोसा है तो इनको इम्तिहान से गुजरना चाहिए ताकि खुदा से इनकी मोहब्बत है या नहीं। लिहाजा खुदा वन्दे कुद्दुस को शैतान को दिखाने के लिए उम्र के ८० वे साल में आपका इम्तिहान आपकी औलादों से शुरू किया। पहले तो आपकी औलादे बीमार रहने लगी, फिर एक के बाद एक औलाद मरती गई। लेकिन आप अपने खुदा का शुक्र और ज़िक्र बरबर करते रहे आपकी बीवी का नाम रहीमा था, जो के हज़रत युसूफ (अ.स) की बेटी थी जो खुद शेहजादी थी। खूबसूरत और नेक सोहर परस्त। आप भी अपनी औलादों के

मरने से ग़मगीन तो थी लेकिन अपने खुदा पर पूरा भरोसा। के वह जो कर रहा है बिलकुल सही, उसकी अमानत है सो जब चाहे अपनी अमानत वापस ले सकता है। अय्यूब (अ.स) की उम्र देखते हुए, बेटो का गम मिलना तकलीफ देता था। लेकिन आपने अपनी इबादत में कुछ भी सुस्ती नहीं की। आपके बेटे बरबर मरते रहे कहने वाले कहते के लगता है मौत ने घर देख लिया है। इस तरहा आपके सभी २६ बेटे इन्तेकाल फरमा गए। लेकिन आपने एक बार भी अल्लाह पाक से शिकायत नहीं की और अल्लाह पाक का शुक्र व ज़िक्र करते रहे। शैतान ने जब यह देखा तो उसने एक नई चाल चली के बेटे तो और पैदा हो जायेंगे यह तो अय्यूब जानते हैं, अगर इनका इम्तिहान इनके माल असबाब से लिया जाए तो जरूर इनका भरोसा अल्लाह पर से उठ जाएगा। चुनांचे अल्लाह पाक ने शैतान को दिखाने के लिए के "मेरा नुमैन्दा फिर भी ईमान पर अडे रहेगा"। अब अल्लाह पाक ने आपकी हुकूमत तक ख़तम करवा दी। यहां तक आपका रहने का ठिकाना भी छीन लिया और जिनके एक इशारे पर सैकड़ो गुलाम दौड़ते हैं। आज वह एक झोपड़े में रह रहे हैं, लेकिन अय्यूब (अ.स) ने सब्र किया और अपने रब का शुक्र भी किया। पेट पालने के लिए आपने मजदूरी शुरू कर दी, ताकि आप और आपकी बीवी इज्ज़त से पेट भर सके। यह सिलसिला चलता रहा लेकिन आप और आपकी बीवी अपने रब की याद से कभी गाफिल ना रहे। इसके आलावा आप ईमान वालो का मुफ्त में इलाज भी करते थे और लोगो को शिफा मिलती थी शैतान इब्लीस ने कहा की अगर इनका इम्तिहान इनकी सेहत से लिया जाए तो

मालूम पड़ेगा के इनका भरोसा पक्का है या नहीं। खुदा शैतान का इशारा समझ रहा था लेकिन अल्लाह सब कुछ जानता है, के उसका चुन हुआ बन्दा कमजोर नहीं है। चुनांचे अय्यूब (अ.स) के बदन में अल्लाह ने कोढ़ पैदा कर दिया, जिससे कोई आपको काम भी नहीं देता था और लोग आपसे दूर भागते थे। अब आपकी बीवी रहीमा ने आपसे इजाज़त मांगी के अगर आपकी इजाज़त हो तो मैं लोगो के घर काम करके दो वक्त की रोटी का इंतज़ाम करू। आपने बड़ी मुश्किल से अपनी बीवी को काम करने की इजाज़त दी क्युकी रहीम खुद एक शहजादी थी और आपकी एक जबान पर आपके घर से बेशुमार दौलत आ जाती। लेकिन आप जानती थी के यह दौरे आजमाइश है, खुदा का इम्तिहान है। लेकिन अभी भी इस हाल में अय्यूब (अ.स) ने अपने खुदा पर भरोसा रखा और इबादत में लगे रहे। शैतान ने एक और चाल चली उसने कहा जो लोग इनसे इलाज करवाने जाते हैं वह अब क्या ठीक होंगे। जब अय्यूब (अ.स) अपना इलाज नहीं कर पा रहे हैं तो दूसरो का क्या इलाज करेंगे। इस तरहा लोगो ने आपसे किनारा कशी (दूरी) इख्तियार कर ली। और आपको बस्ती से दूर रहने का हुकुम दे दिया। लोगो ने आपको पत्थर तक मारे लेकिन आपने अपने रब का दमन नहीं छोडा और शुक्र और ज़िक्र में ज़र्रा बरबर भी कोताही नहीं की। आपकी बीवी लोगो की गुलामी करती और अपने सोहर को अपने हाथो से खान खिलाती और अल्लाह का शुक्र अदा करती "या अल्लाह मैं इस घर में भी खुश हूं"।

शैतान इब्लीस ने देखा की यह तो सारे इम्तिहान में खरे उतरे। तो क्यों ना अब इन्हें गुमराह किया जाए चुनांचे आपकी बीवी एक बार अपने घर से बहार जा रही थी तो इब्लीस ने उन्हें रोक कर कहा के मुझे आपकी सोहर की बिमारी के बारे में मालूम हुआ है और मेरे पास इस बिमारी का इलाज भी है। और इलाज यह है के इनको सूअर का गोश और शरब पिलाओ चुनांचे आप जब मजदूरी के पैसे लेकर अपने घर को चली तो अपने शोहर के लिए यह दोनों चीजे ले ली और कहा यह आपका इलाज मैं लाई हूं। आपने कहा तुम नहीं जानती के पैगम्बरों पर यह चीजे हराम है। तुमको शैतान ने यह सिखाया है और तुमने यह कहा माना तुम्हे इसकी सजा मिलेगी। जब मैं अच्छा हो जाऊंगा तो तुम्हे १०० डंडे मारूंगा। मैं कसम खाता हूं यह कहकर दोनों चीजे आपने फ़ौरन फीका दी।

अब आपको ज़ख्मो से कीडे गिरते थे। आप उन कीड़ो को दोबारा अपने ज़ख्मो में डाल देते थे। लेकिन अपने रब की याद से कभी गाफिल ना हुए। इस तरहा शैतान की सारी कोशिश ना काम रही।

एक बार आप सड़क पर चाल रहे थे तो लोगो ने आप पर पत्थर मारे जिससे चोट आपके सर पर लगी आपने कहा या खुदा अब तू मुझे मौत देदे। उसी वक्त अल्लाह की वही नाजिल हुई अये अय्यूब तेरा इम्तिहान अब ख़तम होता है। तू अपने सामने पड़े पत्थर पर ठोकर मार और आपने ठोकर मारी ही थी के पत्थर से पानी का चस्मा फूट पड़ा। फिर वही हुई इस पानी में खूब नहाओ इससे तुम्हारी सारी बिमारी अच्छी हो

जाएगी और ऐसा ही हुआ। आपको देखने से लगता था के आप कभी बीमार ही ना थे उसी वक्त फ़रिश्ते हाजिर हुए और आपको घर ले गए और आपसे गुफ्तगू करने लगे उसी वक्त आपकी बीवी रहीमा घर में आई तो अपने शोहर को ढूँढनेलगी। उनको लगा के शायद भूल से वह दूसरे किसी के घर में घुस गई है। तो फ़ौरन वहां से जाने लगी उसी वक्त अय्यूब (अ.स) ने आवाज़ दी रहीमा कहां जा रही हो ?। आप फ़ौरन पलटी और अपने शोहर के पास पहुंच गई और बड़े गौर से देखने लगी के यह वही है या कोई और आखिर कार में अय्यूब (अ.स) ने बोलना शुरू किया मेरा इम्तिहान अब पूरा हो चुका है। यह अजनबी अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, जो खुश खबरी लेकर आए हैं। फरिश्तो ने कहा अब आप पूरी तरहा अच्छे हो चुके हो और अपनी कसम पूरी करें १०० डंडे मारे। रहीमा तैयार हो गई उसी वक्त फ़रिश्ते ने कहा आप १०० लकडिया एक साथ एक बण्डल में बाँध कर एक बार हलके से मारे इससे आपकी कसम भी पूरी हो जाएगी। आप ने ऐसा ही किया अल्लाह पाक ने आपको फिर से हुकूमत अता की और ८१ साल की उम्र में आप फिर बाप बने फिर वही इज्ज़त शोहरत और दौलत आपको हासिल हो गई जब आपकी उम्र ९३ साल की थी तो आपकी वफात हो गई।

इस तरहा अय्यूब (अ.स) ने अपना इम्तिहान भरोसे के साथ दिया और अल्लाह ने आपको कामियाब किया।

भरोसा और इम्तिहान के मौजू में अब हम एक ऐसे पैगम्बर का जीकर कर रहे हैं के जिन्हों ने जैसे ही बारगाहे इलाही में जब भी हाथ उठाये अल्लाह पाक ने उनकी दुआ

पूरी की और दुआ भी ऐसी जिसकी आम इंसान सोच भी नहीं सकता। उनकी आराम गाह नज्वे अशरफ में हज़रत आदम (अ.स) और हज़रत अली के बीचो बीच मौजूद है।

आपका नाम है **सालेह बिन आबिद**।

आप नूह (अ.स) की दसवी पीढ़ी में पैदा हुए। आपका मुल्क यमन और शहर का नाम हजर था। आपकी नबूवत का ऐलान इसी शहर में हुआ। आपको वही आई के ए सालेह अपनी कौम को सीधा और सच्चा रास्ता दिखाओ, इन्हें गुमराह होने से रोको तुम्हे हमारा पैगाम पहुंचाना है। हम तुम्हारी मदद करते रहेंगे तुम्हे किसी बात का खौफ नहीं होना चाहिए। तुम आज से समूद कौम के नबी हो और देखो तुम अपने काम में कोताही मत बरतना।

आपको अल्लाह पाक ने कौमे आद के बाद कौमे समूद पर नाजिल किया। आपके वालिद **हज़रत आबिद (अ.स)** भी पैगम्बर हुए हैं। जब आपकी नबूवत का ऐलान हुआ तो बुत परस्ती का आलम था जिधर देखो बुतों की पूजा हो रही है। आप ऐसे माहौल में अल्लाह का पैगाम लेकर कौम के पास गए और कहा मत पूजे इन्हें यह किसी काम के नहीं। यह ना तो कुछ फायेदा ही दे सकते हैं और ना तो नुक्सान और इन जैसे सैकड़ो बुत इकट्ठा हो जाए और कहा जाए के एक मक्खी को पैदा करो, तो यह नहीं कर सकते और अगर कहा जाए के एक मक्खी को मार कर दिखाओ, तो भी यह नहीं कर सकते। फिर ऐसो की इबादत करने से तुम्हे क्या हासिल है ?। पूजना है तो उस रब को पूजो जिसने हमको पहली बार जिन्दा किया और फिर मौत देगा और

क़यामत के दिन फिर दोबारा जिंदा करेगा। उसका कोई शरीक नहीं वह सिर्फ एक है और बड़ा जोरावर है। समूद कौम के सरदारों ने कहा ए सालेह क्या तुम हमे उस काम को करने से मना कर रहे हो जो हमारे दादा परदादा के ज़माने से होता चला आ रहा है। और अब तुम हमे एक नए खुदा की पूजा करने को कह रहे हो। क्या तुम्हारा खुदा तुमसे बाते करता है ?। क्या तुमने खुदा को देखा है ?। सालेह (अ.स) ने कहा मुझे खुदा का पैगाम मिलता है। मैंने खुदा को नहीं देखा और नाही बात की लेकिन खुदा हम सब को देख रहा है और वह हमारी सेह राग से करीब है।

अब सरदारों ने फिर कहना शुरू किया के हमारे ७० बुत है, जो हमसे बाते करते हैं। तब सालेह बिन आबिद ने कहा अगर तुम्हारे बुत बाते करते हैं तो मैं तुम्हारे बुतों से मुकाबला करूँगा अगर तुम्हारे बुतों ने हमारी बातो का जवाब दिया तो हम यह मुल्क छोड़ देंगे और अगर तुम्हारे बुतों ने हमारी बात का जवाब नहीं दिया तो तुम सब हम पर ईमान ले आओगे। सरदारों ने कहा ठीक है, हम अपने आलिमो से पूछ कर बताते हैं। इस वक्त कौमे समूद में ७० आलिम थे। जब सरदारों ने हज़रत सालेह (अ.स) की शर्त का ज़िक्र किया तो यह आलिम एक साथ बोले हां, हमे शर्त मंजूर है। और यह मुकाबला एक ख़ास दिन रखा जाए। इसके लिए ईद का दिन ठीक रहेगा। उस दिन शहर के सभी लोग इकट्ठा होंगे और सबके सामने सालेह हमारे बुतों से बाते करेगा।

अब लोगो को ईद के मेलो का इंतज़ार होने लगा इधर सभी ७० आलिम अपने बुतों को पाक साफ़ करने में जुड़ गए। उन्हें खूब अच्छी तरहा पानी से नहलाया और बुतों के

गलो में फूलो का हार पहनाया और ऊद की लकड़ी जलाई गई। ताके खुशबू बर करार रहे। शहर की पूरी आबादी बुतों के चारो तरफ जमा हो गई और हर बुत के साथ एक आलिम भी बैठा था। यह बुत छोटे से लेकर बड़े तक थे और इन्हें तरतीब से रखा गया था पहले छोटे बुत से शुरू किया और आखिर में बड़ा बुत रखा। इसके अलावा अपने बुतों की शान में नारे भी लगा रहे थे। उसी वक्त हज़रत सालेह (अ.स) अपने ईमान वाले लश्कर के साथ बुतों के बीच जा पहुंचे और आलिमो से पूछा क्या मैं आपके बुतों से सवाल करना शुरू करू ?। आलिमो ने कहा जी हां।

सालेह (अ.स) ने छोटे बुतों से सवाल शुरू किया और पूछा तुम्हारा नाम क्या है। बुत ने कोई जवाब नहीं दिया हजारो की तादाद में खड़ी हुई भीड़ बिलकुल चुप और आलिम धीरे-धीरे बुतों से कह रहे हैं "बोलो मेरे खुदा" "बोलो मेरे खुदा"। लेकिन बुत तो बुत था। इस तरहा सालेह (अ.स) बारी बारी से हर बुत के पास तशरीफ़ ले गए और सबसे नाम पूछे कोई जवाब नहीं। आलिमो की शक्ल डर के मारे काली पड़ने लगी के अब क्या होगा ?। सरे बुतों से जब आप मिल चुके और कोई जवाब नहीं मिला तो आपने आलिमो से कहा आप सब गवाह है, बुतों ने मेरे सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। इस लिए मैं जीता और आप हरे। आलिमो ने बड़ी हिम्मत बाँधी और सालेह (अ.स) से गिड़ गिडाते हुए कहा एक मौका हमे और दे-दें, अबकी बार यह आपसे बात जरूर करेंगे और अगर इन्होने आपसे बात नहीं की तो हम आप पर और आपके खुदा पर

ईमान ले आएंगे। आपने कहा ठीक है एक मौका हम तुम्हे और देते हैं। तुम हमे जब चाहो बुला सकते हो यह कह कर आप अपने मुकाम पर तशरीफ़ ले गए।

भीड़ में मौजूद तमाम लोगो का अपने बुतों पर से ईमान डगमागा गया और दिल ही दिल में सालेह (अ.स) पर ईमान ले आए। जब सारा मजमा वहां से हट गया तो सभी ७० आलिम अपने बुतों के सामने रोने लगे के "आपने उनसे बात क्यों नहीं की" ?। लेकिन बुतों ने कोई हलचल नहीं की। फिर येह बुतों के सामने से लौटने लगे यहां तक कई आलिम बेहोश हो गए। उसी वक्त एक बुत में से आवाज़ आई "मैं बहुत खुश हुआ तुम्हारे इस तरिके पर" बोलो तुम क्या चाहते हो। आलिमो ने कहा आपको सालेह से बात करनी होगी और उनके सवालों का जवाब देना होगा बुत ने कहा ठीक है। तुम सालेह को बुलाओ मैं उसके सवालों का जवाब दूंगा। यह सुनकर आलिम बहुत खुश हुए और झूमने लगे और फ़ौरन सालेह (अ.स) को दावत देने पहुंच गए और शहर के सभी लोगो को इकट्ठा होने का हुकुम दिया और लोगो से कहा आप सब लोगो को कल देवताओं के सामने इकट्ठा होना है। हमारे बुत सालेह से बात करेंगे। लिहाजा शहर के सभी लोग दोबारा जमा हो गए और आलिमो ने अपने बुतों को दूध से नेहलाया और संदल लगा कर सभी आलिम बुतों के सामने आसन लगाकर बैठ गए। और चारो तरफ लोगो का जमावड़ा और भीड़। अपने बुतों की शान में नारे लगाने लगे। उसी वक्त सालेह (अ.स) अपने ईमान लाये हुए साथियो के साथ पहुंच गए और आलिमो से पूछा के हम सवाल शुरू करें। आलिमो ने सर हिलाकर हां कहा। सालेह (आ.स) ने छोटे बुत

से सवाल किया तुम्हारा नाम क्या है ? | बुत ने कोई जवाब नहीं दिया इस | तरहा बारी बारी से सब बुतों के सामने आप पहुंचे और सब से एक ही सवाल | लेकिन कोई जवाब नहीं | आलिमो को काटो तो खून नहीं और भीड़ को जैसे सांप सूंग गया हो | सालेह (आ.स) ने कहा आज भी आपके बुत मुझसे बात नहीं कर सके | लिहाजा आप सभी लोग ईमान ले आइये सैकड़ो लोग उसी वक्त ईमान ले आए और आप वहां से अपने मुकाम को तशरीफ़ ले गए |

दर हकीकत यह थी के बुतों में शैतान घुस जाया करते थे और अपने को खुदा कह कर आलिमो से बात किया करते थे | जिससे यह लोग गुमराह थे | लेकिन जब पैगम्बर पहुंच जाए तो शैतान टिक नहीं सकते | येही खासियत थी के शैतानो को वहां से हटना पड़ता था |

सालेह (आ.स) ने आलिमो को पैगाम भेजे के मुझ पर बैत करो क्युकी तुम शर्त हार चुके हो | चुनांचे सभी ७० आलिमो ने एक नई चाल चली और इस के तहत इन लोगो ने सालेह (अ.स) से कहा की हम आप पर बैत उस वक्त करेंगे जब आप पहाड़ के अन्दर से एक दस महीने की गाबिन उठनी पैदा करके दिखाएँगे | यह इनकी एक नई चाल थी | आपको वही मिली के इनकी यह शर्त मान लो | इसलिए सालेह (आ.स) ने कहा ठीक है आप सभी ७० आलिम शहर के बहार वाले पहाड़ पर इकठ्ठा हो हम भी आपको वहां मौजूद मिलेंगे |

दुसरे दिन सालेह (अ.स) शहर के बहार पहाड़ पर जा कर बैठ गए और इन ७० आलिमो की राह देखने लगे और अगले कुछ पालो में यह सभी आलिम भी पहुंच गए। जब आपने देखा के सभी लोग तशरीफ़ ला चुके हैं। तो आप खड़े हुए और आलिमो से कहा सामने वाली पहाड़ी को आप गौर से देखो। चुनांचे सभी आलिम सामने वाली पहाड़ी को देखने लगे। सालेह (आ.स) खड़े हुए और हाथ उठाकर अपने बारगाहे इलाही में कहने लगे "या अल्लाह आज तक जो भी मेरे पास है सब तेरा है, मैं मांगता गया और तू देता गया, आज मैं आपसे फिर मांगता हूं, तेरे इन राह से भटके हुए बन्दों के लिए ताकि यह भी ईमान ले आए और जहान्नुम की आग से येह सब महफूज़ रहें, या मेरे मालिक आप इस पहाड़ के अन्दर से एक दस महीने की गाभिन उठनी निकाल दे" येह अलफ़ाज़ अभी पूरे हुए ही थे, के उसी पहाड़ से एक अजीब-ओ गरीब आवाज आने लगी पहाड़ फटने लगा जैसे चीख रहा हो जैसे माँ बच्चे जनते वक्त चीखती है और अगले ही पल एक उठनी पहाड़ के बीच से बहार निकलती है। जिसकी एक टांग से दूसरी टांग की दूरी एक मील, उसी अंदाज में उसका सर गरदन धड और साफ़ दिख रहा था के इसके पेट में एक बच्चा भी है। येह उठनी शहर की तरफ रुख करती है।

सभी ७० के ७० आलिमो ने येह मोजिज़ा अपनी आँखों से देखा था। इनकी आँखे फटी की फटी रह गई। सालेह (आ.स) ने ताकीद की येह अल्लाह की उठनी है। हम सब को इसकी हिफाजत करनी है। येह हम सबको फाएदा देगी, कोई भी इसपर जुल्म न करे। सभी आलिमो ने कहा ऐसा ही होगा। जब सालेह (आ.स) ने कहा अब तो तुम्हारी

यो यह शर्त भी पूरी हो चुकी है अब तो आप ईमान ले आए, तो उसी वक्त ६ आलिमो ने आपके हाथ पर बैत की, के हम आप और आपके रब पर ईमान लाये। बाकी आलिमो ने कहा के हम अपनी कौम को यह सार वाकिया बयान करेंगे और सब साथ में ईमान लायेंगे।

जब यह उठनी शहर में दाखिल हुई तो शहर में एक कोहराम मच गया। लोगो में हैबत तारी हो गई। जब यह उठनी शहर में दाखिल हो तो सारे जानवर जंगले में चुप जाएं और जब यह उठनी जंगले में चरने जाए तो सारे जानवर शहर में दाखिल हो जाए। जब यह कुए का पानी पिए तो उस दिन पूरा पानी ख़तम हो जाए और बकिया जानवर प्यासे रह जाए। फिर सालेह (अ.स) ने हुकुम दिया के एक दिन उठनी पानी पीयेगी और दुसरे रोज़ सभी जानवर पानी पियेंगे। चुनांचे बारी बारी से पानी पिने की शरियत बन गई। अब एक मुसीबत ख़तम हुई। आपने इसका दूध निकलवाया सारे शहर को दूध बांटा फिर भी दूध बच जाता। इस तरहा इस उठनी से फायदे मिलने लगे। इस उठनी का नाम पड़ा **"नाका-ए-सालेह"** यानी सालेह की उठनी। कुरआन-ए-पाक में अल्लाह ने इस उठनी का जिक्र किया है। अब क्यिकी यह उठनी गाभिन थी लिहाजा इसने बच्चा जाना जो की **"नाका-ए-सालेह"** की तर्ज़ पर ही था। अब आलिमो की यह शर्त भी पूरी हो चुकी। लेकिन फिर भी यह आलिम ईमान न लाये, बलके इनको मान ने वाले सालेह (अ.स) पर ईमान ला रहे थे। अब इन बुत परस्तो ने तरकीबे सोचना शुरू की किस तरहा इस उठनी से छुटकारा पाया जाए। क्युकी यह अल्लाह पाक की निशानियो

में से एक निशानी थी, और इन आलिमो ने खुद देखा था। आपस में तय किया के सब मिलकर इस उठनी पर हमला करते हैं। लेकिन इन लोगो ने इनकार कर दिया के इसे मारना आसान नहीं। पता नहीं हम सब भी मारे जाए इसकी वजह से। इस तरहा इनकी तरकीबे बनती गई और मिटती गई नाका-ए-सालेह अपनी औलाद के साथ शान से घूमती फिरती। उसे कोई डर नहीं जिधर चाह उधर राह वाली मिसाल थी। लेकिन काफिर अल्लाह की इस निशानी को देख कर जलते थे और दिल ही दिल में नफरत करते थे। सालेह (आ.स) का तबलीगी काम ज़ोरों शॉरो पर था। आप भी इस्लाम की दावत हर जगह आसानी से बाटते फिर रहे थे, क्युकी लोग आपकी पैगम्बरी का मौजिज अपनी आँखों से देख रहे थे और इस लिए ईमान वालो की तादाद भी दिन ब दिन बढती जा रही थी।

एक दिन इन्हों ने (आलिमो) ने शहर की एक खूबसूरत लड़की को खॉजा जिसकी कोई मिसाल नहीं थी। लेकिन इस लड़की का एक आशिक था जो एक ज़ीना जदा था (हराम की औलाद) और यह लड़की पर इतना फ़िदा था के इसके लिए कुछ भी करने को तैयार था यह शक्श काफि ताकतवर था। इस लड़की का नाम कित्ताम था। आलिमो ने इसका फ़ायदा उठाना चाहा, चुनांचे इस लड़की कित्ताम को आलिमो ने बुलाकर एक ख़ुफ़िया मीटिंग की, जिसमे कित्तम को काफी धन दौलत की पेश कश की गई। कित्तम ने पूछा इसके बदले में हमे क्या करना होगा। आलिमो ने कहा तुम्हे अपने चाहने वाले को कहना है के उसे नाका-ए-सालेह का कतल करना होगा, क्युकी

वही एक ऐसा शक्श है जो यह काम तुम्हारे एक इशारे पर कर सकता है। तुम्हारे इस काम पर हमारे बुत भी बहुत खुश होंगे और वह तुम्हारी मन चाही मुराद पूरी करेंगे। किन्ताम आलिमो की बात सुनकर राज़ी हो गई। दुसरे दिन किन्ताम ने अपने चाहने वाले आशिक से ख़ुफ़िया तौर पर बुलाकर अपनी शादी की पेश कश की। जिस्से ज़ीना जदा शक्श खुश हो गया और कहने लगा इसके बदले में जो तुम कहो गी मैं करने को तैयार हूं। किन्ताम को इसी मौके की तलाश थी चुनांचे उसने फ़ौरन कहा सालेह की उठनी का कतल करना और उसका गोश सबको बाटना है। किन्ताम का इरादा सुनकर यह भी घबरा गया लेकिन मजबूर था क्युकी जबान दे चूका था। किन्ताम अपनी कामयाबी पर बेहद खुश थी फिर किन्ताम ने अपने आशिक से कहा। अब तुम अपनी शक्ल उसदिन दिखाओगे जिस दिन उठनी का कतल कर चुके होगे। उससे पहले तुम्हे हमारी शक्ल देखना हराम है।

यह शक्श अपने घर पहुंच कर रात भर सोचता है के किस तरहा इतनी बड़ी उठनी के मैं **कोचे काटू**। इस फ़िक्र में रात भर यह नहीं सोया, दुसरे दिन वह अपने ख़ास लोगो को इकठ्ठा करता है और इन्हें दौलत की लालच देता है। इसकी बात सुनकर यह लोग तैयार हो जाते हिया। इनकी तादाद चार होती है और पांचवा वह खुदा एक तै शुदा वक्त पर यह लोग जंगले में एक पहाड़ी के नजदीक इकठ्ठा हो जाते हैं, और उठनी जोके शाम होने पर जंगले में वापस अति थी उसका इंतज़ार करने लगे। उसी वक्त इन पांचो को उठनी के आने की आवाज सुनाई दी आगे-आगे उठनी और पीछे उसका बच्चा चला

आ रहा था जो कि काफी दूर था। आपस में पांचो का इशारा हुआ और जैसे ही उठनी इनके हद में आई पांचो ने एक साथ हमला बोल दिया, चार लोगो ने चारो टांगो पर तलवार चलाई और सर्गानाह ने उठनी की गरदन पर हमला कर दिया और उसे शहीद कर दिया और गोश को पूरे शहर में बटवाया। कित्ताम ख़ुशी में आ कर नाचने लगी जब नका-ए-सालेह को काटा जा रहा था। तो इसका बच्चा देख कर वहां से भाग निकला और उसी पहाड़ पर जा पहुंचा जहां से इसकी माँ को खुदा ने निकाल था। उठनी के इस बच्चे ने खुदा से कहा "या खुदा तूने देखा किस तरहा मेरी माँ की कोचे काट कर जालिमो ने शहीद किया तू इसका बदला ले"।

अल्लाह ताला ने सालेह (अ.स) पर वही भेजी। इस कौमे समूद को आगाह कर दो के अगले ३ दिनों के अन्दर अगर ईमान नहीं लाये तो, पहले दिन सबकी शल्क ज़र्द पड़ जाएगी, फिर दुसरे दिन इनकी शक्ल काली पड़ जाएगी और अगर फिर भी ईमान न लाये तो तीसरे दिन एक ज़ोर दार आवाज़ गूंजे गी जिससे इनके कान के परदे और कलेजे फट जायेंगे किसी को जर्रा भर बचने का मौका नहीं मिलेगा। चुनांचे सालेह (आ.स) ने कौमे समूद को इकठ्ठा कर के खुदा का पैगाम सुनाया और उन्हें आगाह किया। मारे खौफ के सारे लोग ईमान ले आए लेकिन फिर भी एक बड़ी तादाद काफिर ही रही इनके आलिमो ने सबको इकठ्ठा किया और कहा तुम लोगो को घबराने की कोई जरूरत नहीं है। इस बयान बाजी का मकसद हम लोगो को सिर्फ डरना भर है और अब आप सब अपने घर को तशरीफ़ ले जाओ।

कौमे समूद के लोग अपने अपने घरो को लौट गए। मगर खौफ की वजह से रात भर सोए नहीं। सुबह लोग जब अपने अपने घरो से बहार निकले तो एक दुसरे की शक्ल देख कर चीखने लगे और एक दुसरे को बोलते अपनी शक्ल तो देखो ज़र्द हो चुकी है। चुनांचे कौमे समूद में खौफ बे शुमार बढ़ गया जिस तरहा सालेह (अ.स) ने कहा था वैसा ही हुआ। इसमें से कुछ लोग ईमान ले आए और बाकी लोग अपने आलिमो के पास पहुंचे और उनसे मशवरा किया। आलिमो ने कहा घबराने की कोई जरूरत नहीं है, यह एक इत्तेफाक था के कल कहा और आज वैसा ही हो गया। यह कोई रोग है जो जल्द अच्छा हो जाएगा, जब के आलिमो में खुदा डर पैदा हो चूका था। इस तरहा एक दिन कट गया फिर रात का अँधेरा छाने लगा, लोग अपने अपने घरो में दुबकने लगे इन लोगो की भूक और प्यास भी ख़तम हो चुकी थी। आज की रात भी इनको नींद नहीं आई। मौत इनको नज़र आ रही थी और अपने बुतों से हिफाज़त की दुआ कर रहे थे। लेकिन ईमान वालो को बेहतरीन नींद आ रही थी। उन्हें कोई खौफ न था यह ईमान वालो को अल्लाह की तरफ से तोहफा था।

दुसरे दिन लोग अपने ही घर में एक दुसरे को देखने की होड़ में पहल करने लगे और जैसे ही लोगो ने अपने चेहरे को सियाह रंग में देखा तो सैकड़ो की तादाद में लोग बेहोश हो गए। बाकी सभी लोग अपने-अपने घरो से निकल कर सडको पर जमा हो गए और एक ही मौजू को लेकर बाते करने लगे। कोई कहता अब हम लोगो की मौत पक्की है। हमे अब कोई नहीं बचा पाएगा, बे वजह सालेह की उठनी को लोगो ने मारा। अब पूरी

कौमे समूद पर सालेह के खुदा का कहर बरपे गा। इसी खौफ से सैकड़ो लोग सालेह (अ.स) के हाथो पर बैत कर ली। लेकिन काफ़िरो की तादाद ज्यादा थी, सभी आलिम अपने बुतों के सामने लोट-लोट कर उनसे इस कहर से बचाने की मन्नते मांगने लगे और शहर के सभी काफिर इन आलिमो के पास पहुंच गए और रोने लगे के हम लोगो को कौन बचाएगा ?। एक तो आलिमो में खुद खौफ था और उनकी ही जान के लाले पड़े थे। ऊपर से उनके मानने वाले की जान के लाले। सभी आलिमो ने एक जुट हो कर एक बयान जारी किया के यह सब लोगो को डराने की कोशिश भर है। ताके हम सब लोग सालेह के मज़हब में शरीक हो जाए। इस लिए आप सब कतई इस नए मज़हब में शरीक न होना, नहीं तो हमारे देवता नाराज़ हो जायेंगे और आप लोग सब्र रखे कल तक सब कुछ ठीक हो जाएगा। आलिमो के बयान के बाद सब लोग अपने अपने घरो को लौटने लगे लेकिन। वही बेचैनी मौत का डर और कल क्या होगा ?। जैसे परेशानीयो से घिरे हुए, ना खाने की कुछ फ़िक्र ना किसी चीज़ की तमन्ना बस कल जिन्दा रहेंगे या मरे जायेंगे।

सालेह (अ.स) ने अपने लव-लश्कर के साथ निकलते हैं और लोगो को दोबारा आगाह करते हैं, के तुम लोगो ने अपनी आँखों से खुद देखा की अज़ाबे इलाही पड़ना शुरू हो चुकी है, और आज की रात आखरी रात है, वक्त रहते हुए ईमान ले आओ नहीं तो कल तुम सब मारे जाओगे। हमारा काम तुम लोगो को खुदा का पैगाम पहुंचाना था सो हमने पहुंचा दिया। अब तुम्हारी मर्जी तुम ईमान लाओ या काफिर हो कर मरो।

काफिर अजीब कश म कश में क्या करे और क्या न करे। अपने बाप दादाओ के खुदाओ पर यकीन करे या सालेह के नए मज़हब में शरीक हो। इसी सॊच विचार ने रात में पूरे शहर को अपने आघोष में ले लिया, और इसी रात एक अजीबो गरीब आवाज़ ने लोगो के कानो को फाड़ दिया जो जिस हाल में था वैसे ही मर गया और जितने भी ईमान वाले थे वह सब बच गए। इस तरहा अल्लाह ताला ने अपना गजब ढ़ा दिया। अब अल्लाह पाक ने सालेह (अ.स) को हुकुम दिया के अपने ईमान ला चुके साथियो को ले कर **"असहाबे-गस"** पहुँचो, वहां पर कुफ्र बहुत फैला है। चुनांचे आप हजर शहर से कूच करके मक्का के करीब असहाबे-गस पहुंचते है। इस जगह पर एक कुआ था। उसी के नाम पर यह नाम पड़ा आपने यहां लोगो से मुलाकात करनी शुरू की और दीन की दावत देनी चाही तो यह तो समूद कौम से भी जादा गुमराह लोग थे। जब इनसे अल्लाह को पहचानने की बात कही जाती, तो यह कहते हमारा खुदा तो समुद्र में रहता है, जो की चार मचिलियो पर सवार हो कर किनारे पर आता है और हमसे बात करता है। आपको (सालेह अ.स) यह सुनकर बड़ा अजीब लगा, लेकिन आप करते तो क्या करते। हालात यहां तक पहुंच गए के लोग आपसे कतराने लगे। फिर आपने लोगो से कहा तुम्हारे खुदा से हम कल शाम को मिलेंगे और वहीं मुकाबला करेंगे। दुसरे दिन काबिले के सभी लोग समुद्र के किनारे जमा हो गए, बीच में इनका सरदार जो एक ख़ास किसिम की पोशाक पहने हुए खड़ा था, और सालेह (आ.स) के आने की राह देख रहा था और इसमें काफी हड़क थी। उसी वक्त सालेह (अ.स) भी वहां पहुंचे और आपने

कहा कहां है तुम्हारा खुदा पुकारो सरदार ने बड़ी मिन्नत कर के आवाज़ लगाई। पधारिये हमारे पालन हार, लेकिन कोई भी नहीं पधार। सरदार ने फिर मिन्नत करके पुकारा लेकिन कोई भी हाज़िर नहीं हुआ। काबिले के सभी लोग आपस में काना फूसी करने लगे के क्या बात है जो हमारे पालन हार दर्शन नहीं दे रहे हैं। सरदार के चेहरे पर पसीना छलक आया क्युकी वह झूठा साबित हो रहा था।

अब बारी थी सालेह (आ.स) की। आप समुद्र के बिलकुल किनारे पर पहुंच गए और एक बुलंद आवाज़ में कहा जो भी हो हाज़िर हो जाओ। आपके मूह से यह कलाम निकलना भर था के समुद्र में हलचल शुरू हो गई और देखते ही देखते ४ बड़ी-बड़ी मछलियाँ हाजिर हो गई। जो एक लाइन में खड़ी हो गई और उसके बाद एक बहुत बड़ी मछली हाजिर हुई जो इन चारो मछलीयों पर बैठ गई। यह देख कर काबिले के लोग कहने लगे हमारा पालन हार प्रकट हो गया और बहुत खुश हो गए। उसी वक्त सालेह (अ.स) ने एक जोर दार आवाज़ में कहा इधर आओ। तो बड़ी मछली जिसे यह अपना खुदा मानते थे वह चारो मछलियों को छोड़ कर सालेह (अ.स) के सामने सर झुका कर खड़ी हो गई। फिर आपने कहा जाओ वापस जाओ मछली फ़ौरन वापस गई और फिर चारो मछलियों के ऊपर जा कर बैठ गई। सालेह (अ.स) की एक आवाज़ पर मछली को हुकुम मानता देख काबिले वाले बड़े पशो-पेश में पड़ गए। फिर सालेह (अ.स) ने मछलियों को हुकुम दिया फ़ौरन चली जाओ मछलिय फ़ौरन पानी में गायब हो गई।

अब सालेह (अ.स) ने उस भीड़ को मुखातिब करते हुए कहा। यह तुम्हारा कैसा खुदा था जो मेरा हुकुम मानने पर मजबूर है। तुम इसे अपना खुदा मान कर कितनी गलती कर रहे थे। इस लिए पहचानो उस खुदा को जिसने तुम सब को हम सबको इन मछलियों को बनाया, जिसने यह समुद्र यह जमीन बनाई ऐसे खुदा को पूजो इन झूटे खुदाओ को नहीं। इन मछलियों का राज यह था के बड़े बड़े शैतान इन मछलियों में सवार हो कर इन लोगो को गुमराह किए हुए थे। और इस लिए बात चीत भी करते थे। लेकिन आप क्युके पैगम्बर थे इस लिए शैतान यहां मजबूर थे आपका हुकुम मान ने के लिए। आपने इन लोगो पर काफी मेहनत की लेकिन यह सभी ईमान वाले नहीं बने और आखिर कार एक रात इस समुद्र की लहरों को अल्लाह पाक ने हुकुम दिया के इन काफिरों को अपने आगोश में ले लो। चुनांचे उसी रात यह पूरी कौम समुद्र में डूब गई अब जितने लोग बच गए और जो ईमान ला चुके थे आपने सबको असहाबे-गस पर इकठ्ठा किया इस कुए में काफी दौलत जमा थी आपने इस दौलत को निकाल कर ईमान वालो में तकसीम करदिया। आपने अल्लाह के हुकुम से ता ज़िन्दगी तबलीग की। इस तरहा अल्लाह ने अपने इस चहिते पैगम्बर की हर दुआ सुनी क्युकी आपको अपने रब पर पूरा भरोसा था आप अपने रब के हुकुम को मानते रहे और इम्तिहानो को पार करते रहे।

भरोसा और इम्तिहान अगर साथ-साथ चले तो कमियाबी खुदा ब खुदा कदमो पर गिरने के लिए मजबूर हो जाती है। यह उस शक्श को तोहफा है, जो अपने रब की हर आजमाइश को बखूबी अंजाम देते हैं। जैसे की **हज़रत अरमिया (अ.स)**, **हज़रत**

दानिआल (अ.स) और **हज़रत अज़ीज़ (अ.स)** को अल्लाह ताला ने आजमाया। जब बनि इसराइल पर कोई भी हुकुम रह मुसल्लत न था। तब अल्लाह पाक ने **हज़रत अरमिया (आ.स)** को नबूवत से नवाज़ा। आप लोगो के बीच जा जा कर दीन-ए-इस्लाम को फैलाते और हुकूमत की देख भाल भी करते। एक दिन अल्लाह पाक ने आपको बशारत दी, के बनि इसराइल की हुकूमत एक ऐसा शक्श करेगा जिसके बाप का पता नहीं होगा और यह बड़ा जोरावर होगा, यह शक्श पैदा हो चूका है और माँ के होते हुए भी इसे माँ का दूध नसीब में नहीं, तुम इसका पता लगाओ और इसकी परवरिश कर के इसे हुकूमत सौंप दो।

ख्वाब को देखने के बाद आपने लोगो को हुकुम दिया के ऐसे बच्चे को खोज कर के मेरे पास ले आओ। चुनांचे लोगो ने ऐसे बच्चे की बहुत खोज की लेकिन सभी ना काम रहे। चुनांचे अब आप इस काम में लग गए। आपको भी गलियों की ख़ाक छाननि पड़ी। एक दिन आप (अरमिया अ.स) एक मोहल्ले में बच्चे की तलाश में घूम रहे थे, के अचानक आपकी नज़र कूड़े के ढेर पर पड़ी। जिसमें से किसी बच्चे की रोने की आवाज़ सुनाई दी। आपके कान खड़े हुए लेकिन आप अपनी जगह पर ठहर गए और कुछ देर बाद आप अपनी जगह से हट कर एक आड़ में बैठ गए। लेकिन आपकी नज़र कूड़े के ढेर पर लगी रही। काफी इंतज़ार के बाद आपने देखा की एक औरत भी उस कूड़े के ढेर के पास जा कर बैठ गई और कुछ देर बाद उसी जगह पर एक कुतिया भी आ गई। इस औरत ने कुतिया के थन से दूध निकाल और अपने साथ लाइ हुई रोटी को

उसमे तर कर के बच्चे को खिलने लगी। यह बच्चा काफी सेहत मंद था और खूबसूरत भी। हज़रत अरमिया (अ.स) को बड़ा ताज्जुब हुआ और आपसे जब बर्दास्त नहीं हुआ तो आप भी बच्चे के करीब पहुंच गए। औरत आपको देख कर घबरा गई आप क्युकी अपना भेस बदले हुए थे, इस लिए आपको पेह्चानना मुश्किल था। आपने औरत से काफी पूछ ताछ की और आखिर कार में इसने कुबूला के यह मेरी ही औलाद है। लेकिन मेरे साथ ज़िन्हा किया गया था इस लिए मुझे इससे नफरत है। लेकिन इनसानियत के नाते मैं यहां पर आकर इसी तरहा खुराक दे जाती हूं। औरत ने आपसे सवाल किया के आप कौन हैं ?। आपने कहा मैं दुसरे शहर में रहता हूं और यहां से गुजर रहा था। यह कह कर आप वहां से चुप चाप चले गए और कुछ दूर जाने के बाद आप रुके और फिर एक आड़ में खड़े होकर बच्चे को देखने लगे और उस औरत के वहां से हटने का इंतज़ार करने लगे। औरत ने बच्चे का पेट भरकर दोबारा उसे वहीं छुपाया और चली गई और कुछ देर बाद कुतिया भी वहां से हट गई। आपको पक्का यकीन हो गया के वह वही बच्चा है जिसको हम तलाश कर रहे हैं।

लिहाजा आपने उस बच्चे को उठाया और अपने मुकाम पर ले गए। आपने इस बच्चे की अच्छी तरहा परवरिश की, और आपने इसका नाम रखा **"बखते नसर"** जब आपने देखा के अब यह हुकूमत संभाल सकता है और इसमें हुकूमत को चलने की काबिलियत है। तो आपने इसे हुकूमत सौंपने से पहले चन्द हिदायते दी, के किसी पर जुलुम ना करना, लोगो की भलाई के लिए काम करना, और बैतूल मुक़द्दस की भी

हिफाजत करना, कभी इसे नुक्सान पहुंचाने की कोशिश ना करना, और हम पर भी ज़ुल्म ना करना।

बखते नसर हुकूमत पर काबिज़ हो गया तो आपने शुकरान नमाज़ अदा की "ए अल्लाह हमने अपनी जिम्मे दारी निभाई अब आप अपनी हिफाज़त में इस मुल्क और रियाया में रखे"। जैसे के दुनिया के दस्तूर हैं जो पैद है वह ना पैद है। चुनांचे आपको अल्लाह पाक ने अपने पास बुलालिया।

अब बखते नसर पर किसी की बंदिश ना थी। लिहाजा हुकूमत को अपने तौर तरीके से चला रहा था। धीरि-धीरि इसमें गुस्र और घमंड आने लगा और अपनी ताकत का नाजाइज़ इस्तेमाल करने लगा। किसी भी मुल्क को अपने से कमतर समझता था। इसे मालूम हुआ के **मुल्क-ए-शाम** में काफी दौलत है और दानिशवरो से भरा है। तो कहीं ऐसा ना हो के एक दिन यह हमारे मुल्क पर ही हमला कर के हमे गुलाम बना ले। चुनांचे इसने मुल्क-ए-शाम पर हमला करने की ठान ली मुल्क-ए-शाम में कई मुल्क के लोग पढने आया करते थे। और बैतूल मुक़द्दस में रह कर इल्म हासिल करते थे। बैतूल मुक़द्दस याकूत और हीरो से जड़ा, अल्लाह का घर था। यहां पर इतने बेश कीमती हीरि और याकूत जो की शायद ही किसि दुसरे मुल्क में मौजूद हो।

बखते नसर को शाम के बारे में जब पूरी जानकारी मिल गई तो इसने अपनी फ़ौज को हमला करने का हुकुम जारी कर दिया और यह खुद भी जंग में शरीक हुआ। अचानक हमले की वजह से शाम को सम्भलने का मौका ही ना मिला। लिहाजा फौजों ने खूब

तबाही मचाई और आखिर में बैतूल मुक़द्दस को भी लूटा। यहां के आलिमो और तुलबा लोगो को कतल करदिया। लेकिन जाते वक्त अपने साथ दो शक्श को बखते नसर अपने साथ ले गया। अपने महल में घुसने के पहले इस ने इन दो शक्श इस में एक का नाम अज़ीज़ और दुसरे का नाम दानियाल था और यह दोनों ही इल्म के माहिर थे। दानियाल को कुए में फेक दिया। इस कुए में खूखार और भूकी शेरनी रहती थी बखते नसर ने कहा यह आलिम आज हमारी भूकी शेरनी की गिजाह बनेगा और दुसरे आलिम हज़रत अज़ीज़ को कैद में दाल दिया। दानियाल (अ.स) की उम्र २० साल थी।

वक्त बाड़ी तेज़ी से गुजरता गया और बखते नसर की हुकूमत भी चारो तरफ फैलती रही। कहने वाले यहां तक कहते थे के इतनी तरक्की दूसरी हुकुमतो ने आज तक नहीं की। इस तरहा काफी अरसा गुजर गया। एक दिन बखते नसर ने एक ख्वाब देखा के उसके महल के बहार मौजूद कुए में आसमान से फ़रिश्ते उतरते हैं। सुबह-सुबह उठकर बखते नसर उस कुए के पास पहुंचा और झाँका, तो उसने देखा कुए में एक खूबसूरत और लहीम शक्श लेटा है। बखते नसर को फ़ौरन याद आया की मैंने आज से तक़रीबन एक साल पहले दानियाल जो की उनका कैदी था उसे उसी कुए में फेका था, ताकि भूकी शेरनी उसे खा जाए। लेकिन यह तो जिन्दा है और सेहत मंद भी है। बखते नसर ने गुलामो को हुकुम दिया की दानियाल को कुए से निकाल कर मेरे सामने पेश करो।

चुनांचे गुलामो ने रस्सी में डोल बांधकर कुए में दाल कर उन्हें बहार निकाला और बखते नसर के सामने पेश किया। बखते नसर ने बहुत अच्छे लहजे में बात शुरू की

और पूछा के मैंने जब आपको कुए में डाला था तो मेरे हिसाब से भूखी शेरनी आपको कुछ पलो में ही फाड़कर ख़तम कर देगी। लेकिन १ साल तक आप उस कुए में जिन्दा कैसे रहे ? । हज़रत दानियाल (अ.स) ने कहा जब मुझे कुए में फेका गया तो मैंने घबराकर अपनी आंखे बंद कर ली फिर जब मेरी आँख खुली तो मुझे अंधेरा लगा लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता मेरी आँखों को सब कुछ साफ़ नज़र आने लगा, मैं उठकर बैठ गया और कुछ देर बाद एक शेरनी मेरे पास आ कर बैठ गई। मारे खौफ के मेरे होट और गला सूखने लगा हमे लगा के यह शेरनी हमे खा जाएगी, लेकिन शेरनी कुछ देर तक ऐसी ही बैठी रही और हमे गौर से देखती रही, फिर यह अपनी जगह से उठी और मेरी तरफ बढ़ी। हमने सोचा अब यह हमे खाने के लिए बढ़ रही है, लेकिन मेरे करीब आने के बाद इस शेरनी ने मेरे हाथ, पैर और माथे पर मौजूद ज़ख्मो को अपनी ज़बान से चाटना शुरू कर दिया। मेरा डर कुछ कम हुआ मेरे दिल में ख़याल आया की यह मुझे खान नहीं चाहती। तो मेरा दिल खुल गया फिर मैंने खुद अपने जिस्म के दुसरे ज़ख्मो को टटोलना शुरू किया। जहां भी ज़ख्म होता यह जबान से चाटती थी। मुझे ऐसा महसूस होता जैसे यह मेरे ज़ख्मो पर मरहम लगा रही हो और कुछ ही घंटो के अन्दर हमारे ज़ख्म सूखने लगे। मुझे काफी भूक लगी थी मैंने कुए के दुसरे हिस्सों में अपनी गिज़ा तलाशी मगर कुछ भी हासिल नहीं हुआ। जब मैं भूक से बे हाल हो कर एक जगह पर ही लेटा रहा और मैंने कुछ हरकत नहीं की तो इस शेरनी ने अपने थानों को मेरे मूह के पास लाइ और इशारा कर रही थी के मेरा दूध पियो। चुनांचे पहले तो मैं

राजी ना था लेकिन जान को बचाने के ख़याल से मैंने शेरनी के थन को मूह लगाया और दूध पिने लगा मुझे अपना बचपन याद आया जब मेरी माँ मुझे ऐसे ही दूध पिलाया करती थी। इस तरहा इस शेरनी ने मुझे अपने दूध से सींचा अब मेरा काम अपने रब को याद करना और जिन्दा रहने के लिए शेरनी का दूध पिया। इसके दूध में इतनी ताकत की मुझे कभी बीमारी भी नहीं लगी। इस तरहा हमारे खुदा ने एक खूंखार जानवर से मेरी हिफाजत भी की और रिज्क भी मुहैया करवाया। मुझे अपने रब पर पूरा भरोसा था के एक दिन जरूर मेरा इम्तिहान ख़तम होगा जोकि आज पूरा हुआ।

बखते नसर हज़रत दनिआल की हकीकत को सुनकर हैरान हो गया और उसके दिल में खौफे खुदा पैदा हो गया। बखते नसर ने अपने गुलामो को हुकुम दिया के इनके साथी कैदी को भी मेरे पास ले आओ। चुनांचे हज़रत अज़ीज़ (अ.स) को कैद खाने से निकाल कर बादशाह बखते नसर के सामने पेश किया गया। हज़रत दानियाल ने आपको पेह्चान लिया और एक दुसरे के गले मिले। फिर बखते नसर ने कहा आप दोनों आज से आज़ाद है, आप अपने मुल्क में जा सकते है। हज़रत दानियाल ने कहा एक साल का लम्बा अरसा बीत चूका है पता नहीं हमारे घर वाले जिंदा है या हमले में मर चुके हैं और अगर होंगे भी तो मुझे पेह्चान पाएंगे भी या नहीं। लिहाजा अब मैं अपने मुल्क वापस जाना नहीं चाहता। जब बखते नसर ने आपके मूह से इस तरहा की बात सुनी तो आपसे कहा की अगर आपको ऐतराज़ ना हो तो मेरी हुकूमत में आप जैसे आलिम की जरूरत है। लिहाजा आप आज से आलिम की गद्दी संभाले। आप राजी हो गए लेकिन

हज़रत अज़ीज़ अपने मुल्क जाने को राजी हो गए और उनको बखते नसर ने सवारी के लिए एक घोडा दिया और कुछ दौलत भी दी। हज़रत अज़ीज़ ने सबका शुक्रिया अदा किया और अपने मुल्क के लिए रवाना हो गए।

बखते नसर को इतना बड़ा आलिम हासिल हो गया था, लिहाजा हुकूमत के सभी एहम फैसले हज़रत दानियाल से बिना पूछे नहीं लिए जाते थे और बखते नसर बादशाह होते हुए भी आपके पास मशवरा करने खुदा जाता था। एक दिन बखते नसर सुबह-सुबह आपके हरम में पहुंच गया तो आपने पूछा क्या बात है आप इतनी सुबह और वह भी परेशान हाल में। बखते नसर ने कहा एक ख्वाब देखा और परेशान हो गया इस लिए सुबह सुबह आपके पास आना मुनासिब समझा।

मेरा ख्वाब कुछ इस तरहा है, "एक बहुत बड़ा बुत है जिसके पैर ज़मीन पर है और सर आसमान को छू रहा है, इसका सर सोने का बना है, गला चांदी का गरदन के नीचे से पैर के टखने तक का हिस्सा ताम्बे का बना है, लेकिन पाँव मिटटी का बना है, फिर हमने देखा एक छोटी सी गोल चीज़ इस बुत के सर पर गिरती है, तो यह बुत सर से गायब होना शुरू होता है और जो-जो बुत गायब होता है, वह गोल जोकि बुत के मुकाबले बहुत छोटा जैसे मानो मक्खी के बरबर, वह अब बड़ा होता जा रहा है और आखिर में वह इतना फ़ैल गया की बुत को ख़तम कर देता है"। यह ख्वाब देख कर मैं परेशान हो गया, इस लिए इसकी ताबीर सुनने के लिए हम आपके पास सुबह-सुबह पहुंच गए। हज़रत दानियाल ने बादशाह बखते नसर से ख्वाब की ताबीर इस तरहा

बयान की "बुत पर जो सोने का बना हिस्सा था उसका मतलब यह था के यह तुम्हारी हुकूमत का चेहरा है। चांदी का हिस्सा यह बताता है, की तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारी औलादे संभालेगी और इनका वक्त काफी कम रहेगा और यह हुकूमत सोने की रंगत खो कर चांदी की रंगत इख्तियार कर लेगी। यानी तुम्हारी हुकूमत के मुकाबले काफी कमजोर रहेगी। इसके बाद जो हिस्सा ताम्बे का बना है, वह हुकूमत का वक्त तो तुम्हारी हुकूमत से कई गुना जादा रहेगा, लेकिन ताकत में बेहद कमजोर और माली हालात भी काफी कमजोर रहेंगे और इसपर रूमियो की हुकूमत रहेगी। और जो हिस्सा मिटटी का बना है वह यह जाहिर करता है, के फारस के लोग इसपर हुकूमत करेंगे। बुत जो तुमने देखा जो की जमीन से आसमान तक लम्बा था, वह कुफ्र की दलील है। के इस वक्त पूरी दुनिया पर कुफ्र फैला है। लेकिन वह जो मक्खी के बरबर जो गोल है। वह मुहम्मद (अ.स) के दीन को बताता है। जो आहिस्ता-आहिस्ता कुफ्र पर छा जाएगा और पूरी दुनिया में इस्लाम फ़ैल जाएगा।

बखते नसर ख्वाब की ताबीर सुनने के बाद खामोशी से अपने हरम में तशरीफ़ ले गया और कुछ दिनों बाद बखते नसर का इन्तेकाल होगया और हुकूमत की बाग़ डोर इसकी औलादों ने संभाली जो की काफी कमजोर थी। बाबुल में आज तक इतनी कमजोर हुकूमत पहले कभी ना थी। लेकिन इन हुकुमतो ने भी दानियाल (अ.स) को अपने बाप की तरहा ही इज्ज़त दी आप लोगो से अल्लाह के दीन की दावत के साथ-साथ हुकूमत का भी काम देखा करते थे। जब आपकी दुनिया से रुक्सती का वक्त नजदीक आया तो

आपने वसीयत की “मेरे मरने के बाद मुझे कफ़न में लपेट कर मेरे कमरे में ही रहने देना और कमरे को बहार से ताला लगा देना” । चुनांचे आपकी वसीयत पूरी की गई मौत के वक्त आपही उम्र ७० साल थी । फिर दुनिया में अल्लाह ने अपने हबीब को भेजा और जब मुहम्मद (स.अ) ने कुफ्र को ख़तम करना शुरू किया तो आपकी फौजी बाबुल तक पहुंच गई । पूरी हुकूमत पर कब्ज़ा करके फ़ौज ने तलाशी शुरू की, तो इन्हें एक बंद कमरा मिला चुनांचे इसे तोड़ कर अन्दर घुसे तो इन्हें कफ़न में एक लाश मिली । तो सहाबियों ने यह खबर रसूल तक पहुंचाई । रसूल-ए-करीम (स.अ) ने फौरन वहां पहुंचने का इरादा किया । आपने कफ़न को मूह के पास से हटाया तो देखा लाश की आंखे खुली थी आपने अपने हाथो से लाश की आंखे बंद की और सहाबियों से कहा यह पैगम्बर दानियाल का जिस्म है । जो की तक़रीबन १२०० साल पहले दुनिया में तशरीफ़ लाये थे और इनकी ख्वाहिश थी की मेरी आंखे एक बार मुहम्मद (स.अ) का दीदार करें और इन्हें मिस्र के कब्रस्तान में दफ़न होना गंवारा नहीं था । आपने (मुहम्मद स.अ) ने सहाबियों को हुकुम दिया के उस नेहर के पानी को रोक दो और उस नेहर में कबर खोदी, ताकि इनकी ख्वाइश पूरी की जाए । चुनांचे सहाबियों ने नेहर के बीचो बीच आपकी कबर तैयार की, नबी-ए-करीम (स.अ) ने आपकी नमाज-ए-जनाजा पढाई । इनके पास इतनी खुशबू आ रही थी मनो अभी-अभी इनका इन्तेकाल हुआ हो । चेहरे पर एक नूर तारी था, आपको दफ़न करने के बाद पानी के बहाव को छोड़ दिया गया नेहर के पानी को रोकने की हिम्मत जनाब **मूसा अश्रि** की थी ।

इस तरहा अल्लाह अपने चाहने वालो की तमन्नाए पूरी करता है जो की अल्लाह के इम्तिहान में खरे उतरते हैं।

जैसेकि हमने बताया था की बखते नसर बादशाह ने हज़रत अज़ीज़ बिन सरजी को अपने वतन भेज दिया था। उसके आगे का किस्सा यूँ शुरू होता है, आप अपने घोड़ो पर सवार अपने वतन को लौट रहे थे तो जब आप एक बस्ती में पहुंचे तो वहां सब लोग एक अजीब-ओ-गरीब बीमारी से मरे पड़े थे बस्ती के कुछ मकान धसे थे कुछ उबड़ खाबड़। आप अपने घोड़े से उतर कर इन लाशो को गौर से देखने लगे और कहने लगे "के क़यामत के दिन इन सड़ी गली लाशो को अल्लाह कैसे जगायेगा" यह कह कर आप अपने घोड़े के करीब जा कर सोचने लगे इसी दरमियान इन्हें नींद आ गई तो सो गए और अल्लाह पाक ने आपको १०० साल तक ऐसे ही रखा, फिर इन्हें उठाया तो इन्हों ने देखा उनके चारो तरफ हड्डीया ही हड्डीया पड़ी है उनका घोडा भी कंकाल में बदल चूका है और जो थोड़े बहुत घर थे वह धस चुके थे एक अजीब-ओ-गरीब माहौल। आपके सर के बाल दाड़ी मूछ सभी काफी लम्बे हो गए थे। आपको अपनी गलती का एहसास हुआ के हमने अपने खुदा पर यकीन क्यों नहीं किया उसने मुझे एक लम्बी मुद्दत तक इन लोगो के बीच जिंदा रखा और यह बस्ती को कितने साल गुजर गए इसका अंदाजा मुझे नहीं था अल्लाह मुझे माफ़ कर दे। मैं इम्तिहान में खरा नहीं उतरा। फिर आपने कहा "या अल्लाह जिस तरहा तूने मुझे जिंदा किया इसी तरहा इन सबको जिन्दा कर दे"। आपकी दुआ कबूल हुई और लोग अपनी अपनी जगह से उठने लगे और

देखते ही देखते पूरी बस्ती फिर से बस गई आपने अपना मुकाम यहीं कर लिया। लोगो को आपने सच्चा और सीधा रास्ता दिखाया। अल्लाह पाक ने आपको पैगम्बरी अता की आप दुनिया पर १५० साल रहे और फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर अज़ीज़ बिन सरजी को अपने पास बुला लिया।

इस तरहा अल्लाह पाक माक भी करता रहता है लेकिन जब दिल से तौबा की जाती है तब अल्लाह की बने हुई हदों को मरते दम तक हिफाजत करना भी अल्लाह पर पक्का भरोसा ही है जिस तरहा हज़रत याहया (अ.स) ने कर दिखाया.

एक बार **हज़रत ज़करिया बिन हनन बिन युन** अपनी ९८ साल की उम्र में बारगाहे इलाही में दुआ मांगने लगे या अल्लाह हमारे घर में भी एक पाक औलाद भेज दे ताकि मेरे बाद हमारे आल से भी तेरी इबादत करने वाला हो। अभी यह दुआ ख़तम ही हुई थी के अल्लाह ने एक फ़रिश्ता आप के पास भेजा। फ़रिश्ते ने कहा आपके घर एक बेटे की खुश खबरी जिसका नाम **"याहया"** होगा आपने फ़रिश्ते से कहा अब तो पूरा बूढा हो चूका हूं मेरे बाल पूरे सफ़ेद और हाथ पैरो में भी वह कुवत नहीं और हमारी बीवी उम्मे बिन कुलसुम इब्ने इमरान भी बांज है। तो क्या ऐसे हालात में मेरे घर औलाद पैदा होगी फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह जो चाहता है वह कर देता है। फिर आपने पूछ इसकी कोई निशानी है तो फ़रिश्ते ने कहा आप ३ दिन किसी से बात नहीं करेंगे अगर जरूरत हो तो इशारे से बात कर सकते हैं। **जकरिया (अ.स)** ने फरिश्तो की

खुश खबरी अपनी जौजा से बयान की। इनको भी बड़ा ताज्जुब हुआ लेकिन वक्त अपनी राह चलता रहा और ठीक ९ महीने बाद आपके घर बेटा पैदा हुआ। जिसका नाम याहया था। आपका घर खुशियों से भर गया बच्चे की पेशानी से नूर निकल रहा था **याहया (अ.स)** बचपन से ही अल्लाह की तरफ रागिब थे। इस लिए आपको ४ साल की उम्र में ही तौरेत हिफ्ज़ हो गई। आपको इबादत के सिवा कुछ भी पसंद न था, एक बार आप तन्हाई पाने की चह में घर से दूर एक बाग़ में पहुंच गए और इबादत करने लगे। इबादत करते-करते आप हालते यकीन में पहुंच गए। यानी अब आपको दोज़क की आग और जन्नत की ख़ूबसूरती आपको नज़र आने लगी। दोज़क की आग का मंजर देख कर आपमें खौफ तारी हो गया और अल्लाह ताल से दोज़क की आग से बचने के लिए रो-रो कर दुआ मांगने लगे और लगातार रोते रहे यहां तक के आप जिस जगह पर बैठे थे वह पूरा हिस्सा आंसुओ से गीला हो गया और इस हाल में आप औंधे मूह गिरकर बेहोश हो गए। जब काफी वक्त गुजर गया तो आपकी वालिदा **उम्मे बिन कुलसुम** आपको ढूँढने निकली। पहले तो आस पास ही ढूंडा जब नहीं मिले तो घर से दूर रास्ते पर ढूँढते-ढूँढते इस बाग़ में पहुंची। तो देखा कोई बच्चा औंधे मूह पड़ा है और मिटटी कीचड बन गई और कीचड इस बच्चे के मूह पर हाथ पैर हर जगह लगा है। आपने इनका अपने आँचल से मूह साफ़ किया। तो कहने लगी यह तो याहया है इसे क्या हो गया तो आप इन्हें होश में लेन की कोशिश करने लगी। लेकिन याहया (अ.स) अपनी हालते यकीन में देख रहे हैं के उन्हें फ़रिश्ते लेने आए। तो आप फ़रिश्ते से

इल्तेज़ा कर रहे हैं मुझे एक बार मेरी माँ से मिलने दीजिये ताकि मैं दूध बक्ष्वा लूं और माँ-माँ कहने लगे। अब इनकी आवाज़ साफ़ आ रही थी, तो आपकी माँ ने कहा हां बेटा मैं हूं न बोलो बोलो क्या बात है। उसी वक्त आपको होश आ जाता है और आप अपने को अपनी माँ की आघोष में पते हैं। इस तरहा आप को इस उम्र में वालिदा का दर्ज क्या है आप बखूबी जानते थे। जब आप्पकी उम्र १० साल हुई तो आपकी नबूवत का ऐलान कर दिया गया। यही एक ऐसे बनि इसराइल पर भेजे गए पैगम्बर थे जिन्हें छोटी सी उम्र में ही पैगम्बरी हासिल हो चुकी थी। इसके अलावा हज़रत ईसा (आ.स) के बाद आप दुसरे पैगम्बर हुए जो नाम के साथ पैदा हुए। आपके वक्त में मुशरिको की भरमार थी आप इन लोगो को ईमान पर लाने के लिए जी जान से लगे राहे और अल्लाह पाक का हर पैगाम आप उम्मत को सुनाते गए। आप के वक्त में **हरदूस** नाम के बादशाह की हुकूमत थी यह बादशाह काफी ताकत वर था और अय्याश भी लेकिन बादशाह हज़रत याहया (अ.स) की बहुत इज्ज़त करता था और एहम फैसले आपकी राय से करता था। हरदूस का भाई था जिसका नाम कैन्स था इसकी बीवी का नाम शीबा था कुछ वक्त बाद कैन्स अपनी मौत मर गया इसके पीछे इसकी बेटी हरदोशिबा और बीवी शीबा थी। हरदोशिबा काफी खूबसूरत थी और जवान भी शिब काफी चालाक और होशियार थी। यह किसी तरहा हुकूमत पर अपना दब-दबा बनाना चाहती थी। रिश्ते में तो यह हरदूस की सगी भाभी ही थी और हरदूस की रंगीन मिजाजी से अच्छी तरहा वाकिफ थी। चुनांचे कुछ ही दिनों बाद उसने हरदूस को शादी का पैगाम दे दिया। हरदूस ने पैगाम को

क़ुबूल करते हुए शीबा से शादी करली। लेकिन शीबा का मसकद पूरा नहीं हो पा रहा था। वह शीबा की बातो पर बहुत कम अमल करता था। शीबा ने बहुत कोशिश की किसी तरहा हुकूमत पर उसका दब-दबा हो जाए लेकिन ऐसा नहीं हो पाया, एक बार शीबा ने हरदूस को देखा के वह उसकी बेटी हर्दुशीबा को चाहने के अंदाज में देखता है। बस इसके दिमाग में यहीं से फुतूर हो गया के, हरदोशिबा की शादी अगर हरदूस से कर दी जाए तो उसका मकसद पूरा हो जाएगा। चुनांचे शीबा ने अपनी बेटी को भरोसे में लेना शुरू किया और उसे कहा बेटी यह पूरी हुकूमत तुम्हारी हो सकती है अगर तुम हरदूस से शादी कर लो, तो यह काम आसान हो जाएगा फिर हम दोनों हुकूमत को अपने कब्ज़े में रखेंगे, हरदूस तुम्हारे हुस्न के आगे झुक जाएगा। हरदोशिबा ने कहा हमें कोई ऐतराज़ नहीं आपका फैसला मुझे मंजूर है।

अगले दिन जब हरदूस शरब के नशे में चूर था, तो शीबा ने कहा अगर आप चाहे तो हरदोशिबा से शादी कर सकते हैं। हरदूस को जैसे मूह मांगी मुराद मिल गई हो, लेकिन उसने कहा के यह तो तुम्हारी बेटी है शीबा ने कहा इसका बाप कैन्स था जो मर चूका। यह तुम्हारा खून तो नहीं है, जो मना हो। इसपर हरदूस ने कहा ठीक है, हम पहले पैगम्बर याहया से राय लेंगे फिर शादी का फैसला करेंगे। दुसरे दिन हरदूस ने याहया (अ.स) से मशवरा किया तो याहया (अ.स) ने कहा हरदोशिबा तुम्हारी सगी भतीजी है और तुम पहले ही इसकी माँ से शादी कर चुके हो। लिहाजा यह तुमपर हराम है। तुम

हरदोशिबा से कतई शादी नहीं कर सकते, खुदा ने मना फ़रमाया है। यह खुदा की बाँधी हुई हदें हैं। खुदा के वास्ते ऐसी गलती मत करना।

हरदूस हरम लौट आया और शीबा से कहा हम यह शादी नहीं कर सकते हज़रत याहया ने सख्त मनाई की है। शीब को लगा बाज़ी इसके हाथ से निकल जाएगी और दूसरा रास्ता भी नहीं जिससे की हुकूमत इसके काबिज़ हो सके उस वक्त तो उसने हरदूस से कुछ भी नहीं कहा। लेकिन इसने याहया (आ.स) को अपनी कामयाबी के रास्ते में आने वाला काँटा समझा और तरकीब करने लगी के किस तरहा यह काँटा साफ़ किया जाए। बगैर इसको निकाले उसका मकसद पूरा नहीं हो सकता।

अब शीब ने एक नई हरकत शुरू कर दी। जब देखती हरदूस हमबिस्तर के लिए उतावला है, तो अपनी बेटी को सज-सवार के हरदूस के सामने से गुजरवाती ताके हरदूस बेकाबो हो कर गुनाह कर बैठे, और एक बार हरदूस बे कबो हो गया। लेकिन फिर उसे याहया (आ.स) की बात याद आ गई और वह हरदोशिबा के करीब नहीं पहुंच सका। लेकिन रात भर बेचैन रहा। इसी बेचैनी का फायेदा उठाते हुए शीबा ने हरदूस को एक मशवरा दिया के आप इस मुल्क के बादशाह हैं, हर शक्श आपका हुकुम मानने पर मजबूर है। लेकिन एक येही शक्श है जिसका हुकुम आपको मानना पड़ता है। क्यों न आप इसका कतल करवा दे और यह मेरी दिली ख्वाहिश है के आप इसका सर कटवा कर मेरे सामने पेश करवाए, क्या आप मेरी यह ख्वाहिश पूरी कर सकते हैं। इस वक्त हरदूस पूरी तरहा से शीबा के काबू में था। चुनांचे इसने अपने सिपेसलार को हुकुम दिया

जाओ अभी याहया का सर काट कर मेरे हरम में पेश करो। सिपेसलार ने याहया (अ.स) के सर को काट कर एक तसत में रख कर बादशाह के हरम में हाजिर कर दिया। शीब अपनी कामयाबी पर बेहद खुश थी के उसके रास्ते का काँटा अब हट चूका और अब वह अपने मकसद में जरूर कामियाब हो जाएगी।

जब हरदूस ने याहया (अ.स)का कटा सर देखा तो अपनी तलवार से कटे सर से खेलने लगा। उसी वक्त सर से आवाज़ आई के हरदूस तुमपर हरदोशिबा हराम है। हम आज भी अपने अल्फाजो पर कायम है। हरदूस घबरा गया के मरे हुए सर से कैसे आवाज़ निकली और उसका सारा नशा काफूर हो गया। हरदूस के कानो में रात भर याहया (अ.स)के अलफ़ाज़ गूंजते रहे।

अल्लाह पाक अपने पैगम्बर का इतनी बेदरदी से किये गए कतल को कैसे माफ़ कर सकते थे। चुनांचे कुछ ही दिनों बाद शाहे रोम का बादशाह ताहतूस खुदा के हुकुम से हरदूस की हुकूमत पर हमला करके हरदूस और उसकी बीवी और दीगर एहवाल को मौत के घाट उतार देता है। इस जंग में हरदूस की ७०,००० की फ़ौज मारी जाती है। और ताहतूस इसपर हुकूमत करता है। याहया (अ.स) ७८ साल तक जिंदा रहे थे।

याहया (अ.स) अपने इम्तिहान में कामयाब रहे। क्युकी उन्होंने हरदूस से बैत नहीं की और अल्लाह ने बनाई शरियत की हिफाजत की। अल्लाह पर भरोसा करने वालो को कोई खौफ नहीं होता, वह अल्लाह का नाम लेकर शेर से भी जंग कर बैठते हैं। और

अल्लाह उनके भरोसे को फ़तेह से सेहरब कर देता है। अल्लाह पाक का इम्तिहान लेना मतलब होता है, के इस बन्दे को हमारे ऊपर भरोसा है या नहीं। ऐसा ही एक वाकिया बनि इसराइल के साथ पेश आया।

मूसा (अ.स) के बाद हुकूमत की बाग़ डोर सम्भालने वाला कोई न था। लेकिन पैगम्बर उतरते गए और यह भी बताना चाहूंगा के बनि इसराइल पर सबसे ज्यादा पैगम्बर भेजे गए और आसमानी किताब तौरेत की तालीम हर पैगम्बर ने फैलाई और अमल किया। चुनांचे **हज़रत अल्यासी (अ.स)** के बाद **हज़रत शामूल (अ.स)** को बनि इसराइल पर पैगम्बर मुसल्लत किया। आपने लोगो को सीधी राह के तौर तरीके सिखाए और तौरेत की हिदायतों पर अमल करने को कहा। एक बार बनि इसराइलीयो ने **शामूल (अ.स)** से कहा बहुत वक्त गुजर चूका है, लेकिन कोई भी हुकूमत सम्भालने वाला नहीं। लिहाजा आप हमारे लिए एक बादशाह मुसल्लत कर दे, ताकि **जालूत** बादशाह से हमारी हिफाजत कर सके। क्युकी जालूत अक्सर हम लोगो पर हमला करता रहता है।

कुछ दिनों बाद अल्लाह पाक ने शामुल (अ.स) को बशारत की। **तालूत** को बादशाह बनाओ वह ताकतवर भी है और हिम्मत वाला भी। अल्लाह के हुकुम के मुताबिक आपने सबको इकट्ठा किया और तालूत को बादशाह बनाने का ऐलान किया। इसपर कुछ लोगो ने कहा के तालूत के मुकाबले हम लोग ज्यादा दौलत वाले हैं, और आला

रुतबा रखते हैं। शामुल (अ.स) ने कहा बादशाही के लिए रुतबा और दौलत का होना कोई मायने नहीं रखता, और जहां तक तालूत को चुनने की वजह है। वह यह है की तालूत ताकत वर और हिम्मत वाला है। और उनकी मदद अल्लाह कर रहा है। इसके अलावा आप लोगो को तालूत के बादशाह बनने के फायदे भी जल्द मिलने लगेंगे।

इस तरहा बनि इसराइल के नए बादशाह तालूत ने हुकूमत सम्भालते ही, अपनी फ़ौज को चाक चौबंद किया और अवाम की भलाई के लिए काफी काम किये जिससे बनि इसराइल को फायदे मिलने लगेंगे।

बादशाह जालूत ने एक बार बनि इसराइल पर बड़ा जबरदस्त हमला किया था। जिससे हजारो जाने भी गई और जब वह यहां से लौटे तो माल असबाब के साथ एक संदूक भी ले गए थे। इस संदूक में मूसा (अ.स)और हारून (अ.स) की निशानिया रखी थी। लोग काम करने से पहले इस संदूक की जियारत करते थे, और बोसा देते थे, और एक यकीन था के अब वह जरूर कामियाब होंगे। और इसी लिए बनि इसराइल इस संदूक के छिन जाने से बहुत गमजदा थे। इस लिए कहते के हमारे मुल्क की ताकत और बरकत जालूत अपने साथ ले गया।

अल्लाह पाक को तालूत बादशाह को बनि इसराइल के बीच एक आला शक्शियत दिखाना ही था। चुनांचे इस संदूक को किसी तरहा जालूत के पास से लेना था। इस लिए अल्लाह पाक ने हुकुम कर दिया के संदूक तक पहुंच जाए।

जालूत के सिपाहियों ने इस संदूक को अपने कब्ज़े में करने के बाद अपने मुल्क के गोदाम में रखा और कई बरस तक यह ऐसे ही रखा रहा। फिर इनको मालूम हुआ की बनि इसराइल एक संदूक की बड़ी इज्ज़त करते थे। लिहाजा इन लोगो ने संदूक की बे-हुरमती करने के लिए संदूक को अपनी बैरक (जहां सैनिक रहते हैं) में ले गए और आपस में तय किया। के आज से हम इसको नापाक करेंगे। चुनांचे इन लोगो ने संदूक पर पेशाब कर दिया। रात को जब सब सो गए तो यह संदूक अपनी जगह से उठा और जिस जिसने पेशाब किया था उन सब पर एक जोर दार हमला किया और अपनी जगह पर फिर पहुंच गया। रात के अंधेरे में इन्हें कुछ नज़र नहीं आया। सुबह होने पर काफी लोग ज़ख़्मी थे। आपस में एक दुसरे से बात करते थे। के आखिर हम लोगो पर इतनी सफाई से किसने हमला किया। लेकिन किसि के पास कोई जवाब नहीं था। खैर कोई बात नहीं ज़ख़्मी लोग तो इस काबिल नहीं रहे की दूसरी बार इस संदूक पर पेशाब कर सकते, चुनांचे आज कुछ और साथियों ने संदूक को गन्दा किया। दिन ख़तम हुआ रात आई लोग अपने बैरक में सोने के लिए लेट गए और जब आधी रात गुजर गए यह संदूक अपनी जगह से हवा में उड़ा और सभी लोगो पर हमला करके (पेशाब करने वालो पर) अपनी जगह पहुंच गया। चोट के दर्द से इन लोगो की आवाज़े निकलने लगी चुनांचे सभी सिपाही रात में ही उठकर बैठ गए। अपनी अपनी छोटो पर दवा लगाईं और रात भर डर की वजह से नहीं सोए। इन लोगो में एक समझदार सिपाही था उसने काफी गौर से ज़ख़्मी लोगो पर अपनी राय कायम की और हर ज़ख़्मी सिपाही से पूछा। क्या तुमने इस संदूक पर पेशाब किया था। तो सबने कहा हां और जो ज़ख़्मी ना थे, उनसे पूछा

क्या तुमने संदूक पर पेशाब किया। तो उन सभी ने कहा नहीं। तब इसने कहा के यह कोई मामूली संदूक नहीं है, इसकी अजमत बहुत बड़ी है। इसलिए जिसने भी इसे गन्दा किया सबको ज़ख़्मी होना पड़ा, एक भी नहीं बचा। इसी लिए कोई भी अब इसको गन्दा मत करना और चलो हम सब मिलकर इसे पाक करते हैं। चुनांचे सभी लोगो ने मिलकर संदूक को अच्छी तरहा संदल के पानी से नेहलाया और एक ऊची जगह पर रख कर माफ़ी मांगी। तीसरे दिन सिपाही खान खा कर अपने अपने बिस्तर पर लेटे ही थे उसी वक्त अजीबो गरीब आवाज आने लगी, सभी लोग उठकर बैठ गए और कान लगाकर आवाज सुनने लगे, के आवाज़ किस दिशा से आ रही है। रात भर यह लोग जागते रहे। सुबह होते ही सबने मीटिंग की ऐसा कब तक चलेगा आज ३ दिन से हम लोग नहीं सो सके, इसका हल क्या है ?। फिर उसी शक्श जिसने संदूक की एहमियत बताई थी। कहा के हम इस संदूक की ताजीम नहीं कर पा रहे है, इसी वजह से हमे परेशानी पेश आ रही है, इसी लिए मेरी राय है के हम इस संदूक को बैल गाडी में ऐतराम से रख कर बैल गाडी का रुख बनि इसराइल की तरफ कर दो, तो यह संदूक उन तक पहुंच जाएगी और हमे इस मुसीबत से छुटकारा मिल जाएगा। सब ने कहा आपकी राय बेहद अच्छी है। क्यों न अभी इसपर अमल शुरू कर दे। चुनांचे फ़ौरन सबने मिलकर बैल गाडी का इंतज़ाम किया और संदूक को उठाने से पहले नहाए और नंगे पैर संदूक को अपने सर पर रख कर बैल गाड़ी पर रखा और खूब माफ़ी मांगी। फिर बैल गाड़ी को हांक कर बनि इसराइल की हद पर छोड़ कर उसे देखते रहे के कहीं बैल

गाडी अपनी दिशा बदलकर वापस ना आजाए जब बैल गाडी इनकी आँखों से ओझल हो गई तब कहीं इनको सुकून मिला।

बादशाह तालूत किसी काम के सिल-सिले में अपनी हुकूमत की सरहदों पर आए थे। उसी वक्त इनको दुश्मनों की तरफ से बैल गाडी के आने की आवाज़ सुनाई पड़ी। आप बड़ी बेचैनी से देखने लगे और कुछ ही देर बाद आपने देखा एक बैल गाडी आपकी तरफ चली आ रहि है। लेकिन इसपर कोई इंसान सवार नहीं है। लेकिन कोई सामान रखा है, । जब बैल गाड़ी करीब आगई तो अपने आप रुक गई आपने देखा यह तो मूसा (अ.स) का संदूक है। आप ख़ुशी के मरे चिल्ला उठे और फ़ौरन बैल गाडी पर बैठ गए और अपनी अवाम के बीच पहुंच कर मुबारक संदूक की खुशखबरी सुनाई। अब क्या था जिसको देखो संदूक की जियारत के लिए दौड़ा चला आ रहा है बनि इसराईलों को मनो सब कुछ मिल गया हो।

अवाम को बादशाह तालूत पर पूरा यकीन हो गया के येही सबसे सही बादशाह है। इससे अच्छा बादशाह हम लोगो को नहीं मिल सकता था।

अब शालुल (अ.स) ने बादशाह तालूत से कहा के अल्लाह का हुकुम है के जालूत पर हमला कर के उसे नीस्त-ओ-नाबूद कर दें। क्युकी उसने बहुत सर उठा रखा है और तुम आज से ही इस काम में लग जाओ। चुनांचे तालूत ने हुकुम के मुताबिक, हुकूमत में ऐलान करवा दिया के जालूत की हुकूमत पर हमला करना है। सब लोग अपनी अपनी तैयारियों में लग जाओ और जो कोई भी जालूत से अकेले मुकाबला करेगा और फ़तेह

पायेगा तो उसकी शादी हम अपनी बेटी से करेंगे और हुकूमत में बड़े ओहदे से नवाजेंगे। लोगो में लालच जाग उठी लेकिन जालूत की बहादुरी और ताकत का जहां ख़याल आता तो हिम्मत टूट जाती। क्युकी जब जालूत ने बनि इसराइल पर हमला किया था तो इन लोगो ने अपनी आँखों से देखा था के किस तरहा जालूत एक साथ १५-२० लोगो पर अकेला भारी पड़ता था। क्युकी इसका डील डौल किसी देवपैकर से कम ना था। उस वक्त की जंग का तरिका येही था पहले एक के मुकाबले एक जंग करता था। बाद में एक साथ हमला होता था। जंग का ऐलान हो चूका था और जालूत को हराने वाले का इनाम भी तय हो चूका था। लेकिन बड़े-बड़े सूरमा ने भी जालूत से लड़ने की हिम्मत ना दिखाई।

इधर यह खबर **हज़रत ईशा** के साहब जादे **दाऊद** को मालूम पड़ी। तो इनके दिल ने इरादा किया क्यों न मैं जालूत से मुकाबला करू और इतने बड़े इनाम का हकदार बनू, ताकि हमारे घर की माली हालत भी सुधर जाएगी। आपके घर में काफी गरीबी थी आप ७ भाई थे और इन सभी भाइयो में आप सबसे कमजोर और दुबले पतले थे। आप घर पर पहुंच कर सबके सामने कहते है। के हमने जालूत से मुकाबला करने का फैसला किया है। इससे हमारे घर की गरीबी भी ख़तम हो जाएगी और अल्लाह भी राजी होगा। भाइयो ने कहा इनाम तो जालूत को हराने के बाद ही मिलेगा, जो के ना मुमकिन है। हम लोग गरीबी में जी रहे हैं, हम खुश हैं। तुम अपने दिल से यह ख़याल निकाल दो। लेकिन आपने कहा मैंने इरादा कर लिया है। अब मैं अपना इरादा नहीं बदल सकता,

चाहे कुछ भी हो। अब घरके सब लोग खमोश हो गए और अल्लाह पर फैसला छोड़ दिया। आप रोज़ अपना काम भी करते और कसरत भी करते, ताके जालूत से मुकाबला किया जा सके इस तरहा मुसल सल आप तैयारी में जुड़े रहे।

जंग का दिन करीब आ गया तालूत ने जमा लोगो को साथ लिया और जंग के लिए निकल पड़े। जब आप जंग के लिए रवाना हो रहे थे, तो आप से कहा गया था के रास्ते में एक नेहर मिलेगी किसी को उसका पानी पिने मत देना। अगर बहुत प्यास लगे तो सिर्फ एक चुल्लू पिने देना। आप लगातार चलते रहे, उससे फ़ौज थक गई थी और प्यास भी जोर की लगी थी, उसी वक्त आप नदी के पास पहुंच गए इसी नदी को पार करने के बाद ही जालूत की फ़ौज पर हमला बोलना था। आपने सबको रोक कर कहा, के देखो इस नदी का पानी मत पीना और अगर तुम्हे हद्द से ज्यादा प्यास लगी है तो सिर्फ एक चुल्लू पानी पि सकते हो। चुनांचे जिन्हें तालूत बादशाह पर पूरा यकीन था तो उन लोगो ने पानी पिया ही नहीं था, फिर एक चुल्लू पानी पिया। लेकिन ज्यादा तर लोग पानी पर ऐसे टूटे जैसे ऊट पानी पीता है। कुछ आराम करने के बाद तालूत ने सबको कूच करने का हुकुम दिया। तो ३५० लोग ही तैयार हो सके बकिया एक बड़ी तादाद पेट के दर्द की वजह से उठ ही नहीं पाई। आपने कहा या खुदा तू हमारी मदद फरमा यह लोग ना फरमान निकल गए हैं। चुनांचे सर ३५० लोगो की एक छोटी सी फ़ौज को लेकर, आप जालूत की फ़ौज के सामने पहुंच गए। जालूत अपने १,००,००० के लश्कर के साथ अपने घोड़ो पर बैठ कर अपनी फ़ौज की अग्वाही कर रहा था और

इधर सिर्फ ३५० की एक छोटी सी फ़ौज। जालूत खूब हंसा, के हमसे टकराने चले हैं, इन सब पर तो मैं अकेला भारी पड़ूंगा। जालूत ने आवाज लगाई मुझसे कौन मुकाबला करेगा ?। उसी वक्त बादशाह तालूत ने आवाज़ लगाई दाउद आगे बढ़ कर जालूत से मुकाबला करो। जैसे ही आपका नाम पुकारा गया आप धीरे-धीरे आगे बढे और जालूत के सामने जाकर खड़े हो गए। आपने एक सदरी पहन रखी थी और इनकी जेब में एक ख़ास किस्म के पत्थर की गोल गिट्टियां को रखा था। जब जालूत ने आप को देखा तो उसे तअज्जुब हुआ के यह अदना सा शक्श मुझसे मुकाबला करेगा। जालूत घोड़े पर था और आप पैदल। जंग का उसूल था के ललकारने वाला मुकाबला करने वाले की एक शर्त मानता था। चुनांचे आपने कहा मैं तुमसे मुकाबला करूँगा लेकिन शर्त यह है के तुम्हे घोड़े से नीचे उतरना पड़ेगा। जालूत ने शर्त मानली और घोड़े से उतरकर आपके सामने खड़ा हो गया। उसूल के मुताबिक एक दुसरे का नाम बोलना पड़ता था। आपने कहा मेरा नाम दाउद है मेरे बाप का नाम ईशा। जैसे ही जालूत ने कहा ईशा। आपने अपनी सादरी उतार कर सीधे हाथ से घुमाना शुरू किया और जब आपको सदरी धुंदली नज़र आने लगी आपने जालूत के सर पर सदरी फेकी। इस सदरी में रखे हुए गोल पत्थर ने जालूत का भेजा ही बहार निकाल दिया। इतनी तेज़ रफ़्तार ने पत्थर ने वार किया जैसे आज कल का बम काम करता है और जालूत इस तरहा के हमले के लिए बिलकुल तैयार नहीं था। यह एक नई तरहा का हतियार था। चुनांचे जैसे ही जालूत का सर फटा और भेजा जमीन पर बिखरा, तो जालूत का देवपैकर जिस्म ज़मीन पर गद

शाही हो गया। जब उसकी फ़ौज ने अपने बादशाह का अंजाम देखा तो इनमे खौफ तारी हो गया और यह पीछे भागे। बस उसी वक्त तालूत ने सबको एक साथ हमला करने का हुकुम दे दिया और देखते ही देखते जालूत की फ़ौज मारी गई। आधी फैज तो भगदड़ में कुचल कर मारी गई।

वादे के मुताबिक बादशाह तालूत ने अपनी बेटी की शादी की और अपना वजीर बनाया और आपकी वजारत में हुकूमत बहुत मजबूत हुई और हर तरफ आपका बोल बाला था। चुनांचे तालूत बादशाह ने आपको अपनी ज़िन्दगी के आखरी वक्त में गद्दी सौंप दी। आप एक नेक बादशाह थे बहुत इबादत गार और आपकी हुकूमत में दीने इस्लाम को फैलाने के लिए बहुत काम किया गया। चुनांचे ईमान वालो की एक बहुत बड़ी फ़ौज तैयार हो गई। आप हुकूमत के खजाने से अपने सभी खानदान के लोगो को मदत पहुंचाते थे।

एक दिन आपको एक फ़रिश्ते ने एक इंसानी शक्ल में आपसे मुलाकात कर के कहा। खुदा ने आपको अवाम के खजाने अपने खानदान पर खर्च करने की इज़ाज़त दी है। आप इस बात का जवाब ना दे सके और अगले ही दिन से आपने खजाने से रकम लेना बंद करदी और आप खुदा से दुआ करने लगे के या खुदा हमारे लिए ज़रियाए माश पैदा करदे। अल्लाह ने आपको पैगम्बरी अता की और आपको फौलाद के बख्तर बनाने का हुकुम दिया जिससे आपको काफी दौलत हासिल हुई और आपकी तंग दस्ती ख़तम हुई। अब आप वक्त के पैगम्बर के साथ साथ बादशाही भी अच्छे तरीके से चला रहे थे।

अल्लाह ने आपको **ज़ुबूर** अता की और इसे पूरी कौम के बीच पहुंचाने की हिदायत दी ताकि लोग इसमें (ज़ुबूर) दिए गए तौर तरीको पर अमल करे। चुनांचे खुदा के पैगाम को पहुँचाने में **दाउद (अ.स)** ने अपने आखरी दौर तक मेहनत की और हर पल अल्लाह से डरते रहते, ताकि कहीं कोई गुनाह न हो जाए। और फैसले करने में भी आप बड़ी एहतियात बरतते थे। अल्लाह पाक ने आपको १९ बेटे अता किये थे। आपके सामने एक परेशानी यह थी के हुकूमत की बाग़ डोर किसे सौंपी जाए। अल्लाह ताल ने आपकी इस परेशानी के लिए फरिश्तो से एक लिफाफा भेजा जिसमे कुछ सवाल थे और आपको हिदायत दी गई थी के सभी बेटो से इसमें लिखे सवाल पूछो और जो सही सही जवाब दे उसे बादशाह चुनो। चुनांचे आपने सभी १९ बेटो से अल्लाह के भेजे हुए सवाल किए। लेकिन सुलेमान जो की आपके बेटो में कम उम्र थे उन्होंने सही सही जवाब दिए। इस तरहा अल्लाह के हुकुम से आपने **सुलेमान (अ.स)** को बादशाह मुक़र्रर किया और ७० साल की उम्र में आपका इन्तेकाल हो गया। यह वाकिया आज से ३१०० साल पहले का है।

अब हुकूमत की बाग़ डोर **हज़रत सुलेमान (अ.स)** के हाथ में थी आपको अल्लाह पाक ने पैगम्बर चुना और **ज़ुबूर** की नसीहतो पर अमल करने की ताकीत की और कौम को इसके बताये रास्ते पर चलने को कहा। सुलेमान (अ.स) एक ऐसे पैगम्बर हुए जिनके इख्तेयार में अल्लाह ने हवा कर दी इसके आलावा जिन और शैतान, देव जैसी

माखलुके भी आपके काबू में थे। आपको परिंदों से बात करनी आती थी और चीटी जैसी मखलूक की भी जबान आप जानते थे। आप अपनी हुकूमत की निगेह बानी एक ख़ास किस्म की सवारी पर करते थे इस सवारी का नाम "तख्ते सुलेमान" था। जो की एक ख़ास किस्म का था। इसे आपके वजीर **आसिफ बिन बरकी** ने अपनी हिकमत से बनवाया था। इस तख़्त की **लम्बाई ३** मील थी और **चौड़ाई १.५** मील थी। यह तख़्त पूरा एक शहर ही था। इसमें आपका दरबार आपकी आराम गाह और फ़ौज की टुकड़ी समाई थी, इसके ४ सफ़र दरवाजे थे। ताकि पूरब, पशचिम, उत्तर, दक्षिण हर तरफ से फ़रियाद आप तक पहुंच सके लेकिन चारो सदर दरवाजो पर अलग अलग मखलूक की पहरेदारी थी। एक दरवाजे की पहरेदारी जीनो के जिम्मे थी। दूसरी दरवाजे की पहरेदारी देव, तीसरे दरवाजे की पहरेदारी शैतान और चौथे दरवाजे के पहरेदार इंसान था। इस तख़्त की हवा में चलने की रफ़्तार एक महिना रात और एक महिना दिन। तख़्त के निचे परिंदों की जमात थी, जो इसे लेकर उड़ते थे। और आपका इशारा हुआ नहीं की पलो में तख़्त हवा को चीरता हुआ आगे बढ़ता रहता था। इसी तरहा आपका तख़्त हवा में परवाज़ कर रहा था। आपको एक मैदान दिखा तो आपने हुकुम दिया हमे यहीं उतरना है। चुनांचे तख़्त नीचे उतरना शुरू हुआ इधर चीटी के बादशाह ने अपनी कौम को हुकुम दिया के सभी चीटिया इस जगह को खाली कर दे क्युकी बादशाह सुलेमान का काफिला यहां उतर रहा है। चुनांचे सारी चीटियों ने हुक्म की तामील की और फ़ौरन चीटियों ने जगह खाली कर दी।

सुलेमान (अ.स) का काफिला कुछ वक्त बाद यहां उतरा और तख़्त से बहार निकल कर आप मैदान में तशरीफ़ ले गए। उन्हों ने देखा के यहां एक भी चीटी नहीं है तो आपने चीटियों के बादशाह को तलब किया और कुछ वक्त में ही चीटी का बादशाह आपके हाथ की हथेली पर मौजूद था। इसने अदब से आपको सलाम किया सुलेमान (अ.स) ने पूछा तुम्हारी कौम के लोग नज़र नहीं आ रहे हैं क्या वजह है ?। चीटी ने कहा आपके काफिले के बोझ से हमारी कौम ख़तम हो सकती थी इस लिए मैंने यह मैदान चीटियों से खाली करने को कह दिया। सुलेमान (अ.स) ने कहा क्या हम चीटियों के पैगम्बर नहीं ?। जवाब में कहा बेशक। क्या हमे इनका ख़याल नहीं है ?। जवाब मिला बेशक। और कहा क्या मैं तुमसे बुलंद नहीं ?। जवाब में बादशाह चीटी ने कहा नहीं। क्युकी बुलंद तो मैं हूं जो आपकी हथेली पर पैठ कर आपसे गुफ्तगू कर रहा हूं। यह जवाब मिलने के बाद सुलेमान (अ.स) को अपनी गलती का एहसास हुआ के मुझे अपने को बुलंद नहीं कहना चाहिए था क्युकी बुलंद तो सिर्फ खुदा है। आपने चीटी के बादशाह को हुकुम दिया आप जा सकते है। फ़ौरन आपने कफिले को कूच करने का हुकुम दिया।

आप अपने तख़्त के ज़रिये ही सफ़र करते थे और मुशरिको के बीच पहुंच कर आप उन्हें ज़ुबूर की नसीहते सुनाते थे और बुतों की पूजा के सक्त खिलाफ थे। आप पडोसी मुल्को में जाते और इन्हे ईमान की दावत देते थे अगर किसी ने इनकार किया तो आप

हुकूमत पर काबिज़ हो जाते थे। इस तरहा अल्लाह का पैगाम दुनिया भर में फ़ैल रहा था और आप की हुकूमत चारो दिशाओं में बढती जा रही थी।

एक बार आप अपने काफिले के साथ एक सफ़र पे थे। आपने अपने वजीर से कहा के काफी वक्त से हुदूद नज़र नहीं आ रहा है क्या बात है ?। अगर उसने गलती की हो तो इसे सक्त सजा मिलेगी। तभी कुछ पालो बाद हुदूद आपके सामने पेश हुआ और कहा हुजूर मैं आपके लिए एक एहम खबर लाया हूं। आपने कहा कौनसी ऐसी खबर है जो बहुत एहम है हुदूद (यह एक परिंदा है) ने कहा के पास ही में एक शहर सबा है वहां अल्लाह की बहुत रहमत है और तरहा तरहा की नेमतो से लबरेज़ है और इसकी हुमुमत एक खूबसूरत खातून बिलकिस सम्भाले हुए है। जो अल्लाह पर यकीन नहीं रखती। सुलेमान (अ.स) ने ख़त लिखा और हुदूद को समझाया के रानी बिलकिस की आँख खुलने से पहले उसके बिस्तर पर पहुंच जाना चाहिए। चुनांचे हुदूद ने सूरज निकलने के पहले ही परवाज़ (उड़ान) भरी और रानी के महल में दाखिल हो कर रानी के सोने की जगह पहुंचा। देखा रानी अपने ख्वाबो में मसरूफ है हुदूद ने ख़त रानी ने बिस्तर पर छोड़ा और फ़ौरन अपनी उड़ान भरी।

सबा की रानी बिलकिस सुबह जैसे उठी तो उसकी नजर एक ख़त पर पड़ी। रानी ने ख़त को खोल कर पड़ना शुरू किया जिसमे लिखा था। पूजा करो उस खुदा की जिसने तुम्हे ख़ूबसूरती दी यह हुकूमत दी और माल असबाब से लबरेज़ किया और यह खूबसूरत सूरज जो तुम्हारी हुकूमत को रोशनी दे रहा है, यह सब खुदा की देन है अगर

आपने और आपकी हुकूमत ने खुदा के आलावा और किसी की इबादत की तो आप की हुकूमत पर हम कब्ज़ा कर लेंगे बादशाह सुलेमान इब्ने दाउद। ख़त पढ़ कर रानी को पसीना आ गया और फ़ौरन अपने वजीर और सीपेसालारो के साथ गुफ्तगू की और यह जानने की कोशिश की के इस ख़त का पैगाम क्या है। वजीर ने रानी से कहा के आपकी एक आवाज पर हम जंग के लिए तैयार है। रानी ने कहा अभी जंग की कोई जरूरत नहीं है। हम यह जानना चाहते हैं के इस बादशाह की नियत क्या है। लिहाजा मेरा हुकुम यह है के हमारी हुकूमत से वजीर और ५ सीपेसालार हमारी तरफ से बादशाह सुलेमान के दरबार में जाए और हमारी तरफ के तोहफे के तौर पर १०० सोने की ईंटे पेश की जाए।

बादशाह सुलेमान को वजीर आसिफ ने खबर दी के रानी की तरफ से कुछ सीपेसालार और वजीर आपसे मुलाकात करना चाहते हैं और अपने साथ तोहफे भी लाए हैं। आप अल्लाह के पैगम्बर थे और आपको अल्लाह पाक ने गैब से आने वालो और भेजने वालो का मकसद समझा दिया था। चुनांचे आपने वजीर को हुमुम दिया के इनका इस्तेकबाल हमारे सोने और हीरो से जड़े वाले गेट से हो कर मेरे हुजरे में हाज़िर करो। वजीर ने आपके हुकुम की तामील की और जब रानी के भेजे हुए नुमाईनदो ने अपने नीचे बिछे हुए फर्श, जोकि बड़ी बड़ी सोने की इटो के बने थे और दीवारों पर लगे याकूत और हीरे जो की हुकूमत ने आज तक नहीं देखे थे, जो आज इनके कदमो की जीनत बने थे। इतना शानदार इस्तकबाल देखकर अपने साथ लाइ हुई सोने की ईंटो को

तोहफे के तौर पर देने का इरादा बदल दिया। के हमारी इटो से बड़ी बड़ी इटो से फर्श बनाया गया तो क्या उससे भी कम कीमती इटे इन्हें तोहफे में दे कर बादशाह की शान में गुस्ताखी नहीं करेंगे। लिहाजा इन सोनेकी इटो की इस बादशाह के लिए कोई एहमियत नहीं रखती। इसलिए हम बादशाह को तोहफा नहीं देंगे। जब सभी मेहमान हज़रत सुलेमान (आ.स) के सामने पेश हुए तो आपने सभी की मेहमान नवाजी की और उनको बेहतरीन खानों से सराबोर कर दिया और आपने सभी को मेहमानों को ईमान की दावत दी। आपको इनकी इज्ज़त का भी ख़याल था, के इनके गुलामो के पास जो तोहफे छुपे है, इनको दोबारा छुपा के वापस ले जाने में शर्मिंदगी महसूस ना हो चुनांचे आपने सभी गुलामो को फूलो से भरी टोकरिय दी तोहफा कह कर। ताकि गुलाम अपने तोहफे को इन्ही टोकरियो में छुपकर इज्ज़त से बहार निकले और गुलामो ने ऐसा ही किया।

जब शहर सबा के नुमाइन्दे अपनी रानी के पास पहुंचे और सुलेमान (अ.स) की शक्शियत का बयान किया और अपने तोहफे ना देने की वजह भी बताई। रानी ने वजीर से कहा बादशाह एक नेक इंसान है। उसे हमारी दौलत से कोई सरोकार नहीं है। इस लिए बादशाह सुलेमान को पैगाम भेजो के हम उनके दौलत खाने पर उनसे मुलाकात के ख्वाइश मंद है।

सुलेमान (अ.स) ने अपने वजीर से कहा तुम रानी के बारे में और तहकीकात करो। चुनांचे वजीर आसिफ बिन बर्की ने रानी बिलकिस और उनकी हुकूमत के बारे में कुछ और खबरे इकट्ठी की और सुलेमान (आ.स) से इस तरहा बयान की। रानी बिलकिस

एक नेक खातून है और बेहद खूबसूरत है लेकिन सुनने में यह आया की रानी के घुटने के नीचे से लेकर पैर के पंजो तक एक ऐब है। पैर के पंजो को तो पैर के गिलाफ से ढक लेती है जिससे यह ऐब छुप जाता है। बकिया हिस्सा कपड़ो से ढक जाता है। लिहाजा क्या ऐब है मालूम नहीं हो सका। इसके अलावा उसके पास एक बहुत भारी तख़्त है जिस पर वह बैठा करती है यह तख़्त बहुत कीमती पत्थरो से बना है।

सुलेमान (आ.स) ने वजीर से कहा मेरे तख़्त से लेकर सेहन तक कांच का तालाब बनाओ और इसके अन्दर पानी भर दो, फिर इस तालाब को खूबसूरत कांच से ढक दो, लेकिन इस ख़ूबसूरती के साथ के लगे पानी ऊपर ही भरा है। वजीर ने आपकी राय के मुताबिक ऐसा ही किया। अब आपने वजीर को हुकुम दिया के रानी को दावत पर आज ही बुलाओ। वजीर ने हुकुम की तामील की और दावत नामा पहुंच गया।

सुलेमान (अ.स) ने वजीर को बुलाया और कहा के रानी के पहले रानी का तख़्त क्या यहां पर पहुंच सकता है और रानी को खबर भी ना हो। वजीर ने कहा आपके पास एक बहुत ताकतवर जिन है। वह इस कम को अंजाम दे सकता है। चुनांचे सुलेमान (अ.स) ने इस जिन को तलब किया और हुकुम दिया और यह जिन कुछ पालो के अन्दर ही रानी बिलकिस का तख़्त आपके सामने हाजिर कर दिया। आपने जिन को हुकुम दिया के इसमें कुछ तब्दीलिया कर दो ताके यह पहले से अलग दिखे। चुनांचे जिन ने तख़्त में तबदीली भी कर दी। फिर सुलेमान (अ.स) ने इस तख़्त को अपने पास ही जगह दी ताकी रानी को अपने बरबर बिठा सके।

रानी के आने की सारी तैयारिया पूरी हो चुकी थी। आप अपने **तख़्त ताउस** पर बैठ कर रानी का इंतज़ार करने लगे। जैसे की आपने उनके इस्तेकबाल का इन्तेजाम किया था के रानी जब उन तक पहुंचने की कोशिश करे तो आप बिलकुल सामने हों। रानी अपने लौलश्कर के साथ आपके महल में दाखिल हुई और जैसे ही सोने के फर्श को पार करके आप शीशो के फर्श पर अपना पैर रखने वाली थी के उन्हें लगा यहां पानी भरा है, तो रानी ने अपने लेहेंगे को हाथ से ऊपर उठाकर अलग कदम रखा और इसी बीच कांच के अक्स की वजह से आपका घुटना नज़र आ गया जो की काला था। रानी को शर्म महसूस हुई के वह पानी और शीशो में फर्क नहीं कर सकी। सुलेमान (अ.स) ने रानी का इस्तकबाल किया, रानी बिलकिस ने आपके सामने हाज़िर होते ही कहा। मैं और मेरी पूरी हुकूमत आप और आपके रब पर ईमान लाते हैं। सुलेमान(अ.स) ने रानी को तख़्त दिखाते हुए कहा इस तख़्त को पेह्चान्ति है आप ?। रानी ने जवाब दिया के आपको पेह्चान ने के बाद अब किसी को पेहचान ने की ख्वाहिश नहीं रही। रानी की खूब मेहमान नवाजी की और इबादते खल्क के तौर तरिके बताए और अगली मुलाकात तय कर विदा हो गई।

सुलेमान (अ.स) ने रानी के पैरो के मर्ज़ की ठीक होने की अल्लाह से दुआ की और अल्लाह ने आपकी दुआ कबूल करली और रानी को बीमारी से निजात मिल गई। रानी ने अपनी शादी की ख्वाहिश जाहिर की जिसे आपने यह कह कर कबूल किया के ईमान वाली के साथ शादी करने में कोई हर्ज़ नहीं। चुनांचे आपकी शादी रानी से हो गई

आपको औलादों का बड़ा शौक था और यह मानना था के जितनी ज्यादा बीवियां होगी उतनी ज़ुयादा औलादें भी पैदा कर सकते हैं। चुनांचे आपने ३०० शादियाँ की लेकिन आपको एक भी औलाद नहीं हुई। आपको अपनी गलती का एहसास हुआ के उन्होंने खुदा की खुदाई पर शक किया क्युकी अल्लाह चाहे तो एक बीवी से ही ३०० औलादें पैदा कर सकता है और अगर चाहे तो ३०० औरतो से एक भी औलाद ना हो। क्युकी औलाद का देना अल्लाह के इख्तियार में है। आपकी हुकूमत में बहुत अमन और खुशहाली थी और दौलत इतनी के गोदामों में राखी जाती थी। एक दिन आपने अल्लाह से माँगा के "या मेरे खुदा मेरी तमन्ना यह है के सिर्फ एक दिन आपकी पूरी मखलूक को रिज्क पहुंचा सकू" अल्लाह ने आपकी दुआ क़ुबूल की।

अब आपने अपनी हुकूमत के सभी कारिंदों को अनाज जमा करने का हुकुम दिया और महीनो की मशक्कत के बाद आपने सभी मखलूक की खातिर उनके लिए गीजाह इकट्ठी कर ली और एक ख़ास दिन दावत-ए-आम का ऐलान कर दिया।

चुनांचे सभी चरिन्दे, परिंदे और दरिन्दे तमाम तरहा के पानी में बसर करने वाले जान दार और इनसान वगैरह इस लश्कर के लश्कर में जमा होने लगे। उसी वक्त एक मछली पानी से निकल कर बोली हमारी भी दावत है और हमे भूक लगी है, हमे खाना दो। इस पर इंतेजामिया ने कहा अभी नहीं मिलेगा अभी दावत का वक्त नहीं हुआ है। मछली ने कहा जो हमे रोज़ खिलाता है, जिंदा रखता है, उसने आज तक वक्त की बात नहीं की। जब हमने चाहा हमे रिज्क मिल गया। मछली की बात सुनकर इन जनाब ने

सुलेमान (आ.स) से ज़िक्र किया। इसपर सुलेमान (अ.स) खुदा तशरीफ़ लाए और मछली को कहा हां तुम आज मेरी मेहमान हो और तुम्हे अभी खाना देता हूं। आपने अपने हाथ से देग खोली और मछली को खिलाने लगे। मछली खाना खाते जा रही थी और आप खिलाते जा रहे थे। आपके हाथ थकने लगे तो आपने गुलामो को हुकुम दिया इन्हें खाना खिलाते रहो। सुलेमान (आ.स) यह माजरा अपनी आँखों से देख रहे हैं के देग पे देग ख़तम होती जा रही है। लेकिन मछली का पेट नहीं भर रहा है। हालात यहां तक पहुंच गए के सारे का सार खाना ख़तम हो गया। लेकिन मछली का पेट नहीं भरा। जिस खाने को आप पूरी मखलूक में तकसीम करना चाहते थे, वह तो एक मछली का पेट भी ना भर सका। मेहमानों का जमावड़ा बढ़ता ही जा रहा था। आपने मछली से कहा मैं सुलेमान आपसे माफ़ी चाहता हूं की मैं आपका पेट भर नाही सका। इअपर मछली ने कहा हमारा रब जाने कब से हमारा पेट भरता आ रहा था और आज मैं आधा पेट भी ना खा सकी। आपने अल्लाह से माफ़ी मांगी और कहा "ए रब मुझे माफ़ करदे मुझसे गलती हो गई मैं तो इस काबिल भी नहीं के तेरे एक जानवर का पेट भी भर सकू" अल्लाह ने कहा ए सुलेमान तुम्हारी एक गलती से आज इन्हें भूका रहना पड़ा।

सुलेमान (अ.स) एक दरिया दिल पैगम्बर थे। सब कुछ था लेकिन उनकी दौलत कम पड़ गई अल्लाह की मखलूक के आगे। क्युकी रिज्क और ज़िन्दगी अल्लाह ने अपने अख्तियार में रखी है। आपने बैतूल मुक़द्दस को दोबारा बनाया और इसमें बेश कीमती याकूत और मूंगे जड़्वाए।

आपने समुद्र के बीच एक झरोखा बनवाया था। जिसमे आप अक्सर जाया करते थे और कई दिन रहा करते थे। आपके जितने भी एहम काम थे आप जिन, शैतान और देवो से कराया करते थे और जब आपका आखरी वक्त आया तो आप अपने इसी झरोखे में अपने असा के साथ टेका लगाए खड़े थे और अल्लाह ने आपकी रूह कब्ज़ करवा ली और आपने यह दुआ की थी के "मेरे रब जब तक जिन और देवो को जो मैंने काम दिए हैं वह पूरे ना हो जाए तब तक मेरी मौत की खबर किसी को नहीं लगे" । चुनांचे अल्लाह ने आपकी यह दुआ भी पूरी की और जब जिन्नातो और देवो ने अपना काम पूरा करलिया तो इनको ख्वाइश हुई के मैं सुलेमान (आ.स) को खुश खबरी सुनाऊ। लेकिन आपका हुकुम था जब तक मैं ना बुलाऊ कोई मेरे पास ना आए। चुनांचे यह सभी मख्लूके कई महीनो तक आपको दूर से देखती रही। सुलेमान (अ.स) आसमान की तरफ मूह किये असा पर टेका लगाये खड़े हैं। आपस में बात करते की आज तक इतने दिन तो आप रुके नहीं क्या बात है ? । फिर अल्लाह के हुकुम से दीमाग ने आपका असा खा कर भूसा कर दिया और आप जमीन पर गिर गए। उसी वक्त सब एक साथ आपके करीब पहुंचे तो आपको जिंदा ना देख सके। लेकिन आपका जिस्म खुशबू से महक रहा था तकरीबन एक बरस तक आपको अल्लाह ने इसी हाल में रखा लेकिन किसी मखलूक को नहीं मालूम हुआ के उनके आका दुनिया से रुक्सत एक साल पहले ही हो चुके थे।

आपकी आराम गह बैतूल मुक़द्दस में है यह वाकिया ईसा (अ.स) से कबल ३०५० साल पहले का है। इसतरहा अल्लाह ने अपने पैगम्बर को इम्तिहान में डाला और पैगम्बर सुलेमान (आ.स) ने अल्लाह के लिए इम्तिहान को भरोसे के साथ दिया और आप कामियाब होते गए और कुछ मौको पर आप कुछ डग-मगाए लेकिन आपको यह भरोसा भी था के अल्लाह माफ़ करने वाला है। तो आपने फ़ौरन बारगाहे इलाही में माफ़ी के लिए हाथ उठाए और अल्लाह ने माफ़ भी कर दिया। तो हमारा भरोसा भी इतना मज़बूत होना चाहिए जैसे की हमने सुलेमान (अ.स) की ज़िन्दगी में देखा अल्लाह हम सब को भी इतना ही मज़बूत भरोसा अता करे आमीन।

अब तक हमने आपको पैगम्बरों के इम्तिहान और भरोसे से वाकिफ कराया। अब हम आपको पैगम्बर को जनने वाली माँ के भरोसे और इम्तिहान से वाकिफ कराएँगे। जब इमरान मतीन की बीवी ने अल्लाह से वादा किया या रब मेरे पेट में जो औलाद पल रही है हम इसे आपकी खिदमत में देते हैं।

जब आपने बच्चो को जना तो यह लड़का ना हो कर लड़की पैदा हुई। तो आपने कहा या खुदा मुझे तो लड़के की उम्मीद थी, लेकिन यह तो लड़की पैदा हुई है। लेकिन क्युकी हमने वादा किया था, इस लिए हम इसे बैतूल मुक़द्दस में दे देंगे। चुनांचे आपने इसका नाम मरियम रखा और दूध पिलाने का वक्त जब पूरा हो गया, तो आपने बैतूल मुक़द्दस के मुतवल्ली को सौंप दिया। लेकिन अब यह तय होना था के इस नन्ही जान की हिफाजत कौन करेगा ?। चुनांचे **मरियम (अ.स)** की देख भाल करने के लिए

बहुत से लोग आगे आए। तब यह तय पाया के जितने भी लोग मरियम (अ.स) को पालना चाहते हैं, वह सब अपने-अपने कलम इस बहती नदी की धारा में डाल दें। जिसका कलम धारा के खिलाफ चलेगा वही मरियम की परवरिश करेगा। सभी लोगो ने अपने-अपने कलम नदी की धारा में डाले। लेकिन सिर्फ **ज़कारिया (अ.स)** की कलम धारा के उलटे बहाव में चली। इसलिए मरियम की परवरिश ज़कारिया (आ.स) को सौंपी गई।

आपने बैतूल मुक़द्दस के अन्दर ही एक कमरे में परवरिश की और जब मरियम (अ.स) की उम्र परवान चढ़ी, तो उनके सामने एक इंसानी शक्ल ज़ाहिर हुई, जिसे देख कर आप घबरा गई और कहा तुम्हे खुदा का वास्ता तुम यहां से चले जाओ। उसी वक्त इस इंसानी शक्ल ने कहा मुझे खुदा ने ही भेज है। के आपकी कोक से **ईसा** नाम का बच्चा पैदा होगा ?। मरियम (आ.स) ने कहा मैं कैसे माँ बन सकती हूं ?। ना तो मुझे किसी शक्श ने छुआ और ना ही मैं गलत औरत हूं। तब इस फ़रिश्ते ने कहा तुम्हे इसकी जरूरत नहीं। अल्लाह तुम्हारे अन्दर एक पाक रूह फूंकेगा और अल्लाह जो चाहता है वही हो जाता है। चुनांचे आपको अपनी पाकीज़गी बरकरार रखनी है, और अल्लाह पर भरोसा रखो, यह कहकर फ़रिश्ता वहां से गायब हो गया।

ज़कारिया (अ.स), मरियम (अ.स) से मिलने रोज़ आया करते थे। एक दिन आपकी नज़र (मरियम (अ.स) के पास रखे फलो पर पड़ी, जो की मौसमी फल नहीं थे। आपने कहा तुम्हे यह खाने कौन दे गया ?। मरियम (अ.स) ने कहा यह सब चीज़े हमे

खुदा भेज रहा है, जिसे फ़रिश्ते लाते हैं। आप चुप हो गए लेकिन समझ गए के अल्लाह की खिदमद में लगे लोगो को अल्लाह इसी तरहा खुशहाल रखता है। और जब **ईसा (अ.स)** का वक्ते पैदाइश करीब आ गया। तो अल्लाह ने हुकुम दिया, ए मरियम अब तुम इस पाक जगह्ह से चली जाओ और मैदान में मौजूद खजूर के पेड़ के पास मरियम (अ.स) बैठ गई टेका लगाकर। यह एक सूखा पेड़ था, जिसमे पत्ते वगैरह नहीं थे, आपको बड़ी शर्म मेहसूस हो रही थी। मैं इस खुले मैदान और खुले आसमान में बच्चे को जनु। इससे अच्छा तो यह था के मै मर गई होती। कम से कम हमारी इज्ज़त तो बची रहती। उसी वक्त एक फ़रिश्ता आया और आपको खुश खबरी दी, के तुम्हे इतना परेशान होने की जरूरत नहीं है, अल्लाह इसका भी रास्ता निकाले गा और उसी वक्त इस सूखे पेड़ से पत्ते निकलने लगे, और इतने बड़े हो गए की झुक कर जमीन को छूने लगे, और मरियम (अ.स) के लिए यह एक छत की तरहा काम कर रहा था। और अगले ही पल इसमें रसीली खजूरे लटकने लगी, और अगले ही पल आपके पास से ज़मीन से पानी का चस्मा फूटा। जिसने एक नेहर की शक्ल इख्तियार कर ली। मरियाम यह देख कर सजदे में गिर पड़ी। फिर फ़रिश्ते ने कहा, के अल्लाह का हुकुम है के आप इसकी खजूरे खाए और मीठा पानी पिए। आपके लिए इंतज़ाम कर दिया गया है। फिर मरियम (आ.स) ने कहा के जब लोग मुझसे बच्चे के बारे में सवाल करेंगे तो मैं क्या जवाब दूँ। फ़रिश्ते ने कहा के आप इशारे में कहिएगा के मैंने आज चुप रहने का खुदा के नाम रोज़ा रखा है।

३ दिनों तक आप यहीं रही, और अल्लाह की नेमतो का इस्तेमाल किया। चौथे दिन आपने **ईसा (अ.स) को २ ज़िल्कद दिन मंगल को जाना**। आप बच्चे की ख़ूबसूरती देखकर सारा दर्द भूल गई और बच्चे को चूमने लगी। आप बच्चे को लेकर जब बस्ती में आ कर एक जगह बैठ गई। तो उन्हें कौम के लोगो ने घेर लिया और आप पर तोहमत लगाने लगे। तब आपने इशारे कहा मुझसे क्या पूछते हो इस बच्चे से ही पूछ लो। लोगो ने कहा यह बच्चा क्या बोलेगा ?। उसी वक्त ही बच्चे ने कहा मैं ईसा हूं, खुदा का भेजा हुआ रसूल, मेरी माँ बदकार नहीं है, और खुदा जो चाहे कर सकता है, मेरी माँ पारसा है।

बच्चे के कलाम करते ही सभी लोग मरियम (आ.स) से माफ़ी मांगते हुए पैरो पर गिर पड़े, और ईमान ले आए। लेकिन एक तबका बहुत जाहिल था उसने कहा के यह बच्चा हो ना हो ज़कारिया का है। क्युकी येही मरियम से मिलने जाया करता था। चुनांचे यह हुजूम आपके पीछे पड़ गया। इसी लिए आप जान बचाने के लिए जंगले की तरफ छिपने के लिए भागे। लेकिन कुछ लोग आपका पीछा करते हुए जंगले में पहुंच गए। जब आपने देखा छिपने की कोई जगह नहीं है, तो आपने अल्लाह से मदद मांगी। उसी वक्त एक पेड़ बीच से फट गया और आप फ़ौरन इसमें घुस गए और पेड़ फिर जुड़ गया। लेकिन आपके कुर्ते का कोना बहार रह गया। चुनांचे जब भीड़ ढूँढते हुए इस पेड़ के नज़दीक पहुंची, तो आपका कुरता उन्हें दिख गया और आपस में तै पाया की येही कुरता तो ज़कारिया पहने हुए थे। हो ना हो इसमें ही छिपा है। इसी बीच

आवाज़ आई के इसे पेड़ में ही रहने दो और आरी मंगा कर पेड़ काट दो, तो ज़कारिया भी ख़तम हो जाएगा। चुनांचे लोगो की राय से पेड़ को कटा गया और ज़कारिया (अ.स) शहीद हो गए।

इधर मरियम (अ.स) को खबर लगी के लोग ईसा (अ.स) को ख़तम करने की योजना बना रहे हैं। तो आपने मुल्क-ए-शाम को छोड़ दिया और आप इरान से होते हुए भारत के पेहेलगाम पहुंचे, फिर लद्दाख़ और जगन्नाथ पूरी पहुंच कर रुक गई। यहां आपको (ईसा अ.स) अच्छी तरबियत देनी शुरू की गई। आपको पढ़ाने के लिए आपने एक मौलवी को रखा जब मौलवी ने आपसे कहा कहो " बिस्मिल्लाह हिर रेहमान निर रहीम " अपने पढ़ा और मौलवी से पूछा के मौलवी साहब बिस्मिल्लाह में बे का सीन का और मीम का क्या मतलब है ?। मौलवी ने जब ईसा (अ.स) के मूह से जब इतनी गहरी बात सुनी तो दंग रह गए और जवाब ना दे सके और आपकी वालिदा से फ़रमाया के इन्हें तो हमसे ज्यादा इल्म हासिल है। मैं इन्हें क्या इल्म दूं , लिहाजा मैं आपके बच्चे को नहीं पढ़ा सकता।

अल्लाह अपने पैगम्बरों को हर इल्म से नवाज़ा है, और येही आपके साथ भी हुआ। मरियम (अ.स) १४ साल तक जगन्नाथ पूरी में रही। इसकी तस्दीक लेखक नूर बीच ने की है। मरियम (अ.स) को अल्लाह का हुकुम हुआ के वापस अपने मुकाम पहुंच जाओ। चुनांचे आप नेपाल के रस्ते से इरान पहुंच गई और यहां कुछ वक्त गुजारने के बाद मुल्क-ए-शाम पहुंची और अल्लाह के हुकुम का इंतज़ार करने लगे।

अल्लाह पर भरोसा रखते हुए मरियम (अ.स) ने इम्तिहान दिए और कामियाब हो गई और अल्लाह ने आपको इस्लाम की बेहतरीन औरतो में से एक औरत कहा। अल्लाह पर भरोसा रखने वालो को अल्लाह ऐसे ही नवाज़ता है। दुनिया में जो भी आया चाहे वो इनसान या जिन या दूसरी मखलूक ही क्यों ना हो और चाहे पैगम्बर या इमाम खलीफा और वाली ही क्यों ना हो सब अपने रब की खुशनुविंदी चाहते हैं। जिन्हें अल्लाह ने खुद बेहतरीन कह दिया तो इसकी जिंदगी कामियाब हो गई और एक इनसान को चाहिए अल्लाह पाक हमारी औरतो को मरियम जैसा किरदार अता करे आमीन।

मरियम (अ.स) के बाद अब आपके बेटे **हज़रत ईसा (अ.स)** का इम्तिहान शुरू हो गया। अल्लाह ने आपको कुछ मौजिजे (चमतकार) दिए। जैसे अगर कोई पैदाइसि अंधा हो तो उसे आंखे दे-दे। कोई भी बीमार हो तो उसे तंदुरुस्ती अता कर दे। किसी भी मिटटी से बने परिंदों को अगर आप फूक दे तो उसमे जान आ जाए। आप अपने इन चमतकारो के साथ लोगो के बीच तबलीग करने निकले और अल्लाह के बताए हुए रास्ते पर चलने की हिदायते देनी शुरू की और लोगो से अपने पैगम्बर होने की निशानिय दिखाई, ताकि लोग ईमान ले आए। इसी तरहा आपको हवारियो की एक बड़ी जमात मिली। तो आपने कहा खुदा ले लिए खुदा के भेजे हुए की मदद करोगे। तब हवारियो ने कहा के हम अल्लाह के वास्ते अल्लाह वाले की मदद करेंगे। इस तरहा आपके तबलीगी कामो में हवारियो ने काफी मदद की। आपने खुदा के पैगाम को

हर इनसान तक पहुंचाने की पूरी कोशिश की। आप इन हवारियो के साथ साथ गावं - गावं शहर- शहर जा-जा कर लोगो को ईमान की दावत देते।

एक दिन आपके साथियों ने कहा, के हम चाहते हैं के आप हमारे लिए खुदा से खाने के लिए खाना उतरवाएँ ताकि हम भी देखे। लेकिन हम आप पर ईमान रखते हैं, हमे आप पर पूरा यकीन है। आपने हवारियो के इसरार पर बारगाहे इलाही में हाथ उठाए और दुआ पूरी ही हुई थी, के देखा ऊपर (आसमान) से एक हवा में तैरता हुआ ख्वान चला आ रहा है। जब यह ख्वान आपके सामने पेश हुआ तो आपने देखा के एक मछली जो रोगन के साथ तली हुई थी। सब लोग देख कर दंग रह गए और ईमान भी मजबूत हुआ। फिर आपने इन लोगो से कहा देखो यह तली हुई मछली अल्लाह के हुकुम से फिर जिंदा हो जाएगी। यह कहने के बाद आपने मछली को छुआ भर था, के यह मछली जिंदा हो गई और रौगन में तैरने लगी यह देखने के बाद तो लोगो में ऐसा जोश उमड़ पड़ा के जो कुछ भी ईसा (अ.स) कह दे यह आँख बंद कर के यकीन कर लेंगे। फिर आपने तैरती हुई मछली पर अपनी ऊँगली रखी तो यह फिर से तली हुई मछली बन गई। आपने सब से कहा के **बिस्मिल्लाह** कह कर खाना शुरू करो, लोग मछली को खूब चाव से खाते जा रहे थे, लेकिन मछली ख़तम ही नहीं हो रही थी, जिसको मालूम पड़ा वही मछली को खाने चला आ रहा है, काफिले के काफिले टूट पड़े और जब कई दिन जुगार गए तो अल्लाह पाक ने ईसा (अ.स) को पैगाम भेजा के यह मछली अब सिर्फ गरीबो के लिए है, तुम और लोगो पर मनाई कर दो। चुनांचे आपने ऐसा ही किया,

लेकिन इन लोगो ने कहना शुरू कर दिया की यह सब जादू था, जिसका असर अब ख़तम हो गया। इसलिए सिर्फ गरीबो की बात की जा रही है, जो की इसके ही साथी है। तब अल्लाह ने इन झुटलाने वालो पर अज़ाब नाजिल किया और दुसरे दिन सुबह इन सभी की शकले सूअर की तरहा हो गई।

आपके दो शागिर्द जिसमे एक का नाम **सादिक** और दुसरे का नाम **सिद्दीक** था यह आपको बहुत चाहते थे। आपने इन दोनों को वही करामात दे दी जो आप खुद रखते थे और कहा तुम दोनों अन्ताकिया शहर जाओ वहां पर कुफ्र बहुत फैला है और यहां का बादशाह **शिरखीन** भी इसमें मुफ्तिला है। तुम दोनों वहां पहुँचो और लोगो को ईमान की दावत दो, उन्हें वक्त पड़ने पर मौजिजे भी दिखाना। चुनांचे सादिक और सिद्दीक अपने-अपने घोड़ो पर बैठे और अन्ताकिया शहर में दाखिल हो गए। यह दोपहर का वक्त था तो इन दोनों ने देखा एक बूढा शक्श अपने जानवर चरा रहा है। दोनों ने आपस में मशवरा किया के क्यों ना इन बुज़ुर्ग से शहर के हालात मालूम किये जाए, ताकि हमे अपने काम करने में आसानी हो। लिहाजा यह दोनों शक्श इन साहब के करीब पहुंचे घोड़े से नीचे उतरे और सलाम कहा और बताया हमारा नाम सादिक और सिद्दीक है और हम मुल्क-ए-शाम से आ रहे हैं, हम आपके शहर में ईमान की दावत देने आए हैं और लोगो को हकीकी खुदा का पैगाम पहुंचाना चाहते हैं। ताकि लोगो में बुत परस्ती ना रहे। लिहाजा आप हमे यहां के बारे में कुछ ख़ास बाते बताई ताकि हमारे काम आए। जब दोनों लोग अपनी बात कह चुके तो बुज़ुर्ग ने बोलना शुरू किया मेरा नाम हबीब निसार

है मैं यहीं पैदा हुआ और पला हूं। यहां के लोग तुम्हारी एक बात भी नहीं सुनेंगे और तुम्हे जान से मार डालेंगे। इस लिए तुम फ़ौरन यहीं से अपने मुल्क लौट जाओ। सादिक और सिद्दीक ने कहा हमे अल्लाह के पैगम्बर ईसा (अ.स) ने भेजा है और उन्हों ने हमे कुछ चमतकार दिए हैं। चमतकार का नाम सुनकर हबीब निसार ने पूछा किस तरहा के चमतकार आप कर सकते हैं ?। सादिक ने कहा हम खुदा से दुआ करते हैं के नबीना अच्छा हो जाए तो अच्छा हो जाता है और मुर्दे को ज़िन्दगी मिल जाती है। हबीब निसार ने कहा अगर तुम लोग यह सब चमतकार कर सकते हो। तो सबसे पहले हमारे घर चलो। हमारा एक बेटा है, जो की पैदाइशी नबीना है। अगर तुम उसकी रौशनी ला दो तो मैं तुम्हारी जरूर मदद करूँगा। दोनों राज़ी हो गए और निसार के घर पहुंच कर उस लड़के को देखा और बारगाहे इलाही में हाथ उठाए ही थे की लड़का चिल्ला उठा के मुझे सब दिख रहा है। हबीब निसार ने आप दोनों का शुक्रिया अदा किया और इन दोनों को शहर के सभी रास्तो से खबरदार कराया। **हबीब निसार को आले यासीन का खिताब मिला**। सादिक और सिद्दीक शहर पहुंच कर लोगो को ईमान की दावत बाटने लगे और ईसा (अ.स) के बारे में बयान करते के अल्लाह ने आपको पैगम्बर बनाकर भेज है।

बादशाह शिरकीन को ख़ुफ़िया तौर पर मालूम पड़ा के मुल्क-ए-शाम से २ शक्श किसी पैगम्बर का प्रचार कर रहे हैं। कहीं ऐसा ना हो के यहां की अवाम इसके कहने पे चलने लगे और हमारी हुकूमत पर कब्ज़ा करले। चुनांचे बादशाह के हुकुम के मुताबिक

दोनों नुमैन्दो को तै-खाने में बंद कर दिया गया। इधर ईसा (अ.स) को जब काफी वक्त तक दोनों शागिर्दों की कोई खबर नहीं मिली। तो आपने एक तीसरे नुमाइन्दे को अन्ताकिया भेजा के सादिक, सिद्दीक का हाल चाल मालूम किया जाए। लिहाजा जब आप शहर अन्ताकिया पहुंचे तो वहां के लोगो से मालूमात की, तो उन्हें हबीब निसार ने बताया की बादशाह शिरकीन को दोनों लोगो को तैखाने में कैद कर लिया है। लेकिन मेरी जान पेह्चान बादशाह के वजीर से है आपकी मुलाकात मैं वजीर से करवा सकता हूं। और उसी के जरिये आप वहां तक पहुंच सकते है। वजीर एक नेक इनसान था और अल्लाह को ही मानता था। जब वजीर से आपने मुलाकात की तो इन दोनों के बारे में तस्किरा किया। वजीर आपका मकसद समझ गया वजीर ने आपकी मुलाकात बादशाह शिरकीन से यह कह कर करवाई के यह हमारे बहुत खुसूस शक्षियत है, और इनसे हमारी हुकूमत को काफी फ़ायदा मिल सकता है। बादशाह बहुत खुश हुआ और उसने आपकी खातिर दारी की। फिर आपने बादशाह की औलादों के बारे में पूछा तो बादशाह ने कहा हमारा एक शेह्जादा था जो २० साल पहले मर चूका है। बादशाह ने अपने सीपे सालारो को हुकुम दिया के आपको महल की सैर करवाओ चुनांचे महल में घुमते-घुमते आप तैखाने में पहुंचे। तो आपने सादिक और सिद्दीक को कैद पाया। दोनों ने आपको पेह्चान लिया इससे पहले के दोनों अपना मूह खोले आपने मना किया। फिर आपने सीपेसालारो से कहा यह लोग क्यों कैद हैं ?। सिपेसालारो ने वजह बताई आपने दोनों से पूछा तुम्हारे में क्या खासियत है। इसपर दोनों ने कहा के हम अल्लाह के हुकुम से

मुर्दों को जिन्दा कर सकते हैं। आपने कहा ठीक है अभी हम तुम्हारे इस कारनामे को जांच करते हैं। यह कहने के बाद आप बादशाह के पास पहुंचे, मैंने दो ऐसे कैदी देखे जो यह कह रहे थे के वह मुर्दों को जिन्दा कर सकते हैं, तो क्यों ना इन्हें परखा जाए। और अगर यह अपने वादे पर खरे ना उतरे तो इन दोनों की गरदन सरे आम काट दी जाए, और अगर २० साल पहले आपके मरे शहजादे को यह जिंदा कर दे तो यह तो आपके लिए बेहतरीन तोहफा होगा। बादशाह ने कहा आपने तो बहुत अच्छी खबर सुनाई क्यों ना यह काम अभी किया जाए। इसके साथ ही दोनों कैदियों को तैखाने से निकाला गया। बादशाह अपने लौलश्कर के साथ कब्रस्तान पहुंचा और अपने शेहजादे की कबर के पास खड़े होकर बोल यहीं मेरा बीटा दफ़न है। सादिक और सिद्दीक ने कबर के पास खड़े होकर बारगाहे इलाही में हाथ उठाए और दुआ की। उसी वक्त कबर की मिटटी हिलने लगी, सब लोगो की निगाहे कबर पर टिक गई और कुछ ही देर में बादशाह का बेटा कबर से उठकर खड़ा होकर बोला "क्यों हमारी ख्वाब गाह से मुझे उठाया मैं अब दोबारा तुम्हारी दुनिया में आना नहीं चाहता मुझे आराम करने दो"। यह कहने के साथ ही कबर की मिटटी अपने आप कबर में गिरने लगी और वापस पहले वाली शक्ल इख्तियार करली। बादशाह शिरकीन यह देख कर उसी वक्त ईमान ले आया और फिर पूरे शहर में लोगो को इमान लाने की ताकीद की और अपने लावलश्कर के साथ ईसा (अ.स) का इस्तेकबाल करने के लिए अपने शहर की सीमा पर खड़ा हो कर इंतज़ार करने लगा। और जैसे ही आपके (ईसा अ.स) के काफिले को

दूर से आंते देखा तो ख़ुशी से चिल्ला उठा। ईसा (अ.स) को अपने महल में ले गया और पूरे एहलो-अवाल के साथ बैत की। इस तरहा आपने पूरे शहर में आपको ईमान का रास्ता बात लाया। फिर आप दूसरी जगह तशरीफ़ ले गए और वहां भी अप लोगो को ईमान की दावत देते और एक शहर से दुसरे शहर फिर तीसरे शहर आपने साथियों के साथ दावते ईमान बाटते रहते थे। आपको अल्लाह ने **इंजील** अता की और हुकुम दिया की लोगो के बीच जाओ और इंजील के पैगाम सुनाओ, ताके अपने खुदा को पहचाने और बुतों ना को पूजे। आप लोगो के दरमियान इंजील की तबलीग करते फिरते और लोगो को मना करते के खुदा का शरीक ना टेहराओ। एक खुदा की इबादत करो और यह भी कहते के इंजील से पहले ज़ुबूर और तौरेत किताबें उतर चुकी हैं और हमारे बाद एक और पैगम्बर आएंगे उनका नाम **अहमद** होगा जो की आखरी पैगम्बर होंगे।

मुल्क-ए-इसराइल का बादशाह आपकी इस तबलीग से बहुत परेशान था, क्युकी उसका दावा था के वह खुद खुदा है। लेकिन आपकी तबलीग की वजह से लोग इसे खुदा मानने से इनकार करते थे। बादशाह ने सोचा के येही एक कांटा मेरे रास्ते में हाइल हो रहा है, क्यों ना इसे कतल करवा दिया जाए। चुनांचे बादशाह ने एक शरियत तैयार की जिसके मुताबिक जो शक्श भी खुदा के बारे में गलत बयानी करेगा उसे सब के सामने सूली पर चढाया जाएगा और इस शरियत को पूरे मुल्क में फैलाया गया। फिर एक सुनेहरा मौका पाकर बादशाह ने हज़रत ईसा (अ.स) को कैद करवाया इस इल्जाम के साथ के ईसा लोगो को खुदा के बारे में गुमराह कर रहा है।

बादशाह अपनी कामयाबी पर बहुत खुश था। बादशाह ने एक बड़े मैदान में सूली का इंतज़ाम किया और लोगो को जमा होने का हुकुम दिया। जब एक बहुत बड़ा मजमा जमा हो गया, तो बादशाह ने कहा मैं खुद लेकर आऊंगा यह कहने के साथ ही वजीर और सिपेसलारो को बहार ही रहने दिया, और हिदायत दी के अगर ईसा बहार भागने की कोशिश करे तो फ़ौरन पकड़ कर सूली पर चढ़ादेना, मेरा इंतज़ार मत करना। इधर अल्लाह ने जिब्राइल अमीन को हुकुम दिया के ईसा को जिस्म के साथ उठा लो। चुनांचे बादशाह के पहुंचने के पहले ही ईसा (अ.स) अल्लाह के पास पहुंच गए और जब बादशाह उनकी (ईसा अ.स) की कैद खाने पहुंचा तो उन्हें वहां से गायब पाया। फिर बादशाह ने आवाज़ लगाई देखो होशियार ईसा भागने ना पाए। यह कहकर यह भी बहार की तरफ भागा। लेकिन अल्लाह पाक ने बादशाह का पूरा जिस्म और आवाज़ ईसा (अ.स) जैसा कर दिया और जैसे ही बादशाह ने वजीर और सिपेसलारो को देखा, तो कहने लगा ईसा बहार ही भागा है तुमने उसे देखा ?। वजीर ने कहा तुम खुद ईसा हो और हमे धोका देकर बहार भाग रहे हो। यह कह कर वजीर ने पकड़ा और घसीटते हुए सूली की जगह पर ले गया। लेकिन बादशाह बराबर चिल्लाता रहा। के मैं ईसा नहीं हूं तुम्हारा बादशाह हूं। लेकिन सबने कहा कितना झूट बोल रहा है। अपनी जान बचाने के लिए।

वजीर ने कहा बादशाह का हुकुम मिल चुका है। इसे सूली पर चाढ़ा दिया जाए, और इसको कीलो से ठोक दिया जाए। चुनांचे ऐसा ही किया गया और बादशाह को मौत की

नींद सुला दिया गया। वजीर ने सोचा चलो बादशाह को यह खुश खबरी सुनाई जाए, लेकिन बादशाह कहीं नजर नहीं आया। फिर वजीर ने सूली के पास आकर आवाज़ लगाईं बादशाह का पता नहीं चल रहा है ढूंडो। बस इसी वक्त अल्लाह ने हुकुम दिया के बादशाह अपनी असली शकल में आ जाए और ऐसा ही हुआ सबने एक साथ आवाज़ लगाई "सूली पर तो बादशाह चढ़ा है हमसे यह गलती कैसे हो गई" और इस बादशाह की बनी हुई शरियत उसी पर लागू कर दी गई। अल्लाह ने ईसा (आ.स) को ५५ साल की उम्र में अपने पास बुला लिया और जन्नत में उन्हें मुकाम दिया और कहा इसी उम्र में इन्हें दुनिया में दोबारा वापस भेजेंगे पैगम्बर बनाकर।

इस तरहा ईसा (अ.स) ने अपना इम्तिहान भरोसे के साथ दिया, और आप कामियाब हो गए और अल्लाह ने उन्हें जन्नत के घर से नवाज़ा। हमारा खुदा भरोसा रखने वालो को ऐसे ही नवाज़ता है।

अल्लाह हम सबको इम्तिहान के वक्त भरोसा अता फरमाए। ताकि हम भी सब्र के साथ अल्लाह के भरोसे पर खरे उतरे **आमीन**।

भरोसे और इम्तिहान की कड़ी में एक ऐसे पैगम्बर का ज़िक्र कर रहे हैं, जिन्हें अल्लाह ताला ने ३ बार जिंदा किया और उनके भरोसे का इम्तिहान लिया और उन्हें कामयाबी अता की।

अल्लाह ताला ने अपने एक बन्दे को एक ख़ास उम्र के बाद तबलीग का काम सौंपा और आप तबलीग करने लगे। लेकिन जिहालत और बुत परस्ती के दौर में आपकी सुनने वाला कौन है। लेकिन आप अल्लाह के पैगामो को लोगो को ज़बरदस्ती सुनाते थे और सिर्फ अल्लाह की इबादत करने की गुजारिश करते। जब शहर के लोगो ने देखा के यह तो हमारे बुतों का बुरा भला कह रहा है, और एक नए खुदा की पूजा करने को कह रहा है। तो इन लोगो ने एक चाल के तहत आपके ऊपर बाएँ जानिब से हमला कर दिया और आप शहीद हो गए। आपका नाम **अब्दुल्लाह बिन जहाब बिन माअद** था।

अल्लाह ताला ने अब्दुल्लाह बिन जहाब बिन माअद को ५०० साल के बाद दोबारा जिंदा किया। लेकिन आपके सर के बाएँ तरफ एक उभार निकल आया था। आपने शहर में देखा के शहर काफी बदल चुका है। लोग दिखने में अच्छे और सलिखे के थे। आपने अपना तबलीगी कम दोबारा शुरू कर दिया, लेकिन अभी भी बुत परस्ती अपने शबाब पर थी और आपका तरीका था की आप लोगो को सडको के ऊपर जमा करते, फिर ईमान की दावत देते। लोग आपकी उन हरकतों पर गुस्सा करते और जान से मारने की धमकी देते। लेकिन आप पर इन धमकियों का कोई असर नहीं होता और लोगो को आवाज़ दे-दे कर अल्लाह के बताये रास्ते पर चलने को कहते रहे और एक दिन मौका मिलते ही एक भीड़ ने दाए जानिब से तलवारों से हमला कर दिया और आप

शहीद हो गए। लेकिन अल्लाह ताला ने आपको तीसरी बार ५०० साल बाद फिर जिंदा किया और इस बार आपके सर के बाएं जानिब और दाए जानिब उभार मौजूद थे।

आपने ज़िन्दगी पाते ही तबलीगी काम शुरू कर दिया और आपने देखा की लोगो में तालीम और तौर तरीका पहले से बहुत अच्छा है और ज़िन्दगी में काफी आराइश है। आप बहुत खुश थे, की अब लोग हमारी बातो को सुनेंगे और अमल करेंगे। लेकिन इन ५०० साल के बाद भी कोई ख़ास बदलाव नहीं आया। ज्यादा तर लोग कुफ्र की ज़िन्दगी जी रहे थे, और आपकी तबलीग को लोग सुनकर हंसा करते थे। लेकिन आपने अपनी कोशिश जारी रखी।

इस दौर के लोगो ने आपकी खुदा परस्ती करने की हिदायतों और बुत परस्ती ना करने की नसीहतों से चिढ कर तलवार से आपके सर के बीचो बीच वार करके आपको शहीद कर दिया। लेकिन अल्लाह को तो कुछ और ही मंजूर था। अल्लाह ताला ने ५०० साल बाद आपको चौथी बार जिंदा किया। लेकिन अबकी बार आपको बादशाहत से नवाज़ा और आपको रोम की एक बड़ी हुकूमत की बाग़-डोर भी सौंप दी। लेकिन अबकी बार आपके सर पर ३ उभार थे बीच का उभार लम्बा और बाएं जानिब दाएं जानिब उभार पस्त (छोटा) था। आपको पूरी दुनिया में ईमान की दावत फैलानी थी। इस लिए आप हर मुल्क को जीत ते और वहां की अवाम को ईमान की दावत देते और

आगे बढ़ते जाते। लेकिन अब आपका नाम **ज़ुलकरनैन** और आपको लकब मिला **सिकंदर**।

जब आप पूरी दुनिया घूम चुके तो। आपने अपनी फ़ौज से कहा के "मैं सूरज की डूबने की जगह देखना चाहता हूं"। चुनांचे एक बहुत बड़े लश्कर के साथ आप पशचिम दिशा को बढ़ते चले गए और काफी अरसे के बाद आप पशचिम के छोर पर पहुंचे। जहां पर सिर्फ दल-दल था और इसकी हदे बांधी थी। आप वहां पर खड़े रहे और उस सूरज को उस दल-दल में डूबते देखा।

पैगम्बर ज़ुलकरनैन ने जब पशचिम का सफ़र पूरा कर लिया। तो आपने अपनी फ़ौज को हुकुम दिया के अब हम पूरब के किनारे पर पहुंचना चाहते हैं, ताके हम सूरज के निकलने की जगह देख सके। फ़ौज इतना बड़ा सफ़र करने के बाद थक चुकी थी। लेकिन आपकी हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी के आप पर इतने लम्बे सफ़र का कोई असर नहीं पड़ा। चुनांचे आपके हुकुम के मुताबिक यह सफ़र पूरब की तरफ निकल पड़ा और जब आप मिस्र पहुंचे तो वहां के समुद्र को देख कर आपने एहद लिया के हम समुद्र की गहराई को मालूम करेंगे। इसके लिए आपने एक शीशो का ताबूत बनवाया और उसमे जरूरी साजो सामान रखा और एक ख़ास विधि का इस्तेमाल किया जिसमे की घंटो तक ऑक्सीजन ना मिलने पर भी जीवित रहा जा सके। इसके अलावा आपने अपने ताबूत में वह जड़ी बूटियाँ भी रखी जिसमे की ऑक्सीजन भारी मात्र में निकलती रहती थी। फिर आपने ख़ास सिपेसलारो को हुकुम दिया के जब तक तुम्हे मैं झटके देता

रहूं, तुम रस्सी छोड़ते रहना और जब झटके ना महसूस करो तो रस्सी मत छोड़ना। फिर जब दोबारा झटके महसूस करना तो रस्सी को खीचना शुरू कर देना जब तक मैं ऊपर ना आ जाऊ। अब इस काम के लिए हजारो मील रस्सी को जहाज में रखा गया और समुद्र के बीच पहुंच कर आप इस ताबूत में बैठ गए और समुद्र का सफ़र तय करने लगे। घंटो तक सफ़र करते रहे आपने समुद्र की दुनिया का नज़ारा किया और तरहा-तरहा की मख्लूको को निहारते रहे। जहाज पर मुस्तैद लोग रस्सी को छोड़ते जा रहे थे अब ख़तम होने वाली थी। अब इनको फ़िक्र की अगर रस्सी ही ख़तम हो जाएगी तो मिशन अधूरा रह जाएगा।

समुद्र की तह में सिकंदर (अ.स) चलते चले जा रहे थे। लेकिन समुद्र की तह का दूर-दूर तक नमो निशान ना था। तभी अचानक आपका ताबूत रुक गया आप समझे के समुद्री सतेह मिल गई। इसी बीच एक शक्ल जाहिर हुई और कहा सलाम अलैकुम मैं **खिजर** हूं, अल्लाह का पैगम्बर और मेरी हुकूमत इन्ही समुद्र में है। आप समुद्र की गहराई मालूम करना चाहते हैं ?। लेकिन आपको मालूम होना चाहिए के हज़रत नूह की कश्ती यहां से गुजर रही थी तो एक तश्त गिर गया था, जो आज तक सतेह तक ना पहुंच सका। हज़रत ज़ुलकरनैन समझ गए के यह काम ना मुमकिन है। चुनांचे आपको अपना मिशन छोड़ना पड़ा लेकिन जिस जगह तक आप पहुंच गए थे उस जगह पर आपकी निशानी की तौर पर एक मोन्यूमेंट (एक ख़ास निशानी) बनाया गया जिसमे हज़रत खिज़र (अ.स) ने पूरी मदद की और इसका नाम रखा गया **सजदा-ए-सिकंदर**

(लाइट टावर ऑफ़ सिकंदर) । हज़रत ज़ुलकरनैन (अ.स) के वक्त में बहुत पैगम्बर और वली मौजूद थे । अब आपने अपना सफ़र पूरब की तरफ शुरू किया और कई साल चलने के बाद आप एक ऐसी जगह पहुंचे जहां २ बड़े-बड़े पहाड़ थे और सूरज उसके पीछे से ही निकलता था । इस जगह पर आपको एक कौम मिली जिसकी ज़ुबान आप नहि समझ पा रहे थे । इसलिए अल्लाह ने अपना एक फ़रिश्ता जिनका नाम **मिकाइल** था आपकी मदद के लिए भेजा । तब आपको इस कौम की भाषा मालूम पड़ी और इस कौम ने आप से इस तरहा बयान किया " इन दोनों पहाड़ो के पीछे याजूज-माजूज की कौम रहती है" । इनके लिए अल्लाह पाक बारिश के साथ आसमान से मछलियों की बारिश भी करता है, जो की इनकी गिजाह है । लेकिन जब मछलियों की बारिश नहि होती तो यह हमारी बस्तियों पर हमला करके सब तहेस नहस कर डालते हैं । जिससे हम लोगो को भागना पड़ता है, नहीं तो हम लोग इनकी गिजाह बन जाते हैं । इसलिए हम सभी आपसे विनती करते हैं कें दोनों पहाडो के बीच एक मज़बूत दीवार उठा दीजिए । ताकि याजूज-माजूज इन पहाड़ो में कैद हो जाए, इस काम के एवज़ में आप जो चाहे हम करने को तैयार हैं । हज़रत ज़ुलकरनैन (सिकंदर) ने कहा हम इस रास्ते को लोहे की दीवार से चीन्वा देंगे । लेकिन तुम सबको इस्लाम क़ुबूल करना होगा ।

इस कौम ने फ़ौरन जवाब दिया के हम इस्लाम क़ुबूल करते हैं । इस तरहा यह पूरी कौम मुसलमान हो गई, फिर आपने इन लोगो को ताम्बे और लोहे के पहाडों का पता बताकर इन टुकडो को लाने को कहा । चुनांचे यह कौम इस काम में लग गई आप इन टुकडो

को तरतीब से रखवाते गए और जब आपने देखा के दोनों पहाड़ो के बीच का रास्ता पूरी तरहा पट चुका है और एक दीवार के शक्ल में आ चुका। तो मिकाइल फ़रिश्ते की मदद से आपने इस पहाड़ पर गंधक का पानी डलवा कर आग लगवा दी, और जब आपने देखा के लोहा और ताम्बा दोनों एक दुसरे में मिल चुके हैं, तो आग बुझा दी गई। इस दीवार को **" आहिनी "** दीवार का नाम दिया गया। इस कौम ने आपका शुक्रिया अदा किया।

हज़रत ज़ुलकरनैन ने अपने सफ़र को आगे बढाया। सफ़र के इस मुकाम पर आपको एक शक्श मिला जो की मुर्दों की खोपड़ियों को छांट रहा था। आपने उसे पूछा इन खोपड़ियों में क्या ढूंड रहे हो ?। जवाब मिला अपने भाई की खोपड़ी ढूंड रहा हूं। हज़रत ज़ुलकरनैन (अ.स) सोच में पड़ गए की इन कंकालो में से कैसे मुमकिन है की पहचान की जाए ?। आप समझ गए के यह एक इम्तिहान है और दोबारा आपने इस शक्श से कोई सवाल न किया और मंजिल की तरफ बढ़ गए।

एक ख़ास मुकाम पर पहुंचने के बाद आप नमाज़ पढने लगे, नमाज़ ख़तम होने के बाद आप बैठ गए। तभी ही आपने देखा इतनी तेज़ धुप में एक औरत चक्कर पे चक्कर लगाती जा रही है। आपने पूछा तुम यह क्या कर रही हो ?। औरत ने कहा पहले मेरे ३ सवालों का जवाब दो, आपने कहा पूछो।

१) सवाल:- जबसे दुनिया खल्क हुई कौनसी ऐसी दो नेमते हैं जो आज तक अपनी जगह पर मौजूद है ?।

जवाब:- ज़मीन और आसमान।

२) सवाल:- कौनसी ऐसी नेमत है जो खल्क (पैदा) होते ही गरदिश (चक्कर) करने लगी. और आज तक घूम रही है ?।

जवाब:- सूरज पैदा होते ही गरदिश में लग गया।

३) सवाल:- कौनसी दो ऐसी नेमतें हैं जो पैदा होते ही एक दुसरे के दुश्मन बन गए।

जवाब:- ज़िन्दगी और मौत एक दुसरे से आज तक जंग कर रहे है।

जब आपने तीनो सवाल के जवाब बखूबी दिए, तो उस औरत ने कहा आपके सभी जवाब बिलकुल सही है। अब मैं आपको बताती हूं के मैं इस धुप में चक्कर क्यों काट रही हूं। यह कह कर इस औरत ने चावल के कुछ दाने और पान आपको देते हुए कहा इसके लिए। यह दोनों चीजे देकर औरत गायब हो गई।

जब आप अपने सफ़र से लौट आए तो आपने अपनी हुकूमत में इन दोनों नेमतो की खेती शुरू की जो आज पूरी दुनिया में मौजूद है।

एक बार हज़रत ने अपनी हुकूमत के मौजूदा पैगम्बरों और वालियों को एक ख़ास दावत पर बुलाया। जब सभी हजरात खाने से फरीक हो चुके तो आपने सब के सामने

एक मसला रखा के हम अपनी उम्र बढ़ाना चाहते हैं। लिहाजा हम आबे हयात पीना चाहते हैं। तो क्या आप लोगो को आबे हयात चश्मे की जगह मालूम है ?। सभी लोग अपने इल्म से आबे हयात के बारे में मुताला करते रहे और काफी देर बाद सब लोग अपनी अपनी राय पेश करते गए के चश्मा तो मौजूद है लेकिन किस जगह पर है यह हमारे इल्म में नहीं है। हम इसके लिए माज़रत चाहते हैं। लेकिन सबसे आखिर में **हज़रत खिज़र (अ.स)** अपनी जगह से उठकर बोलने लगे के मुझे आबे हयात का चश्मा मालूम है। लेकिन जिस जगह पर यह चश्मा मौजूद है वहां पर **३५९** चश्मे और भी मौजूद है, तो कुल **३६०** चश्मो में से एक चश्मा आबे हयात का है। यह जगह मिस्र में मौजूद है इसे **बहाले जुल्मत** कहते हैं। यहां पर पहुंचना बहुत मुश्किल है, रास्ता काफी खतरनाक है। इस लिए इस सफ़र में मैं अपने **३५९** सिपाहियों के लश्कर की नुमाइंदगी करूंगा। पहले हमारा लश्कर पहुंचेगा हालात का जाएजा लेगा फिर हम आपको बुलाएंगे ताकि आप पर कोई मुसीबत ना आए।

हज़रत ज़ुलकरनैन ने फ़ौरन अपनी फ़ौज को हुकुम दिया के कल सफ़र पर निकलना है। सफ़र शुरू होता है हज़रत खिज़र (अ.स) ने अपने **३५९** सिपाहियों को लिया और **३६०** मुरदा मछली अपने पास रखी और बहाले ज़ुल्मत नाम की जगह की खोज में निकल पड़े आगे आप रास्ता साफ़ करते और पीछे से ज़ुलकरनैन के काफिले को बढ़ने को कहते। इस तरहा सफ़र तै करते करते दो साल लग गए और ज़ुलकरनैन की फ़ौज थक गई और आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। लेकिन खिज़र (अ.स) की फ़ौज

अभी भी तरो ताज़ा थी और आज आप बहाले ज़ुल्मत नाम की जगह पहुंच गए। लेकिन अब इन ३६० चश्मों में से एक चश्मा ढूँढना था। आपने अपने साथ लाई हुई मुरदा मछली निकाली और हर सिपाही को एक-एक मछली देते हुए कहा के "सब लोग फ़ैल जाओ और हर सिपाही अपने चश्मे पर पहुंचने के बाद मुरदा मछली को पानी में डाल दें और जिसकी मछली तैरने लगे वह वहीं पर टिका रहे और आवाज़ लगाये" । चुनांचे आपने ३५९ मुरदा मछली बाँट दी और एक मुरदा मछली अपने साथ रख कर आप भी एक चश्मे पर जा पहुंचे। यह भी इत्तेफ़ाक था के जिस चश्मे पर आप पहुंचे और मुरदा मछली को पानी में डाला तो मछली जिंदा हो गई। आप अपनी कामयाबी पर बहुत खुश हुए। आपने पहले खुदा आबे हयात पिया और नहाया फिर इस चश्मे पर निशान लगाया और नीचे उतर आए। आपने देखा के उनके ३५९ सिपाही आपका इंतज़ार कर रहे हैं नाकाम चेहरों के साथ। आपने कहा तुम सब मायूस क्यों हो ?। हमने चश्मा ढून्ढ लिया है। चलो ज़ुलकरनैन को खुश खबरी सुनाए।

आपने हज़रत को खुश खबरी सुनाई। खिज़र (अ.स) ने हज़रत ज़ुलकरनैन (अ.स) को अपने साथ लिया और ३६० चश्मों के बीच पहुंच गए। लेकिन जिस चश्मे पर पहुंचे वहां एक जैसा ही निशान मौजूद। हज़रत खिज़र (अ.स) बड़े हैरान के यह क्या माजरा है क सभी चश्मे एक जैसे दिख रहे हैं। अब किस चश्मे को आबे हयात कहा जाए क्युकी मुरदा मछलियां भी नहीं बची थी, जिससे दोबारा पता लगाया जा सके। काफी तालाशने के बावजूद आपको आबे हयात नहीं मिला। अल्लाह ताल ने जिसे चाहा

पिलाया और गुसुल भी करवाया और खिज़र (अ.स) आज तक हयात हैं। हज़रत ज़ुलकरनैन समझ गए के खुदा को यह मंजूर नहीं था।

आप इस जगह से बहार निकले तो आपको समुद्र की लहरों का एहसास हुआ, तो आप उसी दिशा में आगे बढ़ते रहे, तो आपको समुद्र साफ़ नज़र आने लगा। आपको समुद्र के बीच एक खूबसूरत याकूत का बना महल नज़र आया। अब आपकी ख्वाहिश बढ़ी के इसके अन्दर क्या है। आप इस महल के अन्दर पहुंच गए, लेकिन महल के अन्दर किसी का नमो निशान नहीं। फिर आप महल की सीडियों से होते हुए ऊपर पहुंच गए, तो देखा एक शक्श नमाज़ पढ़ रहा है। आपने इंतज़ार किया जब नमाज़ से फारिक हो गए तो आपस में सलाम दुआ की। और इस शक्श ने आपसे कहा के आपकी जिंदा रहने की ख्वाहिश कब ख़तम होगी। यह कहकर इस शक्श ने आपको एक याकूत का पत्थर दिया और कहा इसका वज़न पहाडो से भी ज्यादा है और पल भर में कहीं गायब हो गया। आप समझ गए के यह खुदा का भेज हुआ फ़रिश्ता था, जो आपको पैगाम देकर चला गया। आप उस पत्थर को अपनी मुट्ठी में दबाये महल के बहार निकल कर समुद्र के किनारे पहुंचे और अपने गुलाम को हुकुम दिया के तराजू पेश करो। चुनांचे गुलाम ने तराजू पेश कर दी। आपने तराजू के एक पलड़े में याकूत का पत्थर रखा जो की फ़रिश्ते ने दिया था, दुसरे पलड़े में एक के बाद एक बड़े-बड़े पत्थर रखते जा रहे हैं। लेकिन इस पत्थर का वजन इतना बढ़ गया के अगर पहाड़ भी रख दें इसके मुकाबले तो यह अदना सा पत्थर भारी पड़ेगा। फिर आपने खिज़र (अ.स) से कहा के अजीब बात

है के यह पत्थर जो की दिखने में अदना है, लेकिन तोल में सबसे भारी। तब खिज़र (अ.स) ने ज़मीन से मिटटी उठा कर इस याकूत के पत्थर पर डाल दी और कहा अब इसका वज़न करो। चुनांचे अब यह पत्थर इतना हल्का हो गया के इसके मुकाबले ज़रा बराबर वज़न भी भारी पड़ने लगा, अब इसका पलड़ा इतना हल्का हो गया।

खिज़र (अ.स) ने कहा या ज़ुलकरनैन इस मिटटी ने बड़े बड़ों को खा लिया है। हज़रत ज़ुलकरनैन ने अपनी पूरी फ़ौज और खिज़र (अ.स) से कहा आप सब लौट जाएं, मैं अपनी बाकी ज़िन्दगी अल्लाह की याद में यहीं गुजारेंगे। चुनांचे आपको छोड़ कर सभी लोग लौट आए, और ज़ुलकरनैन (अ.स) ५०० साल और जिंदा रहे और इबादत में लगे रहे। इस जगह को " **तन-ताल-जिंदल** " के नाम के पुकारा जाता है, और आपकी वफात इसी जगह पर हुई।

इस तरहा अल्लाह पर भरोसा रखने वाले का इम्तिहान हुआ। अल्लाह ने आपको पैगम्बरी भी बक्शी और बादशाहत भी बक्शी।

अये खुदा तू हमसब को तौफीक दे, की हम सब तेरे इम्तिहान में कामियाब हों और तुझ पर भरोसा रक्खते हुए अपनी पूरी उम्र गुज़ार दूं।

आमीन सुम्मा अमीन।